वर्ष-2, अंक-1, जनवरी 2023

अमृत भूमि

MPHIN37435

मूल्य-60/-

मध्यप्रदेश
कांग्रेस चौतरफा घिरी है, परंतु...

मुद्दा
धर्मांतरण पर छिड़ी बहस

प्रसंगवश
जोशीमठ की स्थिति रातोंरात नहीं बनी

बागेश्वर सम्राट

SHIELD YOUR BUSINESS WITH EMPLOYER EMPLOYEE SCHEME

INSURANCE

LIC

भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

For Kind Attention :

Benefits to Company/Institution

The employer is entitled to get tax exemptions for the premium amount (whether it is single or non-single mode) u/s 37(1) of Income Tax Act as business expenses of the firm.

Benefits to Insured person/ Employee/ Director

- Risk cover till age 100 yrs Rs. 1cr or more
- Pension benefit till age 100 yrs Rs. 1lac/Month or more
- Financial protection against Cancer with a guaranteed sum up to
- Rs. 1.65 Crs without submitting treatment bill (Major stage cancer)
- Health Insurance benefits on photocopies of Treatment papers and Bills upto Rs. 2cr

A Bird's Eye View

A Presentation to explain the intricate Benefits	
Premium	Rs. 1 Crore per Annum
Term	15 yrs
Total Premium paid in 15 yrs	Rs. 15 Crore
Tax Saving per year (25% of Premium)	Rs. 25 Crore
Total Tax Saving in 15 yrs	Rs. 2.5 Crore
Return on Rs 25 Lacs per year invested in business @15% for 15 years	Rs. 13.4 Crore
Total Benefits Besides Lifetime Pension, Lifetime Riskcover, Cancer Cover, Health Cover	Rs. 15.85 Crore
The Tax Saving Invested Properly exceeds Premium Paid	

Thanks & Regards

Dhanesh Chaturvedi

A-7/ Flat no. 202, Aakriti Ecocity, Bawadiya Kalan, Bhopal - 462039

Mobile no. 8269006100 email : lic_dhanesh@rediffmail.com

वक्र तुंड महाकाय, सूर्य कोटि समप्रभ:। निर्विघ्नं कुरु मे देव शुभ कार्येषु सर्वदा॥

'किसी को अपने सपने चुराने न दें। यह आपके अपने सपने हैं, न कि किसी ओर के।'

अमृत भूमि

वर्ष-2, अंक 1, भोपाल, जनवरी 2023

मार्गदर्शक
पं. रामस्वरूप समाधिया
श्री धनेश चतुर्वेदी
श्री राकेश त्यागी (दिल्ली)

प्रधान संपादक एवं प्रकाशक
अतुल समाधिया
9827318384
arpitasharma2233@gmail.com

सहयोगी संपादक
डॉ. पुरुषोत्तम शर्मा
श्री आर.एस. भदौरिया

संपादक (स्वास्थ्य)
मनोज चतुर्वेदी

अतिथि संपादक
श्री आलोक नाथ, श्री विनीत दुबे
श्रीमती स्मृति आदित्य पाण्डे (इंदौर)

पंजीकृत कार्यालय
ए-5/102, ब्ल्यू स्काई हाईराइज आकृति ईको सिटी, बावड़ियाकलां, भोपाल
462039, मध्यप्रदेश, भारत

संचालन कार्यालय
एफ-137, फ्लेमिंगो, आकृति ईको सिटी, बावड़ियाकलां, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

आवरण एवं साज सज्जा
वेबथिंक टेक्नोलॉजी, भोपाल (7000297982)

मुद्रक
विकास ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स
एफ-45, औद्योगिक क्षेत्र, गोवंदपुरा, भोपाल
फोन-0755- 2401952, 9425005624
vikasoffsetbhopal@gmail.com

साभार- पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्रों का स्रोत गूगल है।

पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख लेखक के स्वतंत्र विचार हैं, इसमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। विवादों में पड़ना हमारा अभिप्राय नहीं, परंतु विवाद होने पर न्यायक्षेत्र भोपाल ही होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं प्रधान संपादक श्री अतुल समाधिया द्वारा विकास ऑफसेट, 45 सेक्टर-एफ, इंडस्ट्रियल एरिया, गोविंदपुरा, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित एवं ए-5/102, ब्ल्यू स्काई हाईराइज आकृति ईकोसिटी, बावड़ियाकलां, भोपाल से प्रकाशित।

संपादकीय 3
क्या है बागेश्वर धाम, कैसे चमत्कारी बन गए धीरेंद्र शास्त्री 6
भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देगी डिजिटल मुद्रा 8
ऑस्ट्रेलियन ओपन 2023 - एक पुनरावलोन 10
धर्मान्तरण पर छिड़ी बहस 13

विरोधियों से दोस्ती की मजबूरी, समर्थक बने दुश्मन 14
जोशी मठ की इस तरह की स्थिति रातों रात नहीं बनी 19
कांग्रेस, चौतरफ़ा घिरी है , किंतु..! 20
लोक सभा में हास्य, विनोद, कविता और शायरी 24

15 वर्ष के अंतराल में मिस्टर एक्स से 3 मुलाकातें 29
भविष्यफल 39

राज्य स्तरीय ब्यूरो की आवश्यकता है

'अमृत भूमि' पत्रिका को मध्य प्रदेश, दिल्ली, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, बिहार, हरियाणा एवं पंजाब में राज्य स्तर पर ब्यूरो नियुक्त करना है, जो कि पत्रकारिता के साथ व्यवसायिक गतिविधियों को संचालित करने के लिए भी अधिकृत होंगे.
संपर्क- 9827318384 amritbhumibhopal@gmail.com

अमृत भूमि

'अमृत भूमि' सजग है, जागरूक है और कटिबद्ध है भारत का गौरव बढ़ाने के लिए। विश्व की श्रेष्ठतम भारतीय संस्कृति को निरन्तर पुष्टि देने के लिए राष्ट्रीय विचार-यज्ञ में अपनी आहुति देता चला आ रहा है।

राष्ट्र की प्राण-वायु को पुष्ट करने के लिए संकल्पित 'अमृत भूमि' की इस लोक कल्याणकारी यात्रा को आगे बढ़ाने में आप भी सहभागी बनें।

मासिक सदस्यता	60/-
वार्षिक	700/-
द्विवार्षिक	1400/-
आजीवन सदस्यता	50,000/-

सभी सहभागियों को 'अमृत भूमि' नियमित प्रेषित किया जाएगा एवं उनके किसी विशेष अवसर पर शुभकामना संदेश भी प्रकाशित किया जाएगा। द्विवार्षिक सदस्यता (1000/-) देकर प्राप्त की जा सकती है।

सहभागिता/सदस्यता पत्र

नाम .... जन्म तिथि ....

पता ....

....

मोबाइल .... ई-मेल ....

विवाह वर्षगांठ .... व्यवसाय ....

सहभागिता/सदस्यता राशि .... चेक/ड्राफ्ट संख्या ....

स्थान .... दिनांक .... हस्ताक्षर ....

सहभागिता/सदस्यता राशि के सभी ड्राफ्ट/चेक 'अमृत भूमि' के नाम से निम्नलिखित पते पर पूर्ण विवरण के साथ प्रेषित करने की कृपा करें। राशि आप सीधे हमारे मोबाइल नंबर 9827318384 पर Gpay या Phonepe कर भी कर सकते हैं।

पता

ए-5/102, ब्ल्यू स्काई हाईराइज आकृति ईकोसिटी, बावड़ियाकलां, भोपाल

फोन : 9827318384 ई-मेल amritbhumibhopal@gmail.com

INVEST MADHYA PRADESH में, MP के दो मायने

अतुल समाधिया
संपादक
atulsamadhiya@rediffmail.com
Mob: 9827318384

इस मीट में देश विदेश से कई दिग्गज बिजनेस टाइकून आए। सबने अपनी अपनी राय रखी और सुझाव भी दिए। इनकी बातों को सुनकर एक बात ये भी निकलकर आ रही है कि सरकार ने इंडस्ट्रीज के लिए बहुत ठोस सुविधाएं मुहैया नहीं करवाई हैं।

पहला MADHYA PRADESH
दूसरा MODEL PRADESH

20 साल में मध्य प्रदेश जमीन से आसमान में तब्दील हो गया । याद कीजिये वो गड्ढों वाली सड़कें ओर बिना बिजली की लालटेन वाली रातें ।

अब चमचमाती 4 लेन/6 लेन सड़कें ओर चौबीस घंटे निर्बाध बिजली, देश विदेश के निवेशकों को अपनी ओर लुभा रही हैं । राजनैतिक गलियारे भले ही, भविष्य के चुनावों की ओर इशारा करते हों, पर सच ये है कि, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, चौगुनी ताकत से प्रदेश के लिए काम कर रहे हैं। मध्यप्रदेश को मॉडल प्रदेश का नाम दिए जाने से नरेंद्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने से पहले के गुजरात मॉडल के प्रचार प्रसार से उनके प्रधानमंत्री बनने की बात बरबस याद आ जाती है । क्या शिवराज जी, नरेंद्र मोदी का विकल्प हो सकते हैं। शिवराज जी अब पहले से अधिक परिपक्व नजर आते हैं । वो अब पांव में चक्कर, मुंह मे शक्कर, ओर सिर पर बर्फ रख कर चलते हैं । 20 साल में प्रदेश भी बदला ओर शिवराज भी । पर जो नही बदला वो है , उनकी सरलता, सहजता और सहनशीलता ।

शिवराज ओर मोदी में कई समानताएं हैं । दोनों राजनीति और व्यापार के खिलाड़ी हैं । दोनों जिस से मिल लें उसे अपना बना लेते हैं । और जिस पर वक्रदृष्टि पड़ जाए उसे निपटा भी देते हैं । एक सर्जिकल स्ट्राइक करते हैं, तो दूसरे चौबीस घंटे में भगोड़े सिमी आतंकियों को ढेर कर देते हैं । दोनों विजनरी हैं ।

मोदी जी कहते हैं, हम तो फकीर हैं साहब झोला उठाएंगे ओर चल देंगे । वहीं शिवराज जी कहते है, मैं तो पार्टी का कार्यकर्ता मात्र हूँ, पार्टी कहेगी तो दरी बिछाने का काम भी शान से करूंगा । दोनों में समान रूप से गजब की फुर्ती दिखाई देती है । राजनीति, कूटनीति और दूरदृष्टि में दोनों ही समान नजर आते हैं ।

इस मीट में देश विदेश से कई दिग्गज बिजनेस टाइकून आए। सबने अपनी अपनी राय रखी और सुझाव भी दिए। इनकी बातों को सुनकर एक बात ये भी निकलकर आ रही है कि देश के अन्य व्यवसायिक शहरों की अपेक्षा हमारा भोपाल इस क्षेत्र में इसलिए पीछे है क्योंकि सरकार ने इंडस्ट्रीज के लिए बहुत ठोस सुविधाएं मुहैया नहीं करवाई हैं। जर्मनी से आए एक बिजनेसमैन ने कहा कि यहां सड़कों और सफाई का खासा अभाव है। बगरौदा विकासशील है लेकिन यहां पानी की समस्या है। चंबल में गन इंडस्ट्री चलाने वाले एक बिजनेसमैन ने अपनी बात रखते हुए कहा कि मैं सरकार से नाराज हूं। यहां कई तरह की परमिशन की मजबूरी है। इन सबमें इतना समय बर्बाद होता है कि हम आगे ग्रोथ नहीं कर पाते। बहरहाल, अब सरकार के नुमाइंदे इस मीट में आए इन बिजनेसमैन से सीधे मेल पर कम्युनिकेशन कर रहे हैं।

बहरहाल छुटपुट कमियों को छोड़ दें तो Global Invester Summit आशा से अधिक सफल रहा ।

बागेश्वर सम्राट

बागेश्वर बाबा तो लंबे समय से दरबारों में आ रहे हैं। लोगों से मिल रहे हैं। मगर अब घटा क्या है? घटना यह है कि अंधश्रद्धा निर्मूलन नाम की समिति के कुछ कर्ताधर्ताओं को बाबा के दरबार में बिना गए अंधविश्वास के दर्शन हुए हैं।

विजय मनोहर तिवारी

25 सालों तक मीडिया में सक्रिय रहे।
10 किताबें प्रकाशित।
मध्यप्रदेश में राज्य सूचना आयुक्त के पद पर कार्यरत हैं।

केवल घटनाओं और विवादों के पीछे भागकर टीआरपी का जीवनरस प्राप्त करने वाला मूर्ख टीवी मीडिया और उसे चौबीस घंटा ढोने वाला उसका उत्साही मानव संसाधन केवल मीडिया की डिग्री लेकर माइक और कलम पकड़े निकल पड़ा है। मुँह अंधेरे बिना मुँह धोए! अधिकतर एंकर और उनके रिपोर्टर पतंजलि के नाम पर केवल बाबा रामदेव का नाम जानते हैं।

दिसंबर की एक सुबह मैं धुबेला से खजुराहो के लिए निकला था कि हाईवे पर रास्ते में दोनों तरफ हजारों कारें और ट्रैक्टर नजर आए। वह मंगलवार का दिन था। पता चला कि बागेश्वर धाम का रास्ता यहीं से जाता है और हर मंगलवार और शनिवार ट्रेन और सड़क से ट्रैफिक अचानक कई गुना बढ़ जाता है।

मैंने बागेश्वर बाबा के बारे में सुना था। मिला आज तक नहीं हूं। इंटरनेट पर उनके वीडियो देखे हैं। मुझे उनमें कुछ भी नया, चमत्कारी और हैरत में डालने जैसा नहीं लगा।

अपने सामने आए किसी श्रद्धालु के नाम, पते, प्रश्न और उसकी समस्याओं को जान जाना और पहले ही परचियों पर लिखकर रखना, ठीक यही करते हुए मध्यप्रदेश के ही एक और संत के निकट जाने का मुझे अवसर मिला था। वे गुरुशरण शर्मा हैं, जिन्हें देश भर में पंडोखर सरकार के नाम से पहचाना गया। दतिया जिले के पंडोखर गांव के एक गृहस्थ संत।

मीडिया के कुछ मित्रों के साथ साल 2009 में एक छोटे से दरबार में मुझे भी ले जाया गया था। मैं बड़े ध्यान से उन्हें देख रहा था। भीड़ में से लोगों को बुलाना। पास बैठाना। फिर पूछना और परची निकालने के लिए कहना, जो पहले ही लिखकर रखी हुई है। परची पर वही लिखा हुआ होता, जो उस अपरिचित व्यक्ति ने अभी-अभी सबके सामने कहा है। है न चमत्कार?

'वो सफेद शर्ट पहने चश्मे वाले भाई साहब आ जाएं।' मेरी तरफ संकेत करके उन्होंने मुझे भी बुला लिया था। 'क्या समस्या है?' उनका वही सवाल था।

मैंने करबद्ध प्रणाम की मुद्रा में कहा कि गुरूजी, ईश्वर की कृपा और आपके आशीर्वाद से मेरी कोई समस्या नहीं है, केवल जिज्ञासावश दर्शन भर के लिए आया हूं। मेरी परची पर पहले से यही लिखा हुआ था-कोई समस्या नहीं है। जिज्ञासा के कारण आए हैं। मैं मानता हूं कि देह में हैं तो रोग-व्याधि होगी ही और संसार में हैं तो सफलता-असफलता, नफे-नुकसान चलते ही रहेंगे, इसमें क्या पूछना!

वह उनसे मेरी पहली भेंट थी और उसके बाद हम कई बार मिले। दरबारों में भी और देर रात घंटों तक भीड़भाड़ से मुक्त होकर वन टू वन भी। एक बार पंडोखर भी गया। वे मेरे घर भी आए। मैंने पड़ोस के बच्चों से उन्हें खासतौर से अलग से मिलवाया। बच्चों ने उनसे बच्चों जैसे ही प्रश्न किए।

जब 2015 में मैंने पांच साल तक लगातार आठ बार की भारत यात्राओं के अनुभव पूरे किए तो मध्यप्रदेश की एक कहानी के लिए मैंने उन्हें ही चुना। मेरे यात्रा वृत्तांत 'भारत की खोज में मेरे पांच साल' में पंडोखर सरकार से मेरी मुलाकातों का रोचक विवरण एक लंबे अध्याय में है-'सच का सामना।'

मैंने उनसे वे सब सवाल पूछे थे, जो आज देश के हर चैनल का एंकर और रिपोर्टर बागेश्वर बाबा यानी धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री से पूछ रहा है। न मुझे तब चमत्कार जैसा कुछ लगा था, न आज लग रहा है। इसकी वजह है। 1996 में मैंने 'पातंजलि योगसूत्र' पढ़ा था। यह छोटी सी अमूल्य पुस्तक भारत की महान् सांस्कृतिक विरासत है, जिसके विभूतिपाद में महर्षि पातंजलि छह सिद्धियों का उल्लेख करते हैं।

पहली सिद्धि प्रतिभा है, जिसमें एक संयमित जीवन जीने के बाद योगी वर्तमान, भूत और भविष्य की अनुभूति पाने में सक्षम हो जाता है। ऐसी ही पांच और विलक्षण सिद्धियां हैं, लेकिन मुनि पतंजलि ने इनके प्रदर्शन को निषिद्ध किया है। योगी का लक्ष्य सिद्धियाँ नहीं हैं। इनका प्रदर्शन लक्ष्य से भटकाने वाला हो सकता है इसलिए उसे निरंतर साधना पर ही स्वयं को केंद्रित रखना है।

केवल घटनाओं और विवादों के पीछे भागकर टीआरपी का जीवनरस प्राप्त करने वाला मूर्ख टीवी मीडिया और उसे चौबीस घंटा ढोने वाला उसका उत्साही मानव संसाधन केवल मीडिया की डिग्री लेकर माइक और कलम पकड़े निकल पड़ा है। मुँह अंधेरे बिना मुँह धोए! अधिकतर एंकर और उनके रिपोर्टर पतंजलि के नाम पर केवल बाबा रामदेव का नाम जानते हैं।

बागेश्वर बाबा तो लंबे समय से दरबारों में आ रहे हैं। लोगों से मिल रहे हैं। मगर अब घटा क्या है? घटना यह है कि अंधश्रद्धा निर्मूलन नाम की समिति के कुछ कर्ताधर्ताओं को बाबा के दरबार में बिना गए अंधविश्वास के दर्शन हुए हैं।

मैंने 25 साल पहले इस समिति के भी कुछ कार्यक्रम कवर किए थे। यह भी जड़बुद्धि मूढ़ों की एक धूल खाई हुई जमात है, जो जड़बुद्धि जितने बेईमान भी हैं। बेईमान इसलिए कि इन्हें पुट्टपर्थी के सत्यसाई में तो अंधविश्वास दिखाई देता था, किसी बंगाली बाबा के वशीकरण के विज्ञापनों से कोई तकलीफ नहीं रही, न किसी दरगाह में मन्नत और पादरियों का पाखंड उजागर करने ये कहीं गए। पड़े-पड़े महाराष्ट्र में कहीं धूल खा रहे थे कि बागेश्वर बाबा से प्राण मिल गए।

इन्हें प्राण देने वाला 'प्राणलेवा टीवी मीडिया' और भी सुभानल्लाह है!

मुनि पतंजलि इन दोनों के लिए समान रूप से अपरिचित हैं। दोनों समान रूप से सेक्युलर हैं। दोनों की जड़ें भारत की जड़ों से नहीं किसी सातवें आसमान से जुड़ी हैं। एक बड़े छाते में इनके ज्यादातर कर्ताधर्ता शातिर वामपंथियों, अर्बन नक्सल्स, प्रगतिशील, नारीवादी और अजीब तरह के आधुनिकतावादियों के आसपास हैं, जो वक्त जरूरत हिजाब भी ओड़ लेते हैं और एलजीबीटीक्यू के मंत्र जाप भी निरंतर खुलकर करना चाहते हैं!

अब बात लाखों की तादाद में उमड़ती उस 'ऑडिएंस' की, जो दरबार के पांडालों को छोटा कर रही है। वोटों से बनी सरकारों को लाख-पचास हजार की भीड़ जमा करने के लिए आंगनबाड़ी और आशा कार्यकर्ताओं को बसों में भर-भरकर ढोने की जरूरत पड़ती है और इस हम्माली में यूपीएससी से चुनकर आए प्रतिभाशाली आईएएस लगाए जाते हैं। तो वो कौन हैं जो बिना बुलाए चारों तरफ से लाखों की संख्या में पंडोखर, रावतपुरा, बागेश्वर या शोभन सरकार के दरबारों में आ जाते हैं, जबकि इन सरकारों को तो किसी ने निर्वाचित भी नहीं किया।

80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज मिल रहा है। यह आडिएंस यहां से आती है, जिसने अभी-अभी प्रधानमंत्री आवास पा लिया है, टॉयलेट पहले ही बन गया था और उज्जवला स्कीम से घर में गैस भी आ गई। संबल योजना में नाम जुड़वा लिया गया है ताकि मरने के बाद भी दो लाख और मिल जाएं। भारत का निम्न मध्यम वर्ग इन दरबारों का 'रिजर्व आडिएंस' है।

कथा सुनने बैठा मुरारी बापू और अब कुमार विश्वास का आडिएंस वह है, जो इस 'भवसागर से पार' हो चुका है। वे बापू को चार्टर प्लेन से बुला सकते हैं। बच्चे कनाडा-आस्ट्रेलिया में सैटल हैं। यहां कंपनियां ठीकठाक कारोबार कर रही हैं। दो पीढ़ी में ही जीवन कहीं से कहीं पहुंच गया है। अच्छी बात है, अब ऋषि-मुनियों के भारत की महानता के गान अच्छे लगने ही चाहिए। यह अलग क्लास है, जो बाबा रामदेव के सम्मुख अग्रिम पंक्ति में योगासन में हिलने-डुलने की सामर्थ्य रखता है। ओशो, जग्गी वासुदेव, श्रीश्री रविशंकर बड़े ब्रांड हैं, जिनका टारगेट ग्रुप भी यही रहा है। ओशो तो हास्य में कहते ही थे कि सब दरिद्र नारायण की सेवा में लगे हैं, कृपा करके धनवानों को मेरे लिए छोड़ दें।

बागेश्वर बाबा का ऑडिएंस 80 करोड़ की इसी विशाल आबादी से आता है। कथा के दौरान अगर गांव के पास हाईवे पर तेल का टैंकर लुड़क जाए तो यही आडिएंस बाल्टी, गागर और पीपे उठाकर तेल भरने उमड़ पड़ेगी और हाथ पौंछकर फिर राम नाम के कीर्तन में आकर तालियां बजाने लगेगी। इनके लिए छोटे कस्बों और शहरों में मथुरा-वृंदावन के कथा वाचकों की कमी नहीं है, जो चातुर्मास और नवरात्रि जैसे अवसरों पर राम या कृष्ण की कथाएं सुनाते हैं। एक किस्म का धार्मिक मनोरंजन!

यह वो ऑडिएंस है, जिसने छोटे-मोटे धंधों और नौकरियों में येनकेन प्रकारेण इतना माल भी जुटा लिया है कि अब अगली बड़ी घात में लग सके। जैसे टिकट मिलेगा या नहीं, कारोबार चलेगा या नहीं, रंगे हाथ पकड़े तो गए, बच जाएंगे या नहीं?

यह वो क्लास है, जिसके लिए बेटे की नौकरी, बेटी की शादी, पति की आमदनी, कचहरी के चक्कर, एक कार, मां की बीमारी, पिता की परेशानी, भाई के उत्पात और तो और बदमिजाज पड़ोसी से निजात कश्मीर और पाकिस्तान से बड़े मुद्दे हैं। वह इन मुद्दों के समाधान की खातिर रात भर ट्रेनों के भीड़ भरे डिब्बों में सफर करके झांसी या छतरपुर उतरकर पंडोखर और बागेश्वर के रास्तों की धूल उड़ाता है। बस उसके नाम की परची निकल जाए!

बागेश्वर बाबा टीवी के आकर्षण इसलिए भी हैं, क्योंकि वे युवा हैं और रणवीर कपूर से कम खूबसूरत नहीं हैं। उनका अंदाज निराला है। मुझे नहीं पता कि वे स्कूल या कॉलेज में कहां तक पड़े हैं, लेकिन हाजिर जवाब हैं और बच्चों जैसी सहज ऊर्जा से खिलखिलाते है, घुटनों पर धौल जमाते हैं, बुंदेलखंडी लहजा उनकी रंगबिरंगी अदाओं में चार चाँद लगा देता है। वे स्क्रीन के लिए फिट मटेरियल हैं। इंटरव्यू में वे अपने दादा गुरू का उल्लेख करते हैं, जिनके साथ दस साल की उम्र में बागेश्वर बालाजी हनुमान की सेवा में लगा दिए गए थे और तेरह साल की उम्र में उन्हें पहली बार अनुभव हुआ कि वे लोगों के मन की बात पड़ सकते हैं। वे सिर्फ परचियाँ ही लिख रहे होते तो किसी को कोई तकलीफ नहीं होनी थी। पंडोखर सरकार को लेकर इतना हल्ला कभी नहीं मचा। हंगामे की वजह साफ है। बागेश्वर बाबा ने अपने इष्ट की प्रेरणा से उन धंधेबाजों के लिए चुनौती दी है, जिनके लिए झूठ-फरेब, लालच और डर से अपने 'पंथ' के प्रचार और प्रसार बेरोकटोक करने हैं। जंगलों में वनवासियों के गले में क्रॉस टाँगना है और शहरों में पाँचों वक्त कानों को पूरे जोर से एक ही राग सुनाना है। सेक्युलर परिवेश में गाजरघास की तरह फैलने की आजादी अब बाधित हो रही है। सरकार कानून बनाए उसे तो अपने अर्बन एनजीओ और प्रगतिशील वकीलों की मदद से अदालतों में घसीट देंगे, इस बाबा का क्या करें?

बाबा ने बर्र के छत्ते में हाथ डाल दिया है। बदनामी के डंक अभी शुरू हुए हैं। मीडिया को टीआरपी का जीवन रस मिल गया है।

सिद्धियाँ साधना से मिलती हैं। साधना की कोई समय सीमा तय नहीं है। एक जन्म की साधना संभव है कुंडलिनी का पहला चक्र ही जगा दे पाए और यह नश्वर देह चली जाए। इस देह में रहते जागृत हुए चक्र की वह ऊर्जा अगले जन्म की नैसर्गिक सिद्धि होती है। नई देह में वह व्यक्ति बाल्यकाल से ही विलक्षण होगा। भले ही उसे स्वयं इसका बोध न हो। यह कुछ ऐसा ही है।

मेरी समझ में यह जरूर नहीं आया कि दादा से पिता में होकर कोई सिद्धि पुत्र तक आ सकती है या नहीं, या अगर दादा और पोते तीन पीढ़ियों में ऐसी सिद्धि सतत है तो वह सबके अपने पूर्व जन्म की अधूरी डिग्री का प्रमाण है या इसी जन्म में हस्तांतरित हुई है। पंडोखर सरकार के पिता भी ऐसे ही अनुभव में थे और एक समय के बाद उनकी सिद्धि धुंधला गई थी। अगली बार कभी बागेश्वर सरकार धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री या पंडोखर सरकार गुरुशरण शर्मा से मिला तो अवश्य ही यह जिज्ञासा रखूंगा।

एक बात और, बाद की मुलाकातों में मैंने पंडोखर सरकार से जो प्रश्न अपने बारे में किए थे, उनमें एक प्रश्न मेरे पूर्व जन्म को लेकर था।

क्या है बागेश्वर धाम, कैसे चमत्कारी बन गए धीरेंद्र शास्त्री

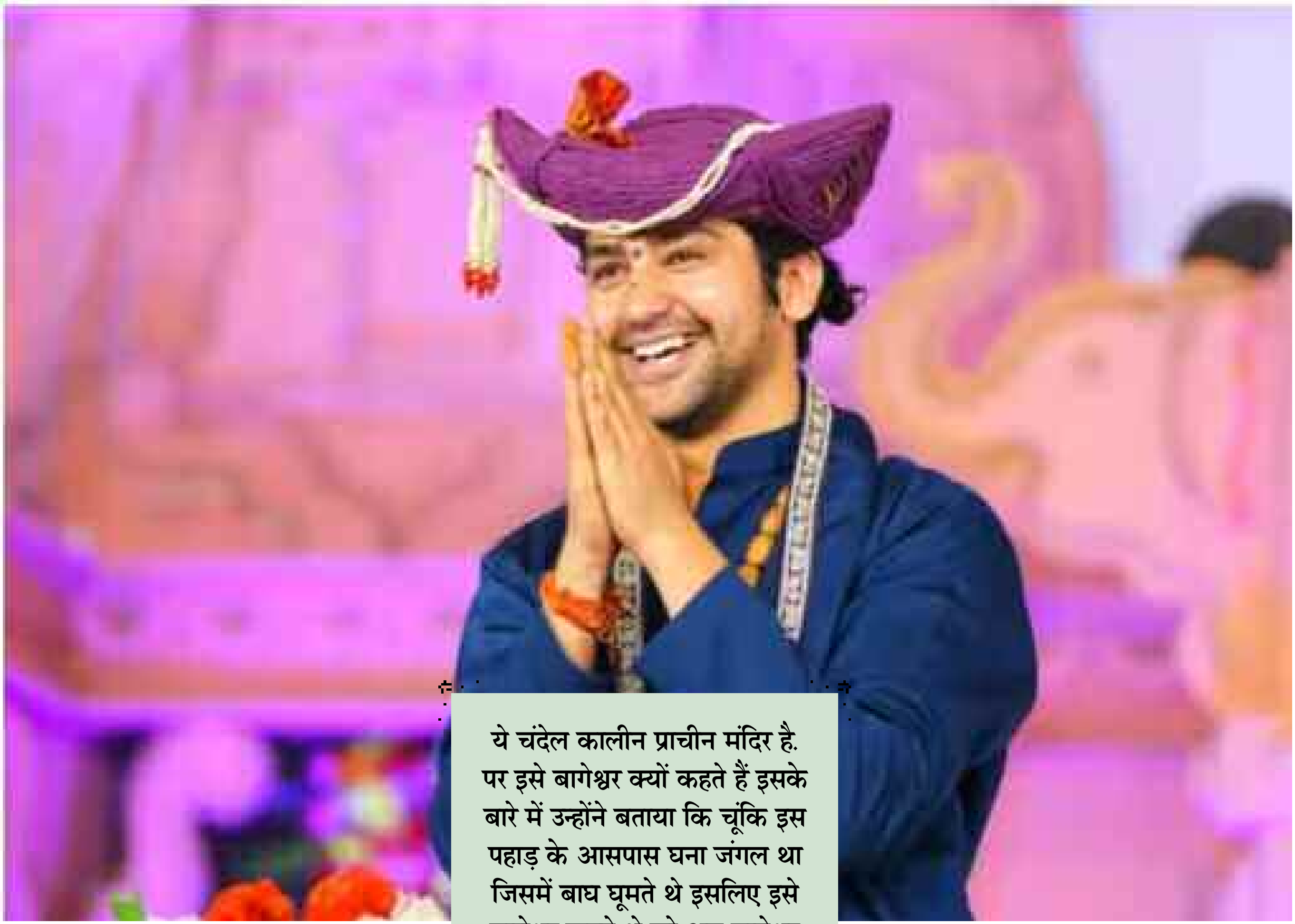

> ये चंदेल कालीन प्राचीन मंदिर है. पर इसे बागेश्वर क्यों कहते हैं इसके बारे में उन्होंने बताया कि चूंकि इस पहाड़ के आसपास घना जंगल था जिसमें बाघ घूमते थे इसलिए इसे बाघेश्वर कहते थे जो अब बागेश्वर बोला जाने लगा है. महादेव की इस मढिया के पास ही बना है बालाजी धाम हनुमान जी महाराज का नया मंदिर. बागेश्वर धाम महाराज के आचार्य धीरेंद्र शास्त्री इन्हीं बालाजी के उपासक हैं.

देशभर में पिछले एक हफ्ते से बागेश्वर धाम की चर्चा हो रही है. मीडिया में भी यही नाम छाया हुआ है. बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री के चमत्कार के बारे में लोग जानना चाह रहे हैं. आज हम इसी पर बात करेंगे कि क्या और कैसा है बागेश्वर धाम, आखिर क्यों यहां के बाबा इतने पॉपुलर हुए हैं.छतरपुर से खजुराहो की ओर फोर लेन रास्ते पर करीब पंद्रह किलोमीटर चलने पर ही बाएं हाथ पर एक रास्ता कटता है, जो गढा गांव की ओर जाता है. रास्ते पर लगे बोर्ड और होर्डिंग्स से ही अंदाजा हो जाता है कि ये रास्ता आम नहीं है. चौराहे पर खड़े ई रिक्शा और टेंपों दस से बीस रुपये में बागेश्वर धाम सरकार तक ले जाने की आवाज लगाते हैं.

पहाड़ी पर स्थित है बागेश्वर धाम, बने हैं दो मंदिर

ऊंचे-नीचे व उबड़-खाबड़ गड्ढों से भरे रस्ते पर दो किलोमीटर चलने के बाद बाद शुरू होता है गढा गांव, जहां इन दिनों श्रद्धालुओं और दुखियारों का डेरा है, लेकिन गढा गांव पर हम अभी बात नहीं करेंगे. पहले हम बात करेंगे बागेश्वर धाम की. हजार लोगों की आबादी वाले गढा गांव के दूसरे छोर पर एक छोटी सी पहाड़ी है और यहीं पर स्थित हैं बागेश्वर धाम. पहाड़ी पर चढ़ने के बाद आपको दो छोटे छोटे मंदिर नजर आएंगे. इनमें से एक है भगवान बागेश्वर महाराज यानी शंकर जी की छोटी सी मढिया. ये इतनी छोटी है कि शिवलिंग को स्पर्श करना हो तो झुककर भी एक आदमी मुश्किल से जा पाए.

बागेश्वर धाम के नाम के पीछे की कहानी

यहां के सेवादार दीपेंद्र बताते हैं कि ये चंदेल कालीन

प्राचीन मंदिर है. पर इसे बागेश्वर क्यों कहते हैं इसके बारे में उन्होंने बताया कि चूंकि इस पहाड़ के आसपास घना जंगल था जिसमें बाघ घूमते थे इसलिए इसे बाघेश्वर कहते थे जो अब बागेश्वर बोला जाने लगा है. महादेव की इस मढिया के पास ही बना है बालाजी धाम हनुमान जी महाराज का नया मंदिर. बागेश्वर धाम महाराज के आचार्य धीरेंद्र शास्त्री इन्हीं बालाजी के उपासक हैं और कहते हैं कि उनको इन्हीं की सिद्धि मिली है और इन्हीं के दम पर वह लोगों का भूत व भविष्य बताते हैं.

पेड़ से चिपटकर चीखते चिल्लाते मिले लोग

बालाजी के मंदिर से सट कर ही लगा है एक बड़ा सा पेड़, जिससे चिपट कर लोग चीखते चिल्लाते रहते हैं. इसके बारे में दीपेंद्र कहते हैं कि ये प्रेत बाधा से ग्रसित लोग हैं जो यहां मंगलवार और शनिवार को आते हैं. इस पेड़ में पॉजिटिव एनर्जी है और उसे छूकर या उससे चिपट कर इन लोगों के दिमाग पर छाई निगेटिव एनर्जी दूर हो जाती है. यहीं हमें कुछ लोग ऐसे भी दिखे जिनको जंजीर से बांध गया था और वे जमीन पर लोट लगा रहे थे. इन तीन जगहों के आसपास बैरिकेड लगाई गई है और दिलचस्प ये है मंदिर से दूरी बनाने के लिए लगाई गई बैरिकेड पर ही काले, लाल और पीले रंग की पोटलियां बंधी हुई हैं. इन पोटलियों में अलग-अलग फरमाइशें या श्रद्धालुओं की मन्नतें हैं. काले में प्रेत बाधा से मुक्ति तो पीले में शादी ब्याह की मन्नत तो लाल में सामान्य कामकाज करवाने की अर्जी.

लोगों में अटूट भरोसा, जो मांगा वो मिलेगा

झारखंड की गुमला जिले से आया शैलेंद्र सिहं का परिवार लाल कपड़े में नारियल बांधकर बैरिकेड से बांध रहा था. हमने पूछा ये क्या कर रहे हो तो मुस्कुराते हुए कहा कि बालाजी महाराज के दरबार मे अर्जी लगा रहे हैं. कुछ मांगा है. हमने पूछा किसने कहा ऐसा करने को तो बताया कि सब कर रहे हैं तो हम भी कर रहे हैं. भरोसा है जो मांगा वो मिलेगा. हां इतने लोगों को मिला है तो हमें भी मिलेगा. यहां आने वाले अधिकतर लोग ऐसे ही हैं जो सुनी सुनाई सुन कर चले आ रहे हैं.

सामुदायिक भवन में मिलते हैं धीरेंद्र शास्त्री

इन दो छोटे-छोटे मंदिरों के दर्शन कर नीचे उतरते हैं तो वहीं पर बना है आचार्य धीरेंद्र शास्त्री का वो स्थान जहां वह रहते और जनता से मिलते हैं. पहाड़ी के ठीक नीचे ये दो मंजिला इमारत गांव की पंचायत का सामुदायिक भवन है, जिसमें धीरेंद्र ने लोगों की सहूलियत के लिए ठिकाना बना लिया है. इस परिसर में एक तरफ से लोग आते हैं और दूसरी तरफ से दर्शन कर निकलते रहते हैं. जिसे मिलना होता है उससे धीरेंद्र शास्त्री टोकन व्यवस्था की मदद से समय देकर मिलते भी है. आने वाले लोगों की समस्या सुनने के बाद उनको पेशी पर बुलाते हैं. पेशी का मतलब कोर्ट कचहरी नहीं बल्कि सामने पहाड़ी पर बने मंदिर में पांच या दस बार आना होता है. अर्जी लगाने के बाद यहीं पेशी होती है. लोगों को भरोसा है कि पेशी और बालाजी के दर्शन के बाद दुख दर्द दूर हो जाएंगे.

धीरेंद्र जहां पर बैठते है, वहीं पीछे की तरफ उनके दादा संन्यासी बाबा के बैठने का स्थान है. बेहद सामान्य तरीके से रहने वाले धीरेंद्र शास्त्री कैसे बागेश्वर धाम सरकार के नाम से जाने जाने लगे ये पूछने पर उनके मित्र रिंकी सिंह बताते हैं कि इनके परिवार में पुरोहिताई का काम होता था. इनके दादा भी यही काम करते थे यानी कि पर्चा पर कुछ लिखकर भूत भविष्य बताने का काम.

इस तरह बड़ा होता गया धीरेंद्र शास्त्री का दरबार

धीरेंद्र जहां पर बैठते है, वहीं पीछे की तरफ उनके दादा संन्यासी बाबा के बैठने का स्थान है. बेहद सामान्य तरीके से रहने वाले धीरेंद्र शास्त्री कैसे बागेश्वर धाम सरकार के नाम से जाने जाने लगे ये पूछने पर उनके मित्र रिंकी सिंह बताते हैं कि इनके परिवार में पुरोहिताई का काम होता था. इनके दादा भी यही काम करते थे यानी कि पर्चा पर कुछ लिखकर भूत भविष्य बताने का काम. शुरुआती दिनों की छोटी मोटी पुरोहिताई के बाद धीरेंद्र रामकथा करने लगे. आसपास के गांवों में कथा से जो मिलता था उसे रख लेते थे. इस बीच कुछ कथित सिद्धियों के चलते उनकी तरफ से बताई गईं बातें सच होने लगीं तो उनका दरबार बड़ा होता गया.

कोरोना काल और यूट्यूब ने पूरे देश में किया पॉपुलर

रही सही कसर कोरोना काल और सोशल मीडिया के प्रचार ने पूरी कर दी. लोगों ने घर बैठे खूब कथा सुनी, लाइव प्रसारण देखा और यू-टयूब ने उन्हें देशभर में पहुंचा दिया. बस फिर क्या था महाराज की ठेठ बुंदेली बोली, उनका लड़कपन, बोलचाल की अदा अपने बालाजी पर अटूट भरोसे ने ही उनको पिछले दो साल में ही भारी लोकप्रिय कर दिया. हर मंगलवार ओर शनिवार को गढा गांव में मेला लगता है. धीरेंद्र शास्त्री की राम कथा की अगले दो साल तक की भरपूर बुकिंग है. एक टीवी चैनल उनकी कथाओं का निर्बाध प्रसारण करता है. धीरेंद्र मानते हैं कि वो जो करते हैं वह चमत्कार नहीं, बस हनुमान जी महाराज की कृपा है.

भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देगी डिजिटल मुद्रा

डॉ. कुमारेन्द्र सिंह सेंगर
स्वतंत्र लेखक

समय गुजरने के साथ-साथ आज स्थिति यह है कि खोमचे वाले, ठेले वाले, रेहड़ी वाले भी डिजिटल माध्यम से लेन-देन कर रहे हैं. नोटबंदी के काफी पहले से बाजार में क्रिप्टोकरेंसी का दबदबा दिखाई दे रहा था. यह भारतीय सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त मुद्रा नहीं थी.

आज से छह वर्ष पूर्व 8 नवम्बर 2016 में जब भारतीय प्रधानमंत्री ने नोटबंदी की घोषणा करके तत्कालीन एक हजार रुपये और पाँच सौ रुपये की मुद्रा को बंद कर दिया था, तब इसके पीछे नकली मुद्रा, काले धन को बाहर लाना उद्देश्य था. उसी समय से मुद्रा के नकदी रूप और डिजिटल संस्करण पर भी देशव्यापी चर्चा भी होने लगी थी. नोटबंदी की घोषणा के साथ ही प्रधानमंत्री द्वारा डिजिटल लेन-देन करने पर विशेष जोर दिया गया था. डिजिटल भुगतान व्यवस्था को लेकर उस समय आशंका भी व्यक्त की गई थी, जो तत्कालीन स्थितियों में गलत भी नहीं कही जा सकती है. देश के सुदूर ग्रामीण अंचलों में ऐसी ढाँचागत व्यवस्था नहीं पाई जाती है कि वहाँ डिजिटल अर्थव्यवस्था के बारे में सकारात्मक रूप से सोचा भी जा सके. इसके अलावा तकनीकी ज्ञान, इंटरनेट व्यवस्था, डाटा स्पीड आदि भी ऐसे बिंदु थे, जिनके कारण डिजिटल व्यवस्था पर विश्वास कर पाना सहज नहीं था.

समय गुजरने के साथ-साथ आज स्थिति यह है कि खोमचे वाले, ठेले वाले, रेहड़ी वाले भी डिजिटल माध्यम से लेन-देन कर रहे हैं. नोटबंदी के काफी पहले से बाजार में क्रिप्टोकरेंसी का दबदबा दिखाई दे रहा था. यह भारतीय सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त मुद्रा नहीं थी. इसे असुरक्षित भी माना जाता है. इसे लेकर भी लगातार आवाज उठाई जाती रही. ऐसे में सरकार के सामने एक तरह का अप्रत्यक्ष दवाब भी था कि उसके द्वारा ऐसी डिजिटल मुद्रा का संचालन किया जाये तो सुरक्षित भी हो और सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हो. ऐसे में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा डिजिटल रुपये की पेशकश के लिए पहली पायलट परियोजना दिसम्बर माह में मुंबई, नई दिल्ली, बेंगलुरु और भुवनेश्वर में शुरू की गई है. आर्थिक क्षेत्र में इसे एक बड़ा कदम कहा जायेगा. डिजिटल रुपया परियोजना अभी एक सीमित

उपयोगकर्ता समूह के बीच शुरू हुई है, जिसमें भारतीय स्टेट बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, यस बैंक और आईडीएफसी फर्स्ट बैंक के साथ ग्राहक और व्यापारी इसका लेन-देन कर सकेंगे. यह मुद्रा इन बैंकों की ओर से उपलब्ध एप्स में सुरक्षित होगा. उपभोक्ता बैंकों की ओर से उपलब्ध एप्स, मोबाइल फोन और डिवाइस में बने डिजिटल वॉलेट के द्वारा ई-रुपये के साथ लेन-देन कर सकेंगे. इसे आसानी से मोबाइल फोन से एकदूसरे को भेजा जा सकेगा और और हर तरह के सामान खरीदे जा सकेंगे. इस डिजिटल मुद्रा को पूरी तरह से भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा संचालित, नियंत्रित किया जायेगा. इसके माध्यम से व्यक्ति से व्यक्ति और व्यक्ति से व्यापारी के बीच लेन-देन किए जा सकेंगे.

देश की डिजिटल मुद्रा को सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी अर्थात सीबीडीसी के नाम से जाना जायेगा. यह एक डिजिटल टोकन के रूप में जारी होगा और एक लीगल टेंडर होगा अर्थात इसे कानूनी मुद्रा माना जाएगा. जिस मूल्य पर वर्तमान में नकद मुद्रा (नोट) और सिक्के जारी होते हैं, डिजिटल मुद्रा को भी उसी मूल्य पर जारी किया जायेगा. यदि आसान शब्दों में कहें तो डिजिटल मुद्रा या फिर सीबीडीसी नकद रुपये का इलेक्ट्रॉनिक रूप है. जिस तरह से नकद मुद्रा के द्वारा लेन-देन किया जाता है, उसी तरह से डिजिटल करेंसी के माध्यम से लेन-देन किया जा सकेगा. चूँकि डिजिटल मुद्रा को मोबाइल फोन और दूसरे उपकरणों में रखा जा सकेगा, इस कारण से वालेट के रूप में भी इसके द्वारा लेन-देन किया जा सकेगा.

देश में डिजिटल मुद्रा आने के बहुत पहले से लोग यूपीआई के माध्यम से भुगतान कर रहे हैं. बहुतेरे नागरिकों ने नकद रखना बंद सा कर दिया है. ऐसे में प्रश्न उठाना स्वाभाविक है कि डिजिटल करेंसी और यूपीआई के माध्यम से भुगतान में क्या अंतर है? यहाँ एक बात का ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि यूपीआई के माध्यम से जो भुगतान किया जाता है वह सीधे बैंक खाते से बैंक खाते को ट्रांसफर होता है. तमाम सारे यूपीआई एप्स को अलग-अलग बैंक नियंत्रित करते हैं. उन पर रिजर्व बैंक की निगरानी नहीं होती है जबकि डिजिटल मुद्रा का लेन-देन सीधे रिजर्व बैंक की निगरानी में होगा. इसके अलावा यूपीआई के माध्यम से किये जाने वाले लेन-देन एक चेक की तरह काम करते हैं. इसमें एक व्यक्ति बैंक को निर्देशित करता है कि उसके खाते में जमा राशि से वास्तविक रुपये का भुगतान किया जाये. इस प्रक्रिया में कई संस्थाएँ, कई लोग शामिल होते हैं, जो इस प्रक्रिया को पूरा करते हैं. इस प्रक्रिया को पूरा होने में कई बार कुछ मिनट से लेकर दो दिन तक लग जाते हैं. स्पष्ट है कि भुगतान तत्काल न होकर एक प्रक्रिया के अंतर्गत होता है, जो समय ले सकता है. इसके उलट डिजिटल मुद्रा में भुगतान करते ही सामने वाले को उसकी रकम मिल जाती है. वर्तमान में होने वाला डिजिटल लेन-देन किसी बैंक के खाते में जमा रुपये का ट्रांसफर होता

वर्तमान युग तकनीक का है, जहाँ कदम-कदम पर खुद को भी तथा लगभग सभी क्षेत्रों को अपडेट होते रहने की आवश्यकता है. ऐसे दौर में जबकि अर्थव्यवस्था वैश्विक समुदाय के साथ गति पकड़ने की स्थिति में है, तब इस क्षेत्र में भी व्यापक सुधार अपेक्षित हैं. इन्हीं सुधारों के लिए उठाये जाने वाले तमाम कदमों में से एक कदम डिजिटल मुद्रा का भी है.

है जबकि सीबीडीसी को नकद मुद्रा की जगह उपयोग में लाया जाएगा.

डिजिटल मुद्रा के अपने फायदे भी हैं. इसके द्वारा यदि आम आदमी को फायदा होगा तो सरकार को भी इसके लाभ हैं. डिजिटल मुद्रा के चलन में आने से सरकार नकद मुद्रा छापने में आने वाले खर्च को बचा सकेगी. डिजिटल मुद्रा की ट्रेकिंग किये जाने से सरकार उसकी निगरानी कर सकेगी, जो किसी भी रूप में नकद मुद्रा पर नहीं है. इसके अलावा रिजर्व बैंक के हाथों में नियंत्रण होने से बाजार में उसकी तरलता को भी नियंत्रित किया जा सकेगा. इसके आने के बाद बहुत हद तक भ्रष्टाचार, नकली मुद्रा, काले धन की समस्या पर भी अंकुश लग सकेगा. आम आदमी के लिए यह मुद्रा इस रूप में लाभप्रद होगी कि व्यक्ति को बैंक खाते की जरूरत नहीं होगी, वह इसका स▪ालन ऑफलाइन भी कर सकता है. नागरिक अपने धन को जमा करने और निकालने की परेशानियों से भी बच सकेंगे क्योंकि डिजिटल मुद्रा का उपयोग इलेक्ट्रॉनिक रूप से किया जाएगा. नकदी से ज्यादा सुरक्षित होने के कारण लोग धन की सुरक्षा को लेकर भी चिंता-मुक्त हो सकेंगे. डिजिटल मुद्रा एक तरह से बहुत पहले से चलन में रही बिटकॉइन जैसी क्रिप्टोकरेंसी वाली अवधारणा है. यह उसी तरह से कार्य भी करेगी, बस मूल अंतर ये होगा कि क्रिप्टोकरेंसी का नियंत्रण निजी हाथों से होता है, इससे इसकी मॉनिटरिंग नहीं हो पाती. इसमें गुमनाम रहकर भी लेन-देन हो जाते हैं, जिससे गैरकानूनी गतिविधियों में क्रिप्टोकरेंसी का इस्तेमाल होने की आशंका रहती है. इसके उलट डिजिटल मुद्रा का स▪ालन, नियंत्रण रिजर्व बैंक के द्वारा किया जा रहा है. इससे डिजिटल रुपये की निगरानी हो सकेगी और किसके पास कितने रुपये हैं, इसकी जानकारी भी रिजर्व बैंक को होगी. सरकारी नियंत्रण में होने के कारण हमारे देश का एक रुपये का सिक्का और डिजिटल रुपया एकसमान ताकत रखता है. इसके साथ ही एक बड़ा अंतर यह भी है कि डिजिटल रुपये को क्रिप्टोकरेंसी की तरह खरीदा या बेचा नहीं जा सकेगा बल्कि यह नकद के विकल्प के रूप में काम करेगा.

वर्तमान युग तकनीक का है, जहाँ कदम-कदम पर खुद को भी तथा लगभग सभी क्षेत्रों को अपडेट होते रहने की आवश्यकता है. ऐसे दौर में जबकि अर्थव्यवस्था वैश्विक समुदाय के साथ गति पकड़ने की स्थिति में है, तब इस क्षेत्र में भी व्यापक सुधार अपेक्षित हैं. इन्हीं सुधारों के लिए उठाये जाने वाले तमाम कदमों में से एक कदम डिजिटल मुद्रा का भी है. आज जबकि डिजिटल भुगतान को लगभग सभी जगह होते देखा जा रहा है, तब सरकारी नियंत्रण से संचालित डिजिटल मुद्रा निश्चित ही भारतीय अर्थव्यवस्था में अपेक्षित सुधार लाएगी.

ऑस्ट्रेलियन ओपन 2023 – एक पुनरावलोन

1905 में इसकी शुरूआत ऑस्ट्रलेशियन चैंपियनशिप के रूप में वेयरहाउस मेन्स क्रिकेट ग्राउंड मेलबॉर्न में पुरूष एकल व युगल स्पर्धाओं के आयोजन के रूप में हुयी। महिलाओं की स्पर्धाऐं व मिश्रित युगल 1922 से ही शुरू हुए। 1927 में इसका नाम बदल कर ऑस्ट्रेलियन चैंपियनशिप रखा गया तथा 1968 में ओपन युग की शुरूआत के बाद से इसे ऑस्ट्रेलियन ओपन के नाम से जाना जाता है, तथा इसे एशिया-पेसिफिक के ग्रैंड स्लैम का खिताब दिया गया है।

डॉ. शालीन शर्मा

सोमवार 16 जनवरी 2023 से मेलबॉर्न में टेनिस की चार बड़ी वार्षिक स्पर्धाओं (ग्रैंड स्लैम) के पहले चरण ऑस्ट्रेलियन ओपन का 111वाँ संस्करण (ओपन युग का 55वाँ) प्रारम्भ हो रहा है। ऑस्ट्रेलिया में टेनिस का इतिहास राष्ट्र से पुराना है। विक्टोरिया की टेनिस चैंपियनशिप 1879 में प्रारंभ हुयी, जबकि ऑस्ट्रेलियन ओपन को, ऑस्ट्रेलिया के 1905 में एक राष्ट्रमंडल देश के रूप में अस्तित्व में आने का इंतजार करना पड़ा।

1905 में इसकी शुरूआत ऑस्ट्रलेशियन चैंपियनशिप के रूप में वेयरहाउस मेन्स क्रिकेट ग्राउंड मेलबॉर्न में पुरूष एकल व युगल स्पर्धाओं के आयोजन के रूप में हुयी। महिलाओं की स्पर्धाऐं व मिश्रित युगल 1922 से ही शुरू हुए। 1927 में इसका नाम बदल कर ऑस्ट्रेलियन चैंपियनशिप रखा गया तथा 1968 में ओपन युग की शुरूआत के बाद से इसे ऑस्ट्रेलियन ओपन के नाम से जाना जाता है, तथा इसे एशिया-पेसिफिक के ग्रैंड स्लैम का खिताब दिया गया है। 1980 व 1981 में महिलाओं व पुरूषों की स्पर्धाऐं अलग-अलग तिथियों में अलग-अलग स्थानों पर भिन्न-भिन्न प्रतियोगिताओं के रूप में आयोजित हुयी थीं। शुरूआती दौर में इसके आयोजन का समय भी निश्चित नहीं था। 1919 में प्रथम विश्व युद्ध के तत्काल बाद 1919 का टूर्नामेंट जनवरी 1920 में तथा 1920 का टूर्नामेंट मार्च 1920 में आयोजित किया गया था। 1923 में ब्रिसबेन में टूर्नामेंट अगस्त माह में आयोजित हुआ, तथा इसी प्रकार 1976 दिसम्बर से जनवरी 1977 के मध्य आयोजित प्रतियोगिता के बाद पुनः

दिसम्बर 1977 में प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। 1982 से 1985 तक प्रतियोगिता दिसम्बर मध्य में आयोजित हुयी तथा फिर इसे जनवरी मध्य में आयोजित करने के प्रस्ताव के कारण 1987 से यह प्रतिवर्ष जनवरी में आयोजित हो रही है, इस कारण 1986 में कोई प्रतियोगिता आयोजित नहीं हुयी। 1916 से 1918 तक प्रथम विश्व युद्ध के कारण, तथा 1941 से 1945 तक द्वितीय विश्व युद्ध के कारण भी इसका आयोजन संभव नहीं हुआ था।

शुरूआती दौर में इसका आयोजन ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न शहरों यथा मेलबॉर्न (53 बार), सिडनी (17 बार), एडिलेड (14 बार), ब्रिसबेन (08 बार), पर्थ (03 बार), तथा दो बार न्यूज़ीलैंड में भी ऑकलैंड (1906), तथा हेस्टिंग्स (1912) में हुआ। 1909 में तो इसका आयोजन पर्थ के चिड़ियाघर में विशेष तौर पर तैयार किए गए कोर्ट्स पर हुआ था। 1972 से टेनिस ऑस्ट्रेलिया ने इसका आयोजन मेलबॉर्न के कुयूंग क्लब के घास के मैदान/कोर्ट में स्थायी रूप से कर दिया, तथा 1988 में इसे परिवर्तित कर नए स्थान फ्लिंडर्स पार्क (अब मेलबॉर्न पार्क) के 'रिबाउण्ड एस' हार्ड कोर्ट सतह पर किया जाने लगा। 2008 में इसके कोर्ट की बीस साल पुरानी सतह को नए एक्रेलिक सतह 'प्लेक्सीकुशन' द्वारा बदल दिया गया और 2020 से नीले रंग की 'ग्रीनसेट' सतह पर इसका अयोजन हो रहा है। स्वीडन के मैट्स विलेंडर एकमात्र ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्हें इसे दोनों सतहों, ग्रास कोर्ट एवं हार्ड कोर्ट पर जीतने का गौरव प्राप्त है।

प्रारंभिक वर्षों में प्रतियोगिता को ऑस्ट्रेलिया के सभी राज्यों द्वारा पूर्व से आयोजित की जा रही प्रतियोगिताओं एवं न्यूज़ीलैंड की राष्ट्रीय प्रतियोगिता के कारण स्वयं को स्थापित करने में कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा और कई वर्षों तक ऑस्ट्रेलिया की भूमि पर सबसे प्रतिष्ठित प्रतियोगिता 1879 से प्रारंभ विक्टोरिया की टेनिस चैंपियनशिप ही बनी रही। शुरूआती वक्त में ऑस्ट्रेलिया तक की लम्बी दूरी, सफर में लगने वाला अत्यधिक समय, प्रतियोगिता का आयोजन समय (क्रिसमस एवं नव वर्ष) तथा कुयूंग क्लब की खस्ता हाल सुविधाऐं एवं कम इनामी राशि चोटी के खिलाड़ियों को आकर्षित करने में नाकाम रहीं व काफी बाद तक चोटी के खिलाड़ी इस स्पर्धा से दूर ही रहे। बिल टिल्डेन, रेन लेकोस्टे, हेनरी कोचे, जेक क्रेमर, पाचो गोंज़ालेज, मैन्युल सेन्टाना आदि कई मशहूर खिलाड़ी कभी यहाँ नहीं खेले, वहीं डॉन बज, जारिसलोव ड्रोनबी, इली नस्तासे (35 वर्ष की उम्र में), तथा ब्योन बोर्ग मात्र एक बार ही अपने कैरियर में यहां आए। अमरीका के महान खिलाड़ी आंद्रे अगासी भी अपने कैरियर के प्रारंभ में यहां नहीं आए, व 1995 में ही पहली बार प्रतियोगिता में शामिल हुए तथा विजेता रहे। उसके बाद से सभी प्रमुख खिलाड़ी इस प्रतियोगिता का हिस्सा रहे हैं, एवं अब इस प्रतियोगिता ने ग्रैंड स्लैम के रूप में स्वयं को भली भाँति स्थापित कर लिया है, और अब यह ऑस्ट्रेलिया का सबसे बड़ा वार्षिक खेल आयोजन है और दुनिया भर में 'हैप्पी स्लैम' के मान से लोकप्रिय इस प्रतियोगिता का कोरोना काल (फरवरी 2021) में भी बेहद सफल आयोजन हुआ।

पुरूष वर्ग में इस प्रतियोगिता को सर्वाधिक बार जीतने का गौरव सर्बिया के नोवाक ज़ोकेविक के नाम है, जिन्होंने अब तक कुल 09 बार इस स्पर्धा को जीता है। ओपन युग से पूर्व के समय में ऑस्ट्रेलिया के ही महान नायक रॉय इमर्सन 06 बार 1961 व 63 से 67 तक, विजेता रहे हैं, उन्होंने 03 बार युगल स्पर्धा भी जीती थी।

पुरूष वर्ग में एकल स्पर्धा के विजेता को दी जाने वाली ट्रॉफी का नाम 1907 में विम्बलडन के पहले ऑस्ट्रेलियाई विजेता नॉर्मन ब्रुक्स के नाम पर रखा गया है, वहीं महिलाओं की एकल स्पर्धा के विजेता को दी जाने वाली ट्रॉफी का नामकरण 1925, 1928 एवं 1929 में यहाँ तीनों खिताब (एकल, युगल एवं मिश्रित युगल) एक साथ जीतने वाली ऑस्ट्रेलिया की ही डैफ्ने एक्हर्स्ट की स्मृति में किया गया है। यहाँ महिला व पुरूष दोनों वर्ग में विजेताओं को एक समान इनामी राशि दी जाती है।

पुरूष वर्ग में इस प्रतियोगिता को सर्वाधिक बार जीतने का गौरव सर्बिया के नोवाक ज़ोकेविक के नाम है, जिन्होंने अब तक कुल 09 बार इस स्पर्धा को जीता है। ओपन युग से पूर्व के समय में ऑस्ट्रेलिया के ही महान नायक रॉय इमर्सन 06 बार 1961 व 63 से 67 तक, विजेता रहे हैं, उन्होंने 03 बार युगल स्पर्धा भी जीती थी। ऑस्ट्रेलिया के ही महानतम खिलाड़ियों में प्रमुख केन रूसवेल ने इसे 04 बार 1953, 55 व 1971, 72 में जीत कर सबसे युवा व सबसे बुजुर्ग विजेता होने का गौरव अपने नाम कर इतिहास रचा। सर्वाधिक स्पर्धाऐं जीतने का रिकार्ड ऑस्ट्रेलिया के एड्रियन क्रिस्ट के नाम है, जिन्होंने 1936 से 1950 के मध्य 03 एकल, व 10 युगल के साथ कुल 13 खिताब जीते। ऑस्ट्रेलिया के ही जैक क्रॉफोर्ड ने 1929 से 1935 के मध्य 04 एकल, 04 युगल व 03 मिश्रित युगल के साथ कुल 11 खिताब जीते। 1932 में तो उन्होंने एक ही वर्ष में तीनों खिताब (एकल, युगल एवं मिश्रित युगल) जीतने का अनूठा कारनामा भी कर दिखाया। उनके अतिरिक्त एक ही वर्ष में तीनों खिताब (एकल, युगल एवं मिश्रित युगल) जीतने वाले अन्य खिलाड़ी हैं, 1926 में ऑस्ट्रेलिया के जे.बी. हॉक्स

एवं 1928 में फ्रांस के महान खिलाड़ी यों बोरोत्रा।

महिला वर्ग में ऑस्ट्रेलिया की मार्ग्रेट कोर्ट स्मिथ ने 1960 से 1973 के बीच कुल 11 एकल स्पर्धा जीत कर किसी भी ग्रैंड स्लैम प्रतियोगिता में सर्वाधिक जीत का रिकार्ड कायम किया। वे इस प्रतियोगिता में सर्वाधिक स्पर्धा जीतने वाली खिलाड़ी भी हैं, उन्होंने 11 एकल के साथ 08 युगल व 04 मिश्रित युगल जीत कर कुल 23 खिताबों पर कब्जा किया। जिसमें से 1963 में तीनों खिताब (एकल, युगल एवं मिश्रित युगल) एक साथ अपने नाम किए। ऑस्ट्रेलिया की ही नेन्सी वाएन बोल्टोन ने 06 एकल, 10 युगल व 04 मिश्रित युगल जीत कर कुल 20 खिताब जीते। उन्होंने तीनों खिताब (एकल, युगल एवं मिश्रित युगल) 03 बार 1940, 47 व 48 में अपने नाम किए। इनके अतिरिक्त ऑस्ट्रेलिया की थेलमा लाँग ने भी 1952 में यह कारनामा अंजाम दिया। ओपन युग में सर्वाधिक एकल खिताब (07 बार) जीतने का रिकार्ड अमरीका की सेरेना विलियम्स के नाम है। उनके अलावा घरेलू सितारे मार्ग्रेट कोर्ट स्मिथ व इवॉन गूगालाँग तथा महान स्टेफी ग्राफ व मोनिका सेलेस 04-04 बार विजेता रहीं हैं।

आज कल चोटी के पुरूष खिलाड़ी युगल स्पर्धाओं में षिरकत नहीं करते जिससे दोहरी/तिहरी सफलता नहीं देखने को मिलती, किंतु महिलाओं में उच्च वरीयता प्राप्त खिलाड़ी भी युगल/मिश्रित युगल में हिस्सा लेती हैं। सेरेना विलिसम्स वर्तमान में सक्रिय खिलाड़ियों में इस सफलता के काफी करीब पहुँची हैं। वे इस प्रतियोगिता में एकल व युगल खिताब जीत चुकी हैं, तथा 1999 में मिश्रित युगल में उप विजेता रहीं हैं।

भारतीय सफलता के रूप में लिएंडर पेस ने 2003, 10 व 15 में रिकार्ड 03 बार मिश्रित युगल का खिताब जीता है, वे 2012 में पुरूष युगल खिताब के विजेता भी रहे हैं। महेश भूपति 2006 व 09 में दो बार तथा सानिया मिर्जा एक बार 2009 में मिश्रित युगल विजेता रहे हैं। इसके अलावा सनिया मिर्जा 2016 में महिला युगल विजेता रहीं हैं और पेस/भूपति 1999 में पुरूष युगल उपविजेता रह चुके हैं।

बीते वर्षों में यहाँ 'बिग फोर' का दबदबा रहा है, 2004 से खेले गये 19 फाइनल मुकाबलों में जोकोविच 09 बार, फेडरर 06 बार तथा नडाल 02 बार विजेता रहे एवं एंडी मरे 05 बार, नडाल 04 बार तथा फेडरर 01 बार उपविजेता रहे हैं। इस दौरान केवल रूस के मरात साफिन 2005 में और 2014 में स्विटजरलैंड के स्टान वॉवरिंका ही विजेता बन सके हैं।

इस वर्ष पुरूष वर्ग में कई प्रमुख खिलाड़ी चोट व अन्य कारणों से हिस्सा नहीं ले रहे हैं, जिनमें विश्व में वर्तमान नंबर एक कार्लोस एलकारेज़, मारियॉन सिलिच, गेल मॉन्फिस मुख्य हैं। खिताब के प्रमुख दावेदारों में नौ बार के विजेता जोकोविच यदि 29 जनवरी को यहाँ जीतते हैं तो इतिहास बनेगा, यह उनका यहाँ दसवाँ खिताब और रिकार्ड 22वाँ ग्रैंड स्लैम होगा। उनके अलावा स्वीडन के कैस्पर रुड, रूस के डेनियल मेडवडेव, यूनान के स्टीफेनो सिटसीपास, कनाडा के फेलिक्स एलिसीम और जर्मनी के एलेक्ज़ेडर ज़ेरेव प्रमुख दावेदार हैं। वहीं गत विजेता स्पेन के रफेल नडाल, बढ़ती उम्र व कठिन ड्रॉ के बाद भी अपनी पुरानी लय पुनः पाने के लिए पूरा प्रयास करेंगे, यदि वे जीते तो वे सर्वाधिक ग्रैंड स्लैम खिताब के अपने रिकार्ड को 23 तक ले जाने में सफल होगें। रूसी आंद्रेई रूबलेव, अमरीकी टेलर फ्रिट्ज़ और इतालवी मैरियो बेरटीनी भी संभावित दावेदार होंगे।

महिला वर्ग में मौजूदा चैंपियन ऐशले बार्टी संन्यास ले चुकी हैं। बीते बीस सालों में सरेना यहाँ सात बार चैंपियन बनी हैं और उनके अलावा सिर्फ विक्टोरिया अज़ारेंका और नाओमी ओसाका ही अपनी सफलता को दोहरा सकीं है, अन्यथा यहाँ हर बार नया चैंपियन बनना लगभग तय है। ऐसे में मुख्य मुकाबला, मौजूदा नंबर एक पोलैंड की ईगा श्वानटेक और नंबर दो तुर्की की ऑन्स जेबॉर के मध्य होने की संभावना है। भारतीय आशा अब तक युगल मुकाबलों तक ही सीमित रही है, हाल के वर्षों में 2015 में लिएंडर पेस की मिश्रित युगल व 2016 में महिला युगल स्पर्धा में सानिया मिर्जा की जीत अंतिम भारतीय सफलता रही है, किंतु अब विगत कुछ वर्षों से कोई भी भारतीय खिलाड़ी, किसी भी युगल स्पर्धा (पुरुष, महिला और मिश्रित) के फाइनल तक भी नहीं पहुँचे हैं, ऐसे में किसी भारतीय की जीत किसी अचंभे या उलटफेर से कम नहीं होगी।

भारतीय सफलता के रूप में लिएंडर पेस ने 2003, 10 व 15 में रिकार्ड 03 बार मिश्रित युगल का खिताब जीता है, वे 2012 में पुरूष युगल खिताब के विजेता भी रहे हैं। महेश भूपति 2006 व 09 में दो बार तथा सानिया मिर्जा एक बार 2009 में मिश्रित युगल विजेता रहे हैं। इसके अलावा सनिया मिर्जा 2016 में महिला युगल विजेता रहीं हैं और पेस/भूपति 1999 में पुरूष युगल उपविजेता रह चुके हैं।

प्रारंभिक वर्षों की धीमी शुरूआत, व स्थान व तिथियों में हुए कई प्रयोगों के पश्चात अब यह टूर्नामेण्ट पूर्णतः स्थापित हो चुका है, व अपने नवीन प्रयोगों से ग्रैंड स्लैम इतिहास में नए अध्याय जोड़ रहा है। यहाँ के प्रमुख कोर्ट रॉड लेवर एरेना (सेंटर कोर्ट), जॉन सेन एरेना तथा मार्ग्रेट कोर्ट एरेना में सरकने वाली छत है, जिससे बारिश एवं अत्यधिक गर्मी के समय छत के नीचे इनडोर खेल हो सकता है। यह अनूठा प्रयोग सबसे पहले ऑस्ट्रेलियन ओपन में ही हुआ व 2009 में विम्बलडन में ऐसा स्टेडियम बनने से पहले ऐसा केवल यहीं था। यही नहीं महिलाओं व पुरूषों को समान इनामी राशि देने की यू.एस. ओपन की पहल को भी सबसे पहले यहीं अपनाया गया।

ऑस्ट्रेलियन ओपन में अगले 15 दिनों में कई रिकार्डों के साथ उच्च कोटि की प्रतिस्पर्धा, कलात्मकता, संवेग, नाटकीयता, अनिश्चितता व खेल भावना के प्रदर्शन का एक और अध्याय जुड़ेगा।

पुरूष एकल विजेता	- नॉर्मन ब्रुक्स चैलेंज कप
महिला एकल विजेता	- डैफ्ने एक्हर्स्ट मैमोरियल कप
इनामी राशि दोनों को समान -	2,975,000 ऑस्ट्रेलियन डॉलर
स्पर्धाऐं -	पुरूष तथा महिला एकल व युगल, मिश्रित युगल, लड़कों व लड़कियों की एकल तथा मास्टर्स स्पधाऐं।
पुरूष ड्रा -	एकल 128 प्रतियोगी, युगल 64 प्रतियोगी
महिला ड्रा -	एकल 128 प्रतियोगी, युगल 64 प्रतियोगी
मिश्रित युगल -	64 प्रतियोगी
प्रमुख कोर्ट -	रॉड लेवर एरेना, जॉन सेन एरेना, मार्ग्रेट कोर्ट एरेना तथा शो कोर्ट (किया) एरेना

धर्मान्तरण पर छिड़ी बहस

डॉ. ऋचा सिंह राठौर
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं प्रभारी, रक्षा अध्ययन विभाग, गांधी महाविद्यालय, उरई

कई बार धर्मान्तरित होने वाले को भी यह नहीं पता कि उसके साथ क्या हो रहा है. इस बहस ने लोगों का ध्यान इस मुद्दे की ओर खींचा है. वर्तमान में देश को धर्मान्तरण पर एक सार्थक बहस की आवश्यकता भी है, जिससे इस बारे में एक जनमत तैयार हो सके.

हाल में ही सर्वोच्च न्यायालय ने धर्मान्तरण के मुद्दे पर अपनी टिप्पणी देकर इसे बड़ी बहस का मुद्दा बना दिया है. एक याचिका पर सुनवाई करते हुए न्यायमूर्ति एम. आर. शाह और न्यायमूर्ति हिमा कोहली की बेंच ने जबरन, लालच, धोखेवश किये गए धर्मपरिवर्तन को अनुच्छेद 14, 21 तथा 25 का उल्लंघन माना है. याचिका पर स्पष्टीकरण देते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने इसे अंतरात्मा की आवाज के अधिकार का हनन माना है. सुप्रीम कोर्ट ने टिप्पणी की है कि 'जबरन धर्मान्तरण अंततः राष्ट्र की सुरक्षा, धर्म की स्वतंत्रता और नागरिकों की अंतरात्मा को प्रभावित कर सकता है.' इस तरह की घटनाएँ न सिर्फ धर्मान्तरित व्यक्ति की धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन करतीं हैं अपितु ये हमारे धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने के भी विरुद्ध हैं. सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार को भी उन कदमों की जानकारी देने का निर्देश दिया है जो वे जबरन धर्मपरिवर्तन को रोकने के लिए उठाने जा रहे हैं. न्यायालय का वर्तमान रुड़ उन लोगों को निराश करने वाला है जो धर्मान्तरण के इस षड्यंत्र को राइट ऑफ चॉइस मानते हुए अनुच्छेद 21 तथा 25 में दिए गए धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार से जोड़ते हैं. यद्यपि ये अनुच्छेद धर्म को मानने, प्रचार करने, अभ्यास करने एवं सभी धर्मों के लोगो को धर्म प्रबंधन की अनुमति सार्वजनिक व्यवस्था, स्वास्थ्य और नैतिकता के नियमों के अधीन रहते हुए प्रदान करता है तथापि ये अनुच्छेद कहीं भी जबरन, धोखे से अथवा लालच देकर धर्मपरिवर्तन की अनुमति नही देते. जबरन धर्मपरिवर्तन का प्रयास आईपीसी धारा 295ए, 298 के तहत संज्ञेय अपराध है. कई राज्यों में धर्मान्तरण विरोधी कानून अस्तित्व में हैं. 1956 के नियोमी आयोग एवं वाधवा आयोग 2000 ने धर्मान्तरण की समस्या को उठाया था. वर्ष 2006 में श्री लाल कृष्ण आडवाणी द्वारा भी धर्मान्तरण को हिन्दू समाज और राष्ट्रीय एकता के विरुद्ध गंभीर खतरा बताया गया था.

वास्तव में यह राष्ट्रीय अखंडता को उत्पन्न सबसे गंभीर खतरों में से एक है, जहाँ इस देश के बहुसंख्यक हिंदू समाज को निशाने पर रखते हुए जिहादी शक्तियां एवं ईसाई मिशनरियां बड़े पैमाने पर धर्मान्तरण करने में लगी हैं. इनके लक्ष्य समान हैं, जनजातीय आबादी तथा समाज पिछड़े तबकों को हिन्दू समाज से काटना. ईसाई मिशनरियां न्यू क्रिश्चियन इकनोमिक थ्योरी के तहत अश्वेत समाज को ईसाई बनाने के मिशन पर कार्य करती हैं. उत्तर-पूर्व के राज्यों में धर्मपरिवर्तन की इस रणनीति के तहत इन क्षेत्रों के धार्मिक समीकरणों में बहुत अंतर आ चुका है. ईसाई आबादी कई जनजातीय राज्यों में बहुसंख्यक हो चुकी है. तमिलनाडु, कर्नाटक के समुद्री बेल्ट में भी इनकी आबादी अप्रत्याशित दर से बढ़ रही है. वर्ष 2011 में सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज ने चौकाने वाले जनसांख्यिकिक आँकड़े दिए, जिसके अनुसार मिजोरम, मणिपुर तथा नागालैंड अधिकांश जनजातीय आबादी ईसाई हो चुकी है. सन 1911 तक मिजोरम में ईसाई जनसंख्या 3 प्रतिशत से भी कम थी, जो सन 2011 में 90 प्रतिशत हो गई. मणिपुर में सन 1951 तक यह 12 प्रतिशत थी जो सन 2011 तक 41 प्रतिशत हो गई. मेघालय में यह 75 प्रतिशत हो चुकी है. इसी तरह कुछ ईसाई मिशनरियां केरल, कर्नाटक, गोआ, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में भी धर्मान्तरण में संलिप्त हैं.

मिशनरियों के अलावा भारत का हिन्दू समाज मुस्लिम जेहादियों के निशाने पर भी है. मुस्लिम आबादी इस देश की दूसरी सबसे बड़ी आबादी है और यह आबादी भी धर्मान्तरण के खेल में शामिल है. हाल के कुछ वर्षों में विवाह द्वारा धर्मपरिवर्तन करवाने की अनेक घटनाएं सामने आई हैं, जिन्हें लव जिहाद के नाम से जाना जा रहा है. उत्तर प्रदेश में तो इसके विरुद्ध उत्तर प्रदेश धर्मपरिवर्तन निषेध अध्यादेश 2020 नामक एक कानून भी लाना पड़ा है. जिसकी धारा 3 विवाह द्वारा व्यक्ति के धर्मपरिवर्तन को अवैध घोषित करती है. धर्म का चयन अवश्य ही व्यक्तिगत पसंद का विषय हो सकता है किंतु एक सोची-समझी रणनीति के तहत धर्मान्तरण के षड्यंत्र को भी नकारा नही जा सकता है. यह देश की एकता, अखंडता के लिए बेहद गंभीर चुनौती है. बड़े पैमाने पर इन शक्तियों को विदेशों से धन प्राप्त हो रहा है. जिसका प्रयोग जनजातीय समूहों और गरीब वर्ग को अनेक प्रकार के लालच देकर दूसरे धर्म में परिवर्तित करने का खेल चल रहा है.

सुप्रीम कोर्ट ने भी स्पष्ट किया है कि कई बार धर्मान्तरित होने वाले को भी यह नहीं पता कि उसके साथ क्या हो रहा है. इस बहस ने लोगों का ध्यान इस मुद्दे की ओर खींचा है. वर्तमान में देश को धर्मान्तरण पर एक सार्थक बहस की आवश्यकता भी है, जिससे इस बारे में एक जनमत तैयार हो सके. केंद्र सरकार भविष्य में क्या इसके विरुद्ध कोई ठोस प्रयास कर पायेगी, ये तो समय बतायेगा किंतु निश्चित रूप से यह गंभीर मुद्दा है जो राष्ट्रविरोधी शक्तियों द्वारा धर्म के आधार पर देश को बाँटने के विकल्प के रूप में प्रयोग में लाया जा रहा है.

सिंधिया समर्थक 22 विधायकों की स्थिति

विरोधियों से दोस्ती की मजबूरी, समर्थक बने दुश्मन

मार्च 2020. 17 दिन चले पॉलिटिकल ड्रामे के बाद ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ 22 विधायक कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आ गए। फिर भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़े, अधिकतर जीते जिनमें से 8 मंत्री भी बने। भाजपा में आए इन्हें तीन साल होने वाले हैं, लेकिन अधिकतर जगह अब भी दिल नहीं मिल सके। कहीं चिट्ठी वॉर तो कहीं खुली बयानबाजी चल रही है।

दैनिक भास्कर ने कांग्रेस छोड़ भाजपा में आए विधायकों के विधानसभा क्षेत्रों में यह पड़ताल की कि संगठन से इनका कितना तालमेल है? भाजपा के जो नेता कभी इनके परंपरागत प्रतिद्वंद्वी रहे, उनसे इनकी पटरी बैठ रही है या नहीं? क्या पुराने भाजपा नेता इन्हें पूरी तरह स्वीकार कर रहे हैं? इन्हीं सवालों को लेकर पड़ताल की तो अधिकतर जगह जवाब ना में मिला।

सबसे बड़ी वजह तो यही कि कांग्रेस से भाजपा में आए इन नेताओं के कारण भाजपा के उन नेताओं का राजनीतिक वर्चस्व संकट में पड़ गया, जिनका अपने क्षेत्र में एकतरफा राज था। इसका सबसे बड़ा उदाहरण पूर्व स्वास्थ्य मंत्री व भाजपा के बड़े नेता डॉ. गौरीशंकर शेजवार हैं। रायसेन जिले के सांची से स्वास्थ्य मंत्री डॉ. प्रभुराम चौधरी और डॉ. शेजवार एक-दूसरे के खिलाफ छह चुनाव लड़ चुके हैं। अब प्रभुराम चौधरी और शेजवार एक ही पार्टी में हैं। चौधरी मंत्री हैं और शेजवार हाशिए पर।

शेजवार अपने दर्द और गुस्से को जाहिर करते रहते हैं। सागर में मंत्री गोविंद सिंह राजपूत के खिलाफ भाजपा के ही एक पूर्व नेता पीछे पड़े हैं। उन्होंने राजपूत के खिलाफ शिकायतों का अंबार लगा दिया है। खाद्य मंत्री बिसाहूलाल सिंह से भाजपा के पुराने कार्यकर्ता नाराज हैं। अपनी ही सरकार के खिलाफ कई बार पार्टी के कार्यकर्ता अनशन पर बैठ चुके हैं। हाटपीपल्या (देवास) में पूर्व मंत्री दीपक जोशी की छटपटाहट उनके द्वारा लिखी गई चिट्ठी में नजर आ रही है। उन्होंने अपने विधानसभा क्षेत्र में आवास योजना में घोटाले के गंभीर आरोप लगाए हैं।

गोविंद सिंह राजपूत (सुरखी) : भाजपा के पूर्व नेता ही कर रहे मंत्री से जुड़े खुलासे

गोविंद सिंह राजपूत सागर जिले की सुरखी से विधायक और प्रदेश सरकार में राजस्व एवं परिवहन मंत्री हैं। सिंधिया के करीबी माने जाते हैं। नवंबर 2021 के उपचुनाव के बाद से नगरीय प्रशासन मंत्री भूपेंद्र सिंह के रिश्तेदार और बीजेपी किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष रहे राजकुमार सिंह ठाकुर धनौरा के साथ उनकी राजनीतिक वर्चस्व की जंग चल रही है।

पिछले साल धनौरा को बीजेपी से निष्कासित कर दिया गया। इसके बाद तो धनौरा ने मंत्री राजपूत के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। ससुराल से मंत्री को दान में मिली 50 एकड़ जमीन के मामले का खुलासा उन्होंने ही किया। हाल में मंत्री के स्कूल की जमीन का मामला भी उजागर किया। इसे लेकर सुप्रीम कोर्ट में याचिका भी लगाई गई है। धनौरा अब गांव-गांव पदयात्रा निकालकर बीजेपी के पुराने कार्यकर्ताओं को जोड़कर चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे हैं।

डॉ. प्रभुराम चौधरी (सांची) पूर्व स्वास्थ्य मंत्री शेजवार अब भी असंतुष्ट, पार्टी के दो कार्यालय

डॉ. प्रभुराम चौधरी रायसेन जिले के सांची से विधायक हैं। यहां 1985 से 2018 तक दो डॉक्टरों के बीच मुकाबला होता आया है। डॉ. गौरीशंकर शेजवार बीजेपी से चुनाव लड़ते और उनके सामने कांग्रेस प्रत्याशी के तौर पर डॉ. प्रभुराम चौधरी ताल ठोंकते, लेकिन सिंधिया के साथ बीजेपी में शामिल होने के बाद प्रभुराम के प्रचार के लिए शेजवार को आना पड़ा। एक-दूसरे के धुर विरोधी जब साथ आए, तो प्रभुराम रिकॉर्ड 63,809 वोटों से उपचुनाव जीते। दोनों डॉक्टरों के दल तो मिल गए, लेकिन दिल नहीं मिल पाए। उपचुनाव के बाद पार्टी ने शेजवार को नोटिस थमा दिया। शेजवार भी प्रभुराम पर हमले बोलते रहते हैं।

दिसंबर 2022 के आखिरी हफ्ते में डॉ. गौरीशंकर शेजवार ने एक कार्यक्रम में कहा कि घोड़ा भी मरेगा और राजा भी मरेगा। इस बयान को विधानसभा चुनाव से जोड़कर देखा जा रहा है। वर्तमान में नई और पुरानी भाजपा कार्यकर्ताओं में मनमुटाव है। यहां डॉ. प्रभुराम चौधरी ने सागर रोड पर श्रीराम परिसर नाम से कार्यालय बना रखा है। दूसरा है जिला भाजपा कार्यालय बस स्टैंड के पास स्थित है। श्रीराम परिसर में कोई कार्यक्रम होता है, तो वहां पुराने भाजपाई नहीं जाते। असल में उनका मानना होता है कि श्रीराम परिसर सिर्फ सिंधिया समर्थक भाजपाइयों के लिए है।

तुलसीराम सिलावट (सांवेर): यहां अच्छा तालमेल, राजनीतिक विरोधी एक जाजम पर

प्रदेश सरकार में जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट का राजनीतिक गढ़ शुरुआत से ही सांवेर रहा है। कांग्रेस से भाजपा में आने के बाद सिलावट के कद व सम्मान में अंतर नहीं आया। इंदौर में 2 नंबर विधानसभा के वरिष्ठ नेता कैलाश विजयवर्गीय व रमेश मेंदोला के क्षेत्र में भी सिंधिया का ऐतिहासिक स्वागत हुआ था। असर 2020 के उप चुनाव में देखा गया। सिलावट यहां से चुनाव लड़े, तो रमेश मेंदोला रणनीतिकार थे। नतीजा, सिलावट 54 हजार वोटों से जीते। इसके पहले सिलावट जब कांग्रेस में थे, तो विजयवर्गीय व मेंदाला से उनके व्यक्तिगत संबंध अच्छे ही रहे हैं। जहां तक सत्ता व संगठन का सवाल है, भाजपा में आने के बाद दोनों में पार्टी नेताओं से अच्छे ताल्लुकात रहे।

रघुराज कंसाना (मुरैना) : उपचुनाव में हारे तो भितरघात के आरोप लगाए, कार्यकर्ताओं में लड़ाई

चंबल की मुरैना विधानसभा में कांग्रेस को 25 साल बाद जीत मिली। साल 2018 में रघुराज कंसाना कांग्रेस के टिकट पर विधायक बने। सिंधिया के साथ बीजेपी में शामिल होने के बाद रघुराज भाजपा के टिकट पर उपचुनाव लड़े, लेकिन कांग्रेस के राकेश मावई से हार गए। रघुराज ने बीजेपी नेताओं पर भितरघात के आरोप लगाए थे। उन्होंने कहा था- मेरे लिए भाजपा कार्यकर्ताओं ने जी-तोड़ मेहनत की है लेकिन सेकंड लाइन के भाजपा नेताओं ने उपचुनाव में मेरा खुलकर विरोध किया है। मैंने 15 से 20 भाजपा नेताओं की सूची बनाकर प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा को सौंपी है।

इस साल होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए रघुराज फिर से दावेदारी कर रहे हैं, लेकिन पार्टी के अंदर उनका विरोध हो रहा है। बीजेपी के कद्दावर नेता और पूर्व मंत्री रुस्तम सिंह भी मुरैना से चुनाव लड़ने की तैयारी में हैं।

पिछले साल मई महीने में मुरैना में बीजेपी कार्यकर्ताओं और सिंधिया समर्थकों के बीच विवाद सामने आया था। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा और केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर मुरैना दौरे पर थे। इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष योगेश पाल गुप्ता और सिंधिया समर्थक हरिओम शर्मा के बीच विवाद हो गया। दोनों के बीच धक्का-मुक्की तक हुई थी।

ऐदल सिंह कंसाना (सुमावली) : राजनीतिक स्टाइल पसंद नहीं

मुरैना जिले की सुमावली विधानसभा सीट से 1993 में बसपा से पहली बार विधायक बने। अब तक 4 बार विधानसभा सदस्य रह चुके हैं। साल 2008 और 2018 के चुनाव में वे कांग्रेस के टिकट पर विधायक बने। ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ मार्च 2020 में बीजेपी जॉइन कर ली। मंत्री बने। उपचुनाव में बीजेपी के टिकट पर चुनाव लड़े, लेकिन कांग्रेस के अजब सिंह कुशवाह ने 10,947 वोटों से हरा दिया। कंसाना की राजनीति की अपनी स्टाइल को भाजपा के वरिष्ठ नेता स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं।

बीजेपी में आने के बाद ऐदल सिंह के परिवार पर पुलिस और प्रशासन पर प्रेशर बनाने के आरोप लगते रहे हैं। सुमावली थाना प्रभारी मनोज यादव ने वीडियो जारी कर फर्जी रेप केस में फंसाने की धमकी देने के आरोप लगाए थे। ऐदल सिंह कंसाना के बेटे बंकू कंसाना पर राजस्थान पुलिस के जवानों का अपहरण का केस भी दर्ज हो चुका है।

कमलेश जाटव (अंबाह) : भाजपा के पूर्व विधायक बंशीलाल से मिल रही चुनौती

मुरैना जिले की अंबाह से विधायक कमलेश जाटव मूलतः भाजपाई हैं। सिंधिया की वजह से कांग्रेस में शामिल हुए थे। सिंधिया भाजपा में आए तो वे भी लौट आए। कमलेश 2008 में बीजेपी के टिकट पर विधायक बने थे। 2013 में बसपा प्रत्याशी सत्यप्रकाश सखवार से हार गए थे। इसके बाद कमलेश जाटव ने कांग्रेस जॉइन कर 2018 में चुनाव लड़े। उपचुनाव में कमलेश जाटव ने कांग्रेस प्रत्याशी सत्यप्रकाश सखवार को 13,892 वोटों से हरा दिया। अब भाजपा के पूर्व विधायक बंशीलाल बीजेपी से टिकट की जुगत में हैं।

मुरैना नगर निगम चुनाव में बीजेपी की हार के बाद कमलेश जाटव ने कलेक्टर-एसपी को हार के लिए जिम्मेदार ठहराया। कमलेश ने अफसरों को कांग्रेसी मानसिकता का बताया। मई 2021 में कमलेश जाटव का वीडियो सामने आया। वीडियो में एसडीओपी पर रेत माफिया से पैसे लेकर अवैध परिवहन के आरोप लगा रहे थे।

गिर्राज दंडोतिया (दिमनी) : तोमर समर्थकों से नहीं बैठ रही पटरी

पिछले 45 साल में दिमनी विधानसभा में दो बार ही कांग्रेस जीत दर्ज कर पाई है। 2008 तक यह विधानसभा अनुसूचित जाति (स्ट) के लिए आरक्षित थी। परिसीमन के बाद अनारक्षित हुई, तो नरेंद्र सिंह तोमर के करीबी शिवमंगल सिंह तोमर विधायक बने। 2013 में बसपा उम्मीदवार बलवीर दंडौतिया जीते। 2018 में फिर उलटफेर हुआ। कांग्रेस उम्मीदवार गिर्राज दंडौतिया 18,477 वोटों से जीते। साल भर बाद वे बीजेपी में शामिल हुए। 2020 के उपचुनाव में गिर्राज कांग्रेस उम्मीदवार रवीद्र सिंह तोमर से हार गए।

दिमनी में गिर्राज की पुराने भाजपाइयों से पटरी नहीं बैठ रही। दंडोतिया के सामने शिवमंगल सिंह तोमर टिकट की दावेदारी जता रहे हैं। वहीं, केन्द्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर के बेटे देवेंद्र सिंह तोमर भी तैयारी में जुटे हैं। दिमनी में सिंधिया समर्थक गिर्राज और तोमर समर्थकों के बीच सबकुछ ठीक नहीं चल रहा।

इमरती देवी (डबरा) : ऐसे बयान और काम जो जिससे नरोत्तम पर अटैक

बीजेपी में शामिल होने के बाद इमरती देवी उपचुनाव में डबरा से हार गईं। हार के बाद उन्होंने कहा था इसलिए हारे क्यों बीच में पार्टी बदल ली। हार के बाद उन्हें लघु उद्योग निगम का अध्यक्ष बनाया है। पंचायत और नगरीय निकाय चुनाव में इमरती देवी ने डबरा-भितरवार जनपद, डबरा और पिछोर नगर परिषद में समर्थक प्रत्याशी को अध्यक्ष बनवाकर गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा के साथ शीतयुद्ध को और हवा दे दी।

डबरा में इमरती के सामने 2018 के चुनाव में नरोत्तम के करीबी सुरेश राजे •छ्क्क उम्मीदवार थे। इमरती के पार्टी छोड़ते ही सुरेश राजे ने कांग्रेस जॉइन कर ली। नगरीय निकाय चुनाव के दौरान इमरती की सुरेश राजे से बहस भी हुई थी। इसमें इमरती ने कांग्रेस विधायक पर गृहमंत्री के साथ 10 पार्षदों की खरीद-फरोख्त के आरोप लगाए थे। नरोत्तम के खेमे से राजू खटीक, जबरा नगर पालिका की पूर्व अध्यक्ष आरती मौर्य टिकट की दावेदारी कर रहे हैं। राजू खटीक की पत्नी जिला पंचायत सदस्य हैं। चुनाव हारने के बाद बीजेपी के पुराने कार्यकर्ताओं और इमरती के बीच अक्सर टकराव की स्थिति बन जाती है।

हरदीप सिंह डंग (सुवासरा) : पूर्व विधायक को ही दरकिनार कर दिया

मध्यप्रदेश में तख्तापलट के समय सबसे पहले इस्तीफा देने वालों में मंदसौर के सुवासरा से कांग्रेस विधायक रहे हरदीप सिंह डंग थे। वर्तमान में हरदीप सिंह नवीन एवं नवीनीकरण ऊर्जा मंत्री हैं। कांग्रेस विधायक रहते हुए उन्होंने कई बार कमलनाथ सरकार

पर उपेक्षा के आरोप लगाए। डंग समर्थकों की बात ज्यादा मानी जाने से भाजपा के पुराने कार्यकर्ता नाराज हैं। हरदीप सिंह डंग के सामने चुनाव लड़ चुके बीजेपी के पूर्व विधायक राधेश्याम पाटीदार से भी रिश्ते अच्छे नहीं बन पाए हैं। कई बार सरकार और दूसरे आयोजनों में आमंत्रण पत्र से राधेश्याम पाटीदार का नाम तक हटा दिया। उन्हें मंच पर जगह भी नहीं दी गई। आयोजनों से दरकिनार किया जाने लगा। इस वजह से दोनों के समर्थकों में गुस्सा है।।

बृजेंद्र सिंह यादव (मुंगावली) : जिन्हें हराया वे अब कैसे साथ आएं

अशोकनगर जिले के मुंगावली से विधायक और प्रदेश सरकार में राज्यमंत्री बृजेंद्र सिंह के साथ उनके पुराने समर्थक ही दिखते हैं, जबकि मूल भाजपा कार्यकर्ता अलग राह पर हैं। मुंगावली में 5 साल में दो बार विधानसभा चुनाव हुए हैं। पहले स्वर्गीय देशराज सिंह की पत्नी बाईसाहब यादव बीजेपी के टिकट पर बृजेंद्र सिंह के खिलाफ चुनाव लड़ीं, वह हार गई थीं। दूसरे चुनाव में बृजेंद्र सिंह ने भाजपा के केपी यादव को हराया। उपचुनाव में भाजपा के टिकट पर लड़े और जीते। अब दोनों भाजपा में हैं, लेकिन आज तक एक नहीं हो पाए हैं। ।

जजपाल सिंह जज्जी (अशोकनगर): भाजपा के हारे कोरी ही जज्जी के खिलाफ कोर्ट में

अशोकनगर जिला मुख्यालय पर भाजपा में स्पष्ट रूप से दो गुट सक्रिय हैं। एक खेमा सिंधिया समर्थक, जबकि दूसरा मूल भाजपा का। अब तक जो भाजपा के जिला अध्यक्ष बने हैं, वे सभी एक ग्रुप में हैं, जबकि जज्जी का अलग ही गुट है। 2018 में जज्जी ने भाजपा के लड्डूराम कोरी को हराया था। जज्जी भले ही भाजपा में आ गए लेकिर कोरी अपने हार के गम को नहीं भूला पाए हैं। उन्होंने जज्जी के जाति प्रमाण पत्र को निरस्त कराने के लिए कोर्ट में याचिका दायर की थी, जिससे जज्जी पर संकट खड़ा हो गया था।

मंदिर से लेकर हर जगह जज्जी के लिए मन्नत मांगने के लिए सिंधिया समर्थक ही खड़े दिखाई दिए। हर कार्यक्रम में वे भाजपा की तुलना में सिंधिया की तारीफ ज्यादा करते हैं। कांग्रेसी छोड़कर भाजपा में शामिल हुए कार्यकर्ता अलग ही छवि बनाने के लिए काम करते हैं, जबकि मूल भाजपा कार्यकर्ता अलग दिखाई देते हैं।

सुरेश धाकड़ (पोहरी) : सिंधिया, शिवराज अलावा किसी से मतलब नहीं

शिवपुरी के पोहरी से विधायक सुरेश धाकड़ पीडब्ल्यूडी राज्यमंत्री हैं। वे आज भी भाजपा के सांचे में नहीं ढल पाए हैं। अक्सर बड़े मंचों पर पहुंचते हैं, लेकिन उनकी मौजूदगी सिर्फ नाम मात्र की रहती है। जिला कार्यालय पर भी कई लोग मंत्री से दूर ही रहते हैं। हाल में मंत्री ने क्रिकेट का बड़ा टूर्नामेंट करवाया था। इसमें ज्योतिरादित्य सिंधिया के बेटे महा आर्यमन को बुलाया था। कार्यक्रम में नगर को बैनर पोस्टरों से पाट दिया गया, लेकिन इनसे भाजपा का निशान तक गायब था। कुछ ही जगह सिर्फ शिवराज सिंह चौहान को ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ जगह दी गई थी। सभी बैनरों में ज्योतिरादित्य सिंधिया व उनके बेटे महा आर्यमन सिंधिया के साथ-साथ उनकी दादी राजमाता सिंधिया को जगह दी गई थी।

जसवंत जाटव (करेरा) : हार के बाद भाजपाइयों से बनाई दूरी

शिवपुरी से करैरा के जसवंत जाटव चुनाव हार गए। उन्हें राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम का अध्यक्ष बना दिया गया। करैरा विधानसभा से चुनाव लड़ने के लिए पहले से ही लंबी कतार थी। जसवंत कांग्रेस को छोड़ भाजपा में शामिल हो गए। उपचुनाव में उन्हें वोटरों ने उन्हें नकार दिया। इस विधानसभा से कांग्रेस के प्रत्याशी प्रागीलाल जाटव ने जीत दर्ज की थी। इसके बाद मूल भाजपा कार्यकर्ताओं से उनकी दूरी बढ़ गई। फिलहाल, जसवंत जाटव क्षेत्र में अपने लोगों की मदद से राजनीतिक पकड़ दोबारा मजबूत करने में लगे हैं।

रणवीर जाटव (गोहद): बीजेपी के राष्ट्रीय नेता से टिकट का मुकाबला

भिंड जिले की गोहद विधानसभा में बीजेपी के दो मुख्य दावेदार हैं। इनमें एक पूर्व मंत्री व वर्तमान में बीजेपी एससी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालसिंह आर्य हैं। दूसरे- सिंधिया समर्थक व मध्यप्रदेश हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम अध्यक्ष रणवीर जाटव हैं। दोनों ही नेताओं में लंबे समय से राजनीतिक तलवारें खिंची हुई हैं। विधानसभा स्तर में मंडल के पदाधिकारियों में ज्यादातर समर्थक पूर्व मंत्री लाल सिंह आर्य के हैं। यही कारण है कि जिला स्तर के पार्टी कार्यक्रमों को छोड़ दिया जाए, तो स्थानीय स्तर के पार्टी की बैठकों में रणवीर जाटव की उपस्थिति नहीं के बराबर रहती है।

ओपीएस भदौरिया (मेहगांव) : कांग्रेस से आए कार्यकर्ताओं की भीड़ ही ज्यादा

भिंड की मेहगांव विधानसभा क्षेत्र में भी खींचतान है। मेहगांव से बीजेपी से चुनावी रण में उतरने के प्रबल दावेदार चौधरी मुकेश सिंह, राकेश शुक्ला और केपीएस भदौरिया हैं। स्थानीय स्तर पर ओपीएस भदौरिया के साथ कांग्रेस छोड़ बीजेपी में शामिल होने वाले समर्थक उनके साथ ज्यादा नजर आते हैं।

हालांकि स्थानीय जिला स्तरीय कार्यक्रम में रणवीर जाटव की अपेक्षा ओपीएस की उपस्थिति ज्यादा रहती है। बावजूद बीजेपी के पुराने कार्यकर्ता व नेताओं के बीच गहरी पैठ बनाने में मंत्री भदौरिया कमजोर दिख रहे हैं। मेहगांव से बीजेपी के विधायक रहे चौधरी मुकेश सिंह चतुर्वेदी इसी क्षेत्र से टिकट के लिए लॉबिंग कर रहे हैं। कांग्रेस के पूर्व मंत्री चौधरी राकेश सिंह चतुर्वेदी के छोटे भाई मुकेश चौधरी बीजेपी में प्रदेश उपाध्यक्ष और सागर संभाग के प्रभारी हैं।

मुन्नालाल गोयल (ग्वालियर पूर्व) : संगठन की बजाय सिंधिया ही सबकुछ

ग्वालियर पूर्व के विधायक मुन्नालाल गोयल को उपचुनाव हारने के बाद बीज विकास निगम का अध्यक्ष बनाया गया था। वे भाजपा संगठन की बैठक में कम ही नजर आते हैं, लेकिन सिंधिया के आगमन के समय ही ज्यादा दिखते हैं। ज्यादातर सिंधिया समर्थक गुट के साथ ही दिखते हैं। बड़े मौकों पर ही भाजपा सगंठन व पदाधिकारियों के बीच नजर आते हैं। साल 2018 में मुन्नालाल गोयल ने कांग्रेस में रहते हुए बीजेपी के सतीश सिकरवार को हराया था। मुन्नालाल कांग्रेस छोड़ भाजपा में आ गए। उपचुनाव लड़ा तो सतीश सिकरवार ने भाजपा छोड़ कांग्रेस का दामन थाम लिया। चुनाव में मुन्नालाल गोयल को हराया। अब दोनों में बातचीत एक-दूसरे पर व्यंग्य करते हुए होती है। हाल में मुन्ना ने सत्ता में होने के बाद भी सतीश व उनकी पत्नी महापौर शोभा सिकरवार के खिलाफ धरना प्रदर्शन का ऐलान किया था। मूल भाजपाई व पदाधिकारियों का भी उनके प्रति खास रुख नहीं है। हालांकि, अभी तक ऐसा बयान सामने नहीं आया है।

मनोज चौधरी (हाटपिपलिया) : पूर्व मंत्री जोशी ने खोल रखा है मोर्चा

हाटपिपलिया से पूर्व विधायक रहे दीपक जोशी और मनोज चौधरी के बीच उपचुनाव के समय से ही दूरियां हैं। हाल में हाटपिपलिया विधानसभा क्षेत्र में लैंड पुलिंग योजना के तहत किसानों की जमीन लेने की बात सरकार द्वारा कही गई थी। इसके चलते किसानों ने विरोध प्रदर्शन करते हुए ट्रैक्टर रैली निकाली थी। योजना में 32 गांवों को शामिल किया गया है। इनमें अधिकांश गांव हाटपिपलिया क्षेत्र के हैं। इस योजना के बाद से ही मनोज चौधरी की मुश्किलें बढ़ती नजर आ रही हैं। किसानों का कहना है कि योजना को अगर क्षेत्र में लागू किया जाएगा, तो सरकार को परिणाम भुगतना पड़ेंगे। किसानों ने योजना को लेकर आगामी दिनों में आंदोलन की चेतावनी दी है। किसान विधायक से नाराज हैं। बीजेपी के पूर्व सीएम कैलाश जोशी के बेटे दीपक जोशी भी इसी सीट से विधायक और मंत्री रहे हैं।

महेंद्र सिंह सिसोदिया (बमोरी) : आसपास सिंधिया समर्थक ही दिखते हैं

गुना जिले की बमोरी विधानसभा से विधायक और पंचायत मंत्री हैं। फिलहाल स्थानीय नेताओं से महेंद्र सिंह सिसोदिया का सामंजस्य ठीक है। वह संगठन की बैठकों में भी जा रहे हैं। संगठन के निर्णयों में भी उनकी भूमिका सकारात्मक ही रही है लेकिन पुराने भाजपा नेता और कार्यकर्ता उन्हें स्वीकार नहीं कर पाए हैं। उसके आस-पास ज्यादातर सिंधिया समर्थक और उनके पुराने साथी ही रहते हैं। उनके इलाके में निर्माण कार्य अधिकतर उनके पुराने साथियों को ही मिले हैं।

बिसाहू लाल सिंह (अनूपपुर) : पूर्व विधायक रामलाल विरोध कर चुक हैं

अनूपपुर में भाजपा दो गुटों में बंटी है। भाजपा के पूर्व विधायक रामलाल और प्रदेश सरकार में खाद्य मंत्री बिसाहूलाल। हर मंच पर दोनों के बीच टकराव दिखता है। बिसाहूलाल सिंह के किसी भी कार्यक्रम में रामलाल के पोस्टर- बैनर से गायब ही रहते हैं। जब बिसाहूलाल सिंह ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की थी, तो उनके पहले कार्यक्रम में रामलाल का नाम पोस्टर व बैनर से गायब था। पूर्व विधायक रामलाल भी अपने ही सरकार के खिलाफ कई बार मोर्चा खोल चुके हैं। ओवरब्रिज निर्माण ना होने के कारण वे सरकार के खिलाफ अनशन पर बैठे थे। वहीं, बिसाहूलाल सिंह के भाजपा में आने के बाद पुराने कार्यकर्ताओं में नाराजगी है।

राजवर्धन सिंह दत्तीगांव (बदनावर) : जिलाध्यक्ष से तालमेल ठीक नहीं

बदनावर से विधायक और प्रदेश सरकार में उद्योग मंत्री हैं। इस चुनाव में कांग्रेस छोड़कर कार्यकर्ताओं के साथ भाजपा में आए थे। यहां दत्तीगांव का भाजपा संगठन के नेताओं से तालमेल तो है, लेकिन खबर है कि जिलाध्यक्ष राजीव यादव से पटरी नहीं बैठ रही। गत जिला पंचायत के अध्यक्ष चुनाव में मंत्री अपने समर्थक को जिला पंचायत अध्यक्ष बनाना चाहते थे, किंतु यादव ने सहमति नहीं जताई। ऐसे में दोनों के बीच मनमुटाव हो गया। हालांकि दोनों ने एक-दूसरे खिलाफ सार्वजनिक तौर पर बयान नहीं दिया।

प्रद्युम्न सिंह तोमर (ग्वालियर) : चुनौती जयभान सिंह से

ग्वालियर से विधायक, प्रदेश सरकार में ऊर्जा मंत्री। भाजपा संगठन, जिलाध्यक्ष व पदाधिकारियों से ठीक तालमेल है। संगठन की बैठकों में नजर आते हैं। जिलाध्यक्ष व अन्य पदाधिकारियों से मिलते हैं। बैठकों में मुख्य रूप से डेस्क पर रहते हैं, लेकिन उनके आसपास मूल भाजपाई की अपेक्षा उनके व सिंधिया समर्थक भाजपाई ही नजर आते हैं। साल 2018 में कांग्रेस में रहते हुए तोमर ने भाजपा के जयभान सिंह को हराया था। अब दोनों एक ही दल में हैं, लेकिन कभी बातचीत करते नजर नहीं आते। हालांकि किसी नेता के खिलाफ अभी तक बयान सामने नहीं आया है। मूल व पुराने भाजपाइयों ने उन्हें पूरी तरह स्वीकार नहीं किया।

जोशी मठ की इस तरह की स्थिति रातों रात नहीं बनी

उत्तराखण्ड में आदि शंकराचार्य की तपोभूमि जोशी मठ पर वर्तमान में जिस तरह का संकट मण्डरा रहा है उसकी कल्पना शायद ही किसी ने की हो। साल दर साल प्रकृति के साथ होने वाले खिलवाड़ का ही नतीजा है कि वर्तमान में जोशीमठ में जान के लाले पड़ते नजर आ रहे हैं।

पृथ्वी सहित समूचा ब्रम्हाण्ड कितना पुराना है यह कहना बहुत ही मुश्किल है। अरबों साल से सूर्य, पृथ्वी एवं सौर मण्डल के अन्य ग्रहों सहित ब्रम्हाण्ड का हर ग्रह अपनी निश्चित अवस्था में चलता आ रहा है। सभी के बीच संतुलन बराबर ही बना हुआ है। इन सबमें पृथ्वी पर ही सारे संतुलन दशकों से बिगड़ते नजर आ रहे हैं। बीसवीं सदी में 1950 के बाद विकास का क्रम आरंभ हुआ, पर इस विकास में न जाने कितनी वर्जनाओं को ध्वस्त किया गया है जिसका नतीजा आज सामने आता दिख रहा है।

जोशी मठ जैसे न जाने कितने शहर होंगे जो पर्वत की ढलान पर बसाए गए होंगे। जब इनमें गिने चुने मकान हुआ करते होंगे तब तक तो सब कुछ ठीक ठाक ही रहा होगा, किन्तु पैसा कमाने की अंधी चाह के चलते इन जगहों का जब व्यवसायीकरण होना आरंभ हुआ तब यहां संतुलन बिगड़ता दिखा। यह सब देखकर भी सरकारी नुमाइंदे और हुक्मरानों ने आंखों पर स्वार्थ का चश्मा लगा लिया होगा।

जोशीमठ के बारे में जो जानकारियां सामने आईं हैं उनके अनुसार आठवीं सदी के आदि शंकराचार्य के द्वारा यहां एक पीठ की स्थापना की गई थी। जोशीमठ एक एतिहासिक स्थल है और सनातन धर्म के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण स्थल है, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है। 1870 के आसपास यहां की आबादी महज 455 के करीब थी। कालांतर में यह आबादी 25 हजार के लगभग पहुंच गई।

सत्तर के दशक के आरंभ में 1970 में जोशी मठ में जमीन धसने की अनेक घटनाओं के सामने आने के बाद 1976 में गड़वाल संभाग के तत्कालीन संभागायुक्त एम.सी मिश्रा के नेतृत्व में डेड़ दर्जन लोगों की समिति इसकी जांच के लिए गठित की गई थी। इस समिति के द्वारा दी गई रिपोर्ट में उस वक्त ही साफ तौर पर बता दिया गया था कि जोशीमठ सहित आसपास के क्षेत्र में रिसाव, जमीन धसने की घटनाओं में वृद्धि हो सकती है इसको रोकने लिए इस क्षेत्र में वृक्षारोपण का मशविरा दिया गया था।

इसके अलावा जोशीमठ की पानी की निकासी के लिए मुकम्मल व्यवस्था करने की बात भी कही गई थी, क्योंकि यह समूची बसाहट भुरभरी जगह पर थी। 1976 के बाद 46 सालों में न जाने कितने कलेक्टर, कमिश्नर वहां तैनात रहे होंगे, न जाने कितने कांक्रीट जंगल (भवन आदि) का निर्माण हुआ होगा, पर एम.सी. मिश्रा समिति की रिपोर्ट पर किसी ने ध्यान देना मुनासिब नहीं समझा। साड़े चार दशकों तक यह सब तब होता रहा जबकि यह क्षेत्र सिस्मिक संवेदनशील क्षेत्र क्रमांक 05 में रखा गया है, जिसमें भूकंप और भूस्खलन का खतरा ज्यादा ही रहता है।

जोशीमठ के आसपास का क्षेत्र भगवान बद्रीविशाल के बद्रीनाथ धाम का प्रवेश द्वार भी माना जाता है। इस स्थान से सिख समुदाय के प्रसिद्ध गुरूद्वारे हेमकुण्ड साहेब की यात्रा भी आरंभ होती है। इतना ही नहीं यूनेस्को के द्वारा सहेजी गई विश्व की विरासतों की फेहरिस्त में शुमार फूलों की घाटी का भी इसे प्रवेश द्वारा माना जाता है।

देखा जाए तो जोशी मठ में वर्तमान में जिस तरह से पानी जमीन फाड़कर बाहर निकलता दिख रहा है वह बहुत ही चिंतनीय बात मानी जा सकती है। वैसे भी गुरूत्वाकर्षण के नियम के अनुसार पानी ढलान की ओर बहता है, पर अगर पानी जमीन से निकलकर सतह पर आ रहा है इसका मतलब साफ है कि उन स्थानों पर संतुलन नहीं के बराबर ही रह गया है।

उत्तराखण्ड के जोशीमठ शहर में क्षतिग्रस्त आवासों की तादाद 723 तक पहुंच चुकी है। इसके अलावा अब जोशीमठ से लगभग 82 किलोमीटर दूर चमोली जिले के दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में कर्णप्रयाग और लैण्डोर में भी कुछ मकानों में दरार आने की खबरें आ रही हैं। इतना ही नहीं, अलकनंदा और पिंडर नदी के संगम पर बसे सवाल यही है कि क्या यह सब कुछ रातों रात हुआ है! जाहिर है नहीं, फिर जिन परियोजनाओं को अब आनन फानन रोका गया है, उन परियोजनाओं को स्वीकृति देते वक्त जिम्मेदार लोगों के खिलाफ क्या कार्यवाही की जाएगी। जोशी मठ मे माऊंट व्यू और मलारी होटल आपस में टकराने की स्थिति में आ चुके हैं। चार पांच मंजिला होटल क्या रातों रात खड़े हो गए! इस तरह के निर्माण के लिए स्वीकृति देने वालों के खिलाफ क्या कार्यवाही की जाएगी!

यह बात भी सच है कि जोशी मठ और आसपास के क्षेत्रों में बड़ी तादाद में सैलानी पहुंचते हैं, जिससे क्षेत्र में रोजगार के साधन मुहैया होते हैं, पर क्या रोजगार के साधनों को इस कीमत पर मुहैया कराना उचित है! जब वहां आबादी ही नहीं रहेगी तब वहां कैसा रोजगार रहेगा! आज आवश्यकता इस बात की है कि जोशी मठ जैसे अन्य क्षेत्रों को चिन्हित किया जाए और समय रहते उन क्षेत्रों में आवश्यक उपाय आरंभ कर दिए जाएं अन्यथा पहाड़ी क्षेत्रों, चाहे वे पहाड़ मैदानी इलाकों में हों अथवा पूर्वोत्तर या उत्तर भारत में, हर जगह इस तरह की आपदाओं से कभी न कभी दो चार होना पड़ सकता है।

कांग्रेस, चौतरफ़ा घिरी है, किंतु..!

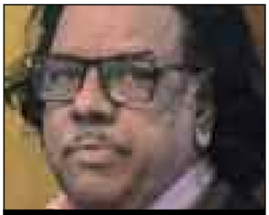

जीएल सोनाने
वरिष्ठ पत्रकार, रिवेरा टाऊन,फेस टू, हाऊस नं0 39 , भोपाल- 462003.
मोबाइल : 9826020299.

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, चौबीस घंटे और तीसों दिन , युध्द के मोर्चे पर रहते हैं। उन्हें आज बोल दो , तो वे कल चुनाव करवा सकते हैं। और इसका सीधा सा कारण हैं , वे भोपाल दौरे पर आते हैं। और अल सुबह दौरे पर निकल जाते हैं। वे , जनता से सीधे बतियाते हैं और , दूसरे ही पल , जनता से जुड़ जाते हैं। यह उनकी रोज़ की दिनचर्या है और इसे उन्होंने, मुख्यमंत्री बनने के दूसरे दिन से जो शुरू किया है - उसे निरंतर जारी रखे हैं। वे सम्भवत:, देश के सबसे ज़्यादा दौरा करने वाले और कम समय में ज़्यादा बतियाने वाले मुख्यमंत्री भी हैं। यह सब , लिखने और बताने के पीछे एक बहुत बड़ा कारण है। क्या , जनता भाजपा शासन से उब गई है ? तो इसका सीधा और सरल जवाब यह है कि , यह सम्भव है कि , जनता भाजपा शासन से उब सकती है। किंतु, शिवराज से नहीं ? किंतु, अब सवाल है कि अगले विधानसभा चुनाव में , क्या भाजपा के लिए चुनाव परिणाम अपने पक्ष में लाना आसान है ? और वह भी, शिवराज के रहते ? दूसरी तरफ़ , शिवराज के बग़ैर यदि भाजपा चुनाव करायेगी , तो शिवराज जो विरासत अपने बाद छोड़ जायेंगे - उसमें कौन सा दूसरा चेहरा अपने आप को 'सहज' महसूस करेगा ? तो , कांग्रेस ने अपने सबसे अनुभवी और गम्भीर नेता कमलनाथ को प्रदेश की ज़िम्मेदारी सौंपी है। कमलनाथ , अपने सबसे विश्वसनीय साथी दिग्विजय सिंह को साधे हैं। 2018 में जब प्रदेश की कांग्रेस की बागडोर कमलनाथ ने सम्भाली थीं , तब पार्टी कई क्षत्रपों में बंटी थीं। कई जनाधार विहीन नेता भी पार्टी में क्षत्रप का रोल कर रहे थे। कहने का तात्पर्य यह है कि तब कांग्रेस कई गुटों में थकी हारी बंटी हुई थीं। ऐसे में कमलनाथ ने पार्टी की अंदरूनी व्यवस्थाओं को संवारा और निराशा में डुबी पार्टी में विश्वास का नये सिरे से संचार किया। कार्यकर्ता और क्षत्रप फिर एक मंच पर आने लगे और फिर कांग्रेस की सरकार बनीं। डेढ़ साल बाद ही पार्टी टूटी और , भाजपा ने फिर सरकार बना लीं। कमलनाथ आज फिर लगातार पार्टी मीटिंगें कर रहे हैं। बिछड़े और असंतुष्टों को साध रहे हैं और पिछली चुक को ध्यान में रखकर, अब सावधानी से कदम बढ़ा रहे हैं। दूसरी ओर , अगले विधानसभा चुनाव को ध्यान में रख कर प्रदेश सरकार शीघ्र ही नई युवा नीति ला रही है। उसकी नज़र प्रदेश की करीब ढाई करोड़ युवा वोटरों पर हैं। सरकार प्रदेश के सवा करोड़ युवा एससी-एसटी वोटरों को व्यवसाय देने के लिये , नई नीति बनाने पर भी काम कर रही है। मुख्यमंत्री ने इसके लिये नीति बनाने के लिए चार मंत्रियों की एक कमेटी भी बना दी है। इस प्रकार से , सरकार अनुसूचित जाति और जनजाति के सवा करोड़ युवाओं को व्यापार और व्यवसाय में फ़ायदा दे कर , बड़ा चुनावी दांव खेलने जा रही है। यह नीति , महाराष्ट्र और गुजरात की तर्ज़ पर होगी। समिति को , रिपोर्ट देने के लिए सिर्फ़ डेढ़ महीने का टाईम दिया गया है। यदि यह नीति लागू होती है , तो एससी-एसटी युवाओं को

जनता भाजपा शासन से उब गई है? तो इसका सीधा और सरल जवाब यह है कि , यह सम्भव है कि , जनता भाजपा शासन से उब सकती है। किंतु, शिवराज से नहीं ? किंतु, अब सवाल है कि अगले विधानसभा चुनाव में , क्या भाजपा के लिए चुनाव परिणाम अपने पक्ष में लाना आसान है ? और वह भी, शिवराज के रहते ?

शासकीय ख़रीदी के , ठेके मिल सकते हैं। और ये ठेके , सालाना दस हज़ार करोड़ रूपये तक के होते हैं। यह तो हुई, एक बानगी। प्रदेश, अब विधानसभा चुनाव के मोड़ पर आ चुका है। भाजपा और कांग्रेस के साथ , तीसरी ताक़त के रूप में इस बार न सपा है न बसपा , तीसरी ताक़त है आप पार्टी। इन सबके साथ, समाज का उच्च वर्ग का भी तबका है , जो हर बार बजट से भी ठगा जाता है और , चुनाव आने पर राजनीतिक दल भी , उनके बारे में कुछ नहीं सोचते हैं। इस बार के विधानसभा चुनाव के मद्देनज़र, हमने इन सब बातों पर बारीकी से विचार किया है - हर पार्टी, एसटी , एससी , ओबीसी के हित के लिए लगातार, कोशिश कर रही है और उसकी , हर आने वाली योजना, इसी समाज के लिए हो रही है। इसलिए, सामान्यतः समाज का उच्च वर्ग, या यों कहें समाज के सवरणों के दिमांग में न चाहते हुए भी , न सिर्फ़ इस समाज के प्रति नाराज़गी है बल्कि इस समाज के युवाओं में काफ़ी खिन्नता आ रही हैं। अतः अगले विधानसभा चुनाव में, सवरण समाज के हित में निम्नलिखित बातों पर विचार किया जा सकता है -

सवर्ण

मिडिल क्लास के वे लोग, जो नियमानुसार इंकमटेक्स तो जमा करते हैं , किंतु बजट से ये ही ज़्यादा निराश भी होते हैं। इसलिए, इनके हितों को ध्यान में रख कर , सरकार एक हाई पावर कमेटी बनाए। इसमें सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, वित्त विभाग के वरिष्ठ अधिकारी,आर्थिक मामलों के विशेषज्ञ और समाज के जागरूक नागरिक सदस्य बनें। यह कमेटी, छह माह में अपनी रिपोर्ट शासन को सौंपें। यह कमेटी, इन पहलुओं पर भी विचार करेगी कि , सरकार के आय के स्त्रोत कैसे बड़े और , मिडिल क्लास के लोगों को टेक्स में कैसे राहत दी जा सकती है ? प्रदेश के मंदिरों के पुजारियों का मानदेय बडाया जायेगा। पुजारी और , अन्य धर्म के पूजा से जुड़े लोगों का , जिनकी सत्तर साल या उससे अधिक की उम्र हो - का निःशुल्क उपचार , शासन द्वारा किया जाये। इसके लिये, ज़िला कलेक्टर द्वारा, स्वास्थ्य कार्ड जारी किये जायें। प्रदेश के वे सभी मंदिर, जिनका संचालन, प्रबंधन एवं व्यवस्थापन सरकार/ प्रशासन के नियंत्रण में हैं , को इस नियंत्रण से मुक्त करने के लिए .क़ानून बनाया जाए। और , पुजारियों,संतों और प्रबुद्ध नागरिकों की एक कमेटी बनाई जाये। ज़रूरी हुआ तो , पुजारी - पुरोहित कल्याण मंडल भी बनाया जाये। सिंधी समाज के लिए भोपाल में एक सांस्कृतिक भवन की स्थापना की जाये। और इसके लिये उन्हें, भवन बनाने के लिए उचित स्थान पर , न्यूनतम दर पर ज़मीन भी आवंटित की जाए। सिंधी समाज के संत ' संत हिरदाराम जी ' के सम्मान में पच्चीस लाख रूपये की सम्मान निधि , प्रति वर्ष सिंधी समाज या सिंधी अकादमी को दी जाये , ताकि वह समाज के आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों के शैक्षणिक विकास में खर्च कर सकें। सिंधी समाज की नागरिकता और आवासीय पट्टों के नियमितीकरण की

अगला विधानसभा चुनाव, युवाओं का चुनाव होगा। क्योंकि, प्रदेश में होने वाले इस साल के चुनाव में 18 से 40 साल के वोटर का दबदबा रहने वाला है। इस चुनाव में इस उम्र के मतदाताओं की संख्या रहने वाली है 2 .75 करोड़। जो कि कुल मतदाताओं की संख्या के क़रीब पचास फ़ीसदी है।

कार्यवाही को प्राथमिकता के साथ निपटाया जाएगा। बोहरा समाज को , उनकी सांस्कृतिक धरोहर को संजोने, संवारने के लिये, सरकार द्वारा न्यूनतम दर पर , सांस्कृतिक भवन बनाने के लिए ज़मीन दी जाये। साथ ही , समाज के गरीब विद्यार्थियों की स्कूल की फ़ीस जमा करने के लिए, प्रति वर्ष दस लाख रूपये का अनुदान भी दिया जाए।

युवा

अगला विधानसभा चुनाव, युवाओं का चुनाव होगा। क्योंकि, प्रदेश में होने वाले इस साल के चुनाव में 18 से 40 साल के वोटर का दबदबा रहने वाला है। इस चुनाव में इस उम्र के मतदाताओं की संख्या रहने वाली है 2 .75 करोड़। जो कि कुल मतदाताओं की संख्या के क़रीब पचास फ़ीसदी है। इसका साफ़ मतलब है कि पार्टियों का एजेंडा, जितना युवाओं पर आधारित होगा , युवा वोटर उतने ही उनके पक्ष में वोट कर सकते हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि अगली सरकार के निर्धारण में , युवा वोटर, निर्णायक ही होंगे। इसलिए, युवा वोटरों के लिये रोज़गार, नौकरी और शिक्षा के क्षेत्र में आकर्षक योजनाओं का होना , बहुत ज़रूरी है। प्रदेश की पच्चीस हज़ार से अधिक उचित मूल्य की दुकानों के आवंटन में , समाज के प्रत्येक वर्ग के शिक्षित बेरोज़गारों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसके लिये ज़रूरी हो कि , आवेदक स्नातक हो , बेरोज़गार हो और प्रदेश के रोज़गार कार्यालयों में उनका जीवित पंजीयन हो। ऐसे शिक्षित बेरोज़गारों के लिये प्रत्येक ज़िले की कुल उचित मूल्य की दुकानों में से दस दस प्रतिशत दुकानें, ऐसे आवेदकों के लिए आरक्षित रखी जायें। प्रदेश के युवाओं को , उनकी रूचि के जाब में जाने के लिए, शासन प्रतिवर्ष ' युवा व्यवसायी महाकुंभ ' का दो दिवसीय आयोजन करे। इसमें , उद्योग, क्रषि , तकनीकी, फ़ल्मि, सिविलसर्विस और उघु उद्योग आदि से संबंधित उद्योगपति, विषय विशेषज्ञ और प्रतिष्ठित लोगों को आमंत्रित कर , उनसे मार्गदर्शन दिलाया जाए। युवाओं को स्वयं का व्यवसाय या रोज़गार स्थापित करने के लिये, 25 लाख तक का ऋण, ब्याज रहित दिया जायेगा। 12 वी बोर्ड की परीक्षा में , नब्बे प्रतिशत और उससे अधिक अंक लाने वाले छात्र / छात्रा को एक लेपटाप दिया जायेगा। इसी परीक्षा में , प्रदेश में सर्वाधिक अंक लाने वाले छात्र/ छात्रा को लेपटाप के साथ ही , वह जिस भी विषय में , ग्रेजुएशन करना चाहता है , उसके कालेज के एडमिशन की फ़ीस शासन जमा करे। युवा शोधकर्ताओं को और आविष्कार कर्ताओं को , पचास लाख रूपये तक का , प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जाये। सन् 2014 से 2023 तक , व्यापम/ कर्मचारी चयन मंडल के द्वारा आयोजित किसी भी प्रकार की लिखित परीक्षा में , चयन से वंचित रह

जाने वाले हर अभ्यार्थियों या आवेदकों को, जो प्रदेश के मूल निवासी होंगे - की आवेदन फ़ीस, वापस की जाना चाहिए। प्रदेश के सभी शासकीय कालेजों में अस्सी प्रतिशत एडमिशन, मध्यप्रदेश के मूल निवासी विद्यार्थियों से ही हों।

अनुसूचित जनजाति

मध्यप्रदेश मंत्री मंडल में अलिराजपुर,झाबुआ और रतलाम ज़िले से ,किसी को भी शामिल नहीं किया है। ऐसी कई घोषणा हैं जो , सीएम ने की हैं , किंतु वे भी पूरी नहीं हुई हैं। जैसे नर्मदा का पानी , पेयजल के लिए झाबुआ, अलिराजपुर और जोबट और पेटलावद सहित अन्य स्थानों पर पहुँचाने की घोषणा, सीएम कई बार कर चुके हैं किंतु, इन घोषणाओं पर अमल आज तक नहीं हुआ है। मंत्री मंडल में स्थान न मिलना तो ठीक , निगम मंडल में भी यहाँ के किसी भी नेता को स्थान नहीं दिया गया है। झाबुआ और अलिराजपुर से एक मात्र भाजपा विधायक श्रीमती सुलोचना रावत को , उपचुनाव में विजय होने पर , मंत्री मंडल में स्थान देने का वचन दिया था। किंतु वह भी पुरा नहीं किया गया है। यही स्थिति धार और रतलाम की भी हैं। विकास और निर्माण कार्यों के यह हाल हैं कि झाबुआ जिले में बेतुल- अहमदाबाद राष्ट्रीय राजमार्ग का काम लम्बे समय से खटाई में पड़ा है। कोई उसकी चर्चा भी नहीं कर रहा है। आये दिन माचलिया घाट पर ,चक्का जाम , लूट पाट होती रहती है और कई दुर्घटनायें भी हुई हैं - किंतु राज्य सरकार के कानों में जूं भी नहीं रेंग रही हैं। आदिवासियों के नाम पर कई योजनाओं को शुरू करने की बात राज्य सरकार करती है , किंतु , क्षेत्र के आदिवासी रोज़गार के लिए आज भी बाहर जाने के लिए मजबूर हैं। इन्दौर- दाहोद रेल्वे लाईन का काम भी , सुस्त गति से चल रहा है। और पिछले दस साल से यह काम भी , स्पीड नहीं पकड़ रहा है। क्षेत्र के रतलाम , सैलाना, रतलाम ग्रामीण, कुक्षी, धरमपुरी,सरदारपुर, गंधवानी ,थांदला , पेटलावद, धार, बदनावर ,अलिराजपुर, झाबुआ और जोबट विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रदेश की भाजपा की सरकार,जितने तामझाम और नौटंकी करके आदिवासियों को रिझाने की कोशिश कर रही है - उसकी सही तस्वीर जनता के सामने और विशेष रूप से आदिवासियों के सामने रखना बहुत ज़रूरी है। मुख्यमंत्री ने अपने मंत्री मंडल में , अलिराजपुर,झाबुआ और रतलाम ज़िले से ,मंत्री मंडल में किसी को भी शामिल नहीं किया है। ऐसी कई घोषणा हैं जो , सीएम ने की हैं , किंतु वे भी पूरी नहीं हुई हैं। जैसे नर्मदा का पानी , पेयजल के लिए झाबुआ, अलिराजपुर और जोबट और पेटलावद सहित अन्य स्थानों पर पहुँचाने की घोषणा, सीएम कई बार कर चुके हैं किंतु, इन घोषणाओं पर अमल आज तक नहीं हुआ है। मंत्री मंडल में स्थान न मिलना तो ठीक , निगम मंडल में भी यहाँ के किसी भी नेता को स्थान नहीं दिया गया है। झाबुआ और अलिराजपुर से एक मात्र भाजपा विधायक श्रीमती सुलोचना रावत को , उपचुनाव में विजय होने पर , मंत्री मंडल में स्थान देने का वचन दिया था। किंतु वह भी पुरा नहीं किया गया है। यही स्थिति धार और रतलाम की भी हैं। विकास और निर्माण कार्यों के यह हाल हैं कि झाबुआ जिले में बेतुल- अहमदाबाद राष्ट्रीय राजमार्ग का काम लम्बे समय से खटाई में पड़ा है। कोई उसकी चर्चा भी नहीं कर रहा है। आये दिन माचलिया घाट पर ,चक्का जाम , लूट पाट होती रहती है और कई दुर्घटनायें भी हुई हैं

इस बार जयस 80 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने का मूड बना रहा है। प्रदेश में आदिवासियों के लिए आरक्षित 47 सीटों के अलावा 33 सीटें ऐसी हैं , जहां आदिवासियों की आबादी 50 हज़ार से एक लाख के बीच हैं। जयस ने , माँझी , मछुआरा, मानकर,धनगर समेत अन्य समकक्ष जातियों को महापंचायतों के ज़रिए , अपने साथ जोड़ने का काम शुरू किया हुआ है।

- किंतु राज्य सरकार के कानों में जूं भी नहीं रेंग रही हैं। आदिवासियों के नाम पर कई योजनाओं को शुरू करने की बात राज्य सरकार करती है , किंतु , क्षेत्र के आदिवासी रोज़गार के लिए आज भी बाहर जाने के लिए मजबूर हैं। इन्दौर- दाहोद रेल्वे लाईन का काम भी , सुस्त गति से चल रहा है। और पिछले दस साल से यह काम भी , स्पीड नहीं पकड़ रहा है। क्षेत्र के रतलाम , सैलाना, रतलाम ग्रामीण, कुक्षी, धरमपुरी,सरदारपुर, गंधवानी ,थांदला , पेटलावद,धार, बदनावर, अलिराजपुर, झाबुआ और जोबट विधानसभा क्षेत्र में भाजपा कार्यकर्ताओं में उपेक्षा के कारण तनाव है। इन क्षेत्रों की 14 में से सिर्फ़ 5 विधानसभा सीटों पर ही भाजपा का क़ब्ज़ा है। दूसरी ओर भाजपा, बूथ लेवल से लेकर ज़िला स्तर तक के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने में लगी हुई हैं। भाजपा की सहयोगी इकाई आरएसएस, वनवासी इकाई और संगठन सभी , आदिवासियों के बीच निरंतर सम्पर्क अभियान चलाये हुये हैं। संघ प्रमुख मोहन भागवत छः बार और दत्तात्रय होसबोले तीन बार क्षेत्र का दौरा कर चुके हैं। संघ के शताब्दी वर्ष के लिये, मध्य क्षेत्र से 200 विस्तारक शीघ्र ही आदिवासी क्षेत्रों में नेटवर्क मज़बूत करने के लिए , पदस्थ किये जा रहे हैं। ये सभी आदिवासी सीटों में , पेसा एक्ट के लाभ भी बतायेंगे।

दलित, ओबीसी और जयस

भाजपा के लिए, दलित एजेंडा एकदम से खासमखास , यूँ ही नहीं हो गया है। इस बार प्रदेश और केन्द्रीय नेतृत्व बहुत सजग है। और भाजपा की नज़र इस वोट बैंक पर टिकी हुई है। पिछले विधानसभा चुनाव में ग्वालियर- चम्बल अंचल की 34 में से 26 सीटों पर कांग्रेस ने जीत प्राप्त की थीं। किंतु उप चुनावों के बाद, सीटों का समीकरण बदल गया था। विंध्य में कांग्रेस ने 6 सीटें जीती थीं और , बुन्देलखण्ड की 26 सीटों में से भाजपा के पास 17 सीटें हैं। किंतु, कांग्रेस की सक्रियता से सावधान हो कर भाजपा, ज़मीनी हक़ीक़त से रूबरू हो रही है। और जयस की , प्रदेश की 80 आदिवासी बहुल सीटों पर नज़र है। और वह दलित- ओबीसी को साथ ले कर , चुनाव की तैयारी में लगी है। असल में , जयस आदिवासियों के बीच काम करने वाला संगठन है। और जयस के कांग्रेस से गठबंधन होने के कारण ही , 2018 में कांग्रेस को दस सामान्य सीट पर भी बढ़त मिली थीं। किंतु इस बार जयस , 80 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने का मूड बना रहा है। प्रदेश में आदिवासियों के लिए आरक्षित 47 सीटों के अलावा 33 सीटें ऐसी हैं , जहां आदिवासियों की आबादी 50 हज़ार से एक लाख के बीच हैं। जयस ने , माँझी , मछुआरा, मानकर,धनगर समेत अन्य समकक्ष जातियों को महापंचायतों के ज़रिए , अपने साथ जोड़ने का काम शुरू किया हुआ है। इनके अलावा पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक अन्य पिछड़ी घुमन्तु जाति ,सेन , लोधी , प्रजापति, नायक , सिरवी पाटीदार, साहू,कुशवाह और , यादव समाज को जयस से जोड़ने का काम तेजी से चल रहा है। इस प्रकार, इन सब को जोड़ कर , जयस बड़ी सियासी ताक़त बनने के मंसूबे पाल रही है। यह भी हो सकता है कि वह , अगले विधानसभा चुनाव में, सीटों के बँटवारे को ले कर , सौदा करें और , जीतने पर , कोई बड़ा राजनीतिक सौदा भी करें ! यहाँ इस बात को ध्यान में रखना होगा कि , पिछले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस से समझौता करके , जयस भाजपा का गणित बिगाड़ चुका है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रख कर , यह भी निश्चित है कि जयस , न सिर्फ़ कांग्रेस बल्कि, भाजपा से भी तालमेल को ले कर अंदरखाने सक्रिय है। जयस को अपनी ताक़त का एहसास है, क्योंकि, निमाड के बड़वानी व खरगौन सहित बुन्देलखण्ड, महाकौशल और विन्ध्य में इस समाज की क़रीब पचास लाख की आबादी है। भोपाल में हुये माँझी समाज के सम्मेलन में माँझी समाज को जनजाति के तहत आरक्षण, रोज़गार, तालाब और रेतबाडी के पट्टे जैसी समस्याओं को ले कर गम्भीर बातें हुई हैं। बैठक में , यह भी निर्णय हुआ है कि ऊपर उल्लिखित जातियों का एक महागठबंधन , जयस के नेतृत्व में अगला विधानसभा चुनाव लड़ेगा। इसप्रकार , जयस का ओबीसी , जनजाति एवं दलित सहित , सबको साध कर अगला विधानसभा चुनाव लड़ना,कांग्रेस के लिये काफ़ी , चुनौती वाला साबित

होने वाला है। क्योंकि, डा अलावा का अतिमहत्वाकांक्षी होना कम ख़तरनाक नहीं है ! और , यदि जयस , स्वतंत्र रूप से विधानसभा चुनाव लड़ी तो ज. ? तो , फिर कई प्रश्न हैं - सामने !! दूसरी ओर , पूर्व सांसद बुध्दसेन पटेल हैं , जो आदिवासी और पिछड़े वर्ग और दलितों का एक मोर्चा बनाना चाहते हैं , जिसमें मुस्लिम समाज को भी शामिल करना चाहते हैं। वैसे यह खबर भी है कि इस सम्मेलन में , सांसद ओवेसी की पार्टी के स्थानीय लोग भी शामिल हुये थे। उधर , सीहोर में ज़िला कांग्रेस अध्यक्ष डा बलवीर तोमर और पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा के मार्गदर्शन में सीहोर आदिवासी कांग्रेस की ज़िला कार्यकारिणी का गठन हुआ है , जिसमें यह निर्णय हुआ है कि ज़िले की चारों विधानसभा सीटों पर आदिवासी कांग्रेस चुनाव लड़ेगी ! ऊपर जिन , घटनाओं का उल्लेख किया गया है , वे सब भ्रमित करने वाली और आने वाले विधानसभा चुनाव में , कांग्रेस के लिये, मुसीबत खड़ी करने वाली ही साबित होना है। क्योंकि, जयस का डबल फेस वाला रोल नज़र आ रहा है।

आप पार्टी

पिछले दस साल में , देश की तमाम राजनीतिक पार्टियों ने ' आप ' पार्टी को ज़रूरत से ज़्यादा , अंडर स्टीमेट किया है। और , उसी का नतीजा है कि यह पार्टी, दस साल में स्थानीय से क्षेत्रीय और फिर व्हाया पंजाब , क्षेत्रीय से राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टी का दर्जा प्राप्त कर चुकी है। और अब तो यह दक्षिण राज्यों में दख़लंदाज़ी देने की तैयारी कर रही है। किंतु , जैसी सपा , बसपा , ओबीसी और अन्य पार्टियों ने सीधे कांग्रेस के वोट बैंक पर डाका डाला है ,उससे भी एक कदम आगे, आप पार्टी ने इन सबसे ज़्यादा नुक़सान कांग्रेस का किया है। गुजरात और पंजाब के चुनाव परिणाम, इसका सीधा सीधा उदाहरण है। मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए, गुजरात के चुनाव परिणाम कांग्रेस के लिये चौंकाने वाले हैं। और वह इसलिए कि , गुजरात कांग्रेस के 37 लाख वोट आप पार्टी को मिले और वह 5 सीटों पर जीतीं और गुजरात की 35 सीटों पर , कांग्रेस को पीछे धकेलते हुए, नम्बर दो पर जा पहुँची। गुजरात चुनाव के तत्काल बाद, आप पार्टी ने भोपाल में एक प्रैस कांफ्रेंस करके बताया था कि प्रदेश केविधानसभा चुनाव में हमारा नारा होगा- स्वास्थ्य, बिजली और शिक्षा करेंगे। मध्यप्रदेश के नगरीय निकाय के चुनाव में आप पार्टी सात प्रतिशत वोट प्राप्त कर चुकी हैं। और , आप पार्टी की तैयारियों और जोश को ध्यान में रख कर सोचें तो उसका वोट प्रतिशत पन्द्रह तक जा सकता है। जिसका सीधा सा परिणाम होगा - कांग्रेस की पचास से पचपन सीटों पर सीधा असर। मतलब बीजेपी का रास्ता, बहुत आसान हो जाना। और , इस चुनाव परिणामों में सीधा तड़का आप पार्टी के साथ जयस और ओविसी का भी होगा। आप पार्टी ने नगरीय निकाय के चुनाव में एक महापौर की सीट जीती हैं और उज्जैन जैसे शहरी क्षेत्र में भाजपा को भी चौंकाया है। साथ ही कुल निगमों में सात प्रतिशत तक वोट ले लिए थे। अब इसमें यानी , आप पार्टी के मामले में भाजपा का रोल चौंकाने वाला है। भाजपा ने गुजरात में कांग्रेस को रोकने के लिए, चुनाव की घोषणा होने के पहले से ही , आप पार्टी को टार्गेट पर रखा और , मीडिया मैनेजमेंट के एक पार्ट के रूप में , आप पार्टी की गतिविधियों और सक्रियता को , प्रायोजित रूप से बढ़ा चढ़ाकर मीडिया के माध्यम से वोटर को परोसा। और , यह बताने की

> कांग्रेस के लिये सत्ता पाने का रास्ता आसान नहीं है। आप पार्टी के अलावा सपा , बसपा , भीम सेना , जयस, ओबीसी ये सब के सब कांग्रेस ही के वोट बैंक पर डाका डालने वाले हैं। भाजपा के वोटर, स्थायी होते हैं। किंतु, कांग्रेस के वोटर और उसके असंतुष्ट, सभी पाला बदलने में एक्सपर्ट हैं। देश की गिनीचुनी राज्य सरकारों के अलावा शेष अधिकांश राज्यों में, कांग्रेस के असंतुष्टों को मिला कर ही, वहाँ भाजपा की सरकार है - फिर भले ही , मध्यप्रदेश ही की सरकार क्यों न हों !इसलिये कांग्रेस को बहुमत से ज़्यादा सीटें जीतनी होगी.

कोशिश की कि , कांग्रेस कहीं मैदान में है नहीं। इस प्रकार, भाजपा ने एक सोची समझी योजना के तहत , आप पार्टी को गुजरात में प्रमोट किया। और , इसी योजना को मध्यप्रदेश में भी लागू करने की योजना है। पिछले विधानसभा चुनाव में कम अंतर से हार जीत वाली सीटों की संख्या 26 थीं , और यहाँ कांग्रेस बहुत कम वोटों से हारी थीं। आप पार्टी का फ़ोकस भी , इन्हीं सीटों पर है। इसके अलावा जिन 40 सीटों पर ज़्यादा फ़ोकस आप पार्टी को करना है , पार्टी ने उसका सर्व भी करा लिया है और , वहाँ पर योजनाबध्द ढंग से काम भी शुरू कर दिया गया है। आप पार्टी ने उन सीटों पर भी सर्व कराया है जहां, पाँच साल बाद भाजपा और या कांग्रेस रिपीट नहीं हो रही है। आप पार्टी, मध्यप्रदेश में तीन फ़ार्मूले पर काम कर रही है और इसमें पहला है- फ़्री स्कीम पर और दूसरा है - अग्रेसिव हिंदुत्व। और तीसरा फ़ार्मूला है - कि कांग्रेस और भाजपा के असंतुष्टों पर नज़र रखी जाये और , ऐसे सभी को आप पार्टी से टिकट देना , जिन्हें ये पार्टियाँ टिकट नहीं दे रही हैं। आप पार्टी ने 2018 में , 208 सीटों पर चुनाव लड़ा था और उसे 2 .54 लाख वोट मिले थे। और ये एक फ़ीसदी से भी कम वोट हैं। किंतु , पिछले पाँच साल में गंगा में बहुत पानी बह गया है। आप पार्टी किसान , मज़दूर और समाज के कमजोर तबके पर अपना ध्यान केन्द्रित किये हुये है। वह मुस्लिमों को भी साधने में लगी हुई है। प्रदेश के ग्राउंड लेवल पर आप पार्टी सक्रिय है और वह उज्जैन सहित छतरपुर,बुरहानपुर , नीमच, ग्वालियर, रीवां और सिंगरोली में अपनी जड़ें जमा चुकी हैं। सिंगरोली में पार्टी का मेयर है। और 6 पार्षद भी हैं। मेयर का नाम है रानी अग्रवाल। रीवा में मेयर चुनाव में पार्टी के उम्मीदवार दीपक सिंह को 8.5 प्रतिशत वोट मिले थे। ग्वालियर मेयर चुनाव में , पार्टी उम्मीदवार रूचिगुप्ता को 45 हज़ार वोट मिले थे। नीमच में भी पार्टी सक्रिय है और यहाँ पार्टी के दो पार्षद भी है। जबकि , बुरहानपुर में एक पार्षद है। निवाडी में दो पार्षद हैं और , छतरपुर में चार पार्षद हैं। चार जनपद सदस्य हैं। तीन ज़िला पंचायत सदस्य हैं। इस प्रकार, आप पार्टी ने मध्यप्रदेश में अपने शुरूआती दौर में ही एक मेयर , 51 पार्षद ,118 सरपंच जीतवा लिए हैं। ग्वालियर दक्षिण, सुवासरा,जबलपुर नारथ,राजनगर , दमोह, ब्यावर, राजपुर , मांधाता और नेपानगर नौ ऐसी विधानसभा सीटें हैं जहाँ कांग्रेस हारती हारती बची है। और उसका जीत का अंतर 121 से 1264 वोट तक रहा था। इसी प्रकार तीन हज़ार से भी कम वोट से गुन्नौर, जोबट,मुंगावली,तराना ,पिछोर और सांवेर जैसी छः सीटें , कांग्रेस ने जीती थीं। इसी तरह तीन से पाँच हज़ार वोटों से साढ़े छः हज़ार वोट से छः सीटों पर कांग्रेस जीती थीं। इन आँकड़ों को बताने के पीछे मक्सद यही है कि इन सब सीटों को आप पार्टी टार्गेट करके चल रही है। इन सब परिस्थितियों ने , आप पार्टी के लिये माहौल उपलब्ध करा दिया है और वोटर भी अब , इस पार्टी को सीरियस रूप से लेने लगा है। आप पार्टी की पुरी योजना, कांग्रेस की कमजोरी , कमजोर सीटों और कांग्रेस के बाग़ियों पर रहेगी। और , उसकी पूरी कोशिश रहेगी , कांग्रेस की इन तमाम कमज़ोरियों का लाभ लेना।

इन सब बातों का लब्बोलुवाब यह है कि , कांग्रेस के लिये सत्ता पाने का रास्ता आसान नहीं है। आप पार्टी के अलावा सपा , बसपा , भीम सेना , जयस, ओबीसी ये सब के सब कांग्रेस ही के वोट बैंक पर डाका डालने वाले हैं। भाजपा के वोटर, स्थायी होते हैं। किंतु, कांग्रेस के वोटर और उसके असंतुष्ट, सभी पाला बदलने में एक्सपर्ट हैं। देश की गिनीचुनी राज्य सरकारों के अलावा शेष अधिकांश राज्यों में , कांग्रेस के असंतुष्टों को मिला कर ही , वहाँ भाजपा की सरकार है - फिर भले ही , मध्यप्रदेश ही की सरकार क्यों न हों !इसलिये कांग्रेस को बहुमत से ज़्यादा सीटें जीतनी होगी और , इसके लिये मेहनत और व्यूह रचना भी मज़बूत करनी होगी। क्योंकि कांग्रेस , चहुँओर अपने ही वोटर पर डाका डालने वाली पार्टियों से घिर गई है। इसलिए, उसे फूंक फूंक कर कदम उठाने की ज़रूरत है ! इन तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद,कांग्रेस कमलनाथ के नेत्रत्व में एकजुट है और नये साल के पहले ही दिन, ' नया साल नई सरकार ' कांग्रेस के इस नारे ने , भाजपा के विश्वास को हिला ज़रूर दिया है।

लोक सभा में हास्य, विनोद, कविता और शायरी

सलिल सरोज
कार्यकारी अधिकारी लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली 9968638267

संसदीय व्यवस्था अन्य तंत्रों की अपेक्षा अधिक सुसभ्य और सुसंस्कृत है क्योंकि इसमें लोग संसद में मिल-बैठ कर बातचीत के द्वारा अपने मतभेदों का हल खोजने का प्रयास करते हैं तथा राजनीतिक शक्ति के लिए सतत संघर्ष भी या तो आम चुनावों के समय मतपेटियों के माध्यम से होता है या फिर संसद के सदनों में वाद-विवाद। संसदीय व्यवस्था का मूलमंत्र यही है कि स्वतंत्र चर्चा हो। हर राष्ट्रीय महत्व के मामले पर खुले आम बहस हो, आलोचना की पूरी छूट हो और विभिन्न मतों में टकराव, सभी पक्षों द्वारा आपसी बातचीत और वाद-विवाद के बाद देश हित में निर्णय लिए जाए।

कई बार लोक सभा में सांसदगण हास्य विनोद, कविता और शेरो-शायरी के जरिए अपनी बात मुखरता से कहते हुए दिखते हैं। हास्य-विनोद से ना केवल माहौल का तनाव कम होता है बल्कि अन्य वक्ताओं की बोलने की इच्छा का भी संवर्धन होता है। एक शेर के जवाब में दूसरा वक्ता भी अपनी बात शेर से कहने की कोशिश करता है और वही क्षण पूरी संसदीय प्रणाली में बहस और वह भी मर्यादा का दायरे में रह कर करने को पुनर्जीवित कर देती है। पंद्रहवीं लोकसभा के दौरान सत्तारूढ़ कांग्रेस और विपक्षी भाजपा के बीच अक्सर वाकयुद्ध होता रहता था लेकिन उसी दौरान सुषमा स्वराज और तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के बीच हुई शेरो-शायरी अब भी लोग याद करते हैं। सुषमा स्वराज उस समय नेता प्रतिपक्ष थीं और कई यादगार उदाहरण हैं जिनमें दोनों नेताओं ने शेरो-शायरी के जरिए एक दूसरे पर निशाना साधा। पंद्रहवीं लोकसभा में ही एक बहस के दौरान सिंह ने भाजपा पर निशाना साधते हुए मिर्जा गालिब का मशहूर शेर पड़ा, 'हम को उनसे वफा की है उम्मीद, जो नहीं जानते वफा क्या है। इसके जवाब में सुषमा स्वराज ने कहा कि अगर शेर का जवाब दूसरे शेर से नहीं दिया जाए तो ऋण बाकी रह जाएगा। इसके बाद उन्होंने बशीर बद्र की मशहूर रचना पढ़ी, 'कुछ तो मजबूरियां रही होंगी, यूं ही कोई बेवफा नहीं होता। गैर-सरकारी सदस्यों के संकल्प पर चर्चा में भाग लेते हुए केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना के माध्यम से नहरों के निर्माण के संबंध में बुंदेलखंड क्षेत्र में पानी की कमी और आवारा गायों की समस्या को दूर करने के सम्बन्ध में दिनांक 21.06.2019 को श्री निशिकांत दुबे ने कवि बशीर बद्र की शेर पड़ी, अगर फुससत मिले, पानी की तहरीरों को पड़ लेना, हर एक दरिया हमारे सालों का अकसाना लिखता है।

देश में कानून बनाने की सर्वोच्च संस्था संसद में गर्मागर्म राजनीतिक बहस के बीच कविताओं, छंदों, संस्कृत के श्लोकों, चुटकियों और शेरो-शायरी का दौर भी चलता रहता है। सदन का माहौल हल्का हो जाता है और सांसदों के ठहाके व तालियां गूंजती हैं।

सिर्फ लोक सभा ही नहीं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी अपनी गंभीर छवि के उलट हास्य प्रेमी और हाजिरजवाबी के भी महान उदाहरण हैं। महात्मा गांधी की छवि आम तौर पर एक धीर-गंभीर विचारक, आध्यात्मिक महापुरुष और एक कड़क अनुशासन प्रिय राजनेता की रही है लेकिन उनकी विनोदप्रियता और हाज़िरजवाबी का भी कोई जवाब नहीं था। अपने हास्य और व्यंग्य से वे बड़े-बड़े लोगों को लाजवाब कर देते थे। वह खुलकर हंसते थे और हंसते वक्त ही पता चलता था कि उनके कई दांत उम्र के साथ ग़ायब हो चुके हैं। जवाहरलाल नेहरू ने अपनी आत्मकथा में लिखा है- जिसने महात्माजी की हास्य मुद्रा नहीं देखी, वह बेहद कीमती चीज़ देखने से वंचित रह गया है। सरोजनी नायडू तो महात्मा गांधी को प्यार से मिकी माउस बुलाती थीं। गांधीजी भी अपने पत्रों में उनके लिए डियर बुलबुल, डियर मीराबाई तो यहां तक कि कभी-कभी मज़ाक में अम्माजान और मदर भी लिखते थे। गांधी ने कहा, जिन विषम और विकट परिस्थितियों में मैं काम करता हूँ, अगर मुझ में इतना अधिक सेन्स ऑफ ह्यूमर ना होता, तो मैं अब तक पागल हो गया होता। लंदन में गांधीजी की मुलाकात एक रिटायर्ड ब्रिटिश फौजी से हुई। वह उनका ऑटोग्राफ चाहता था। चलते वक्त गांधी जी ने उससे पूछा आपके कितने बच्चे हैं? फौजी ने कहा आठ, चार लड़के और चार लड़कियां। गांधीजी हंसे और बोले मेरे बस चार लड़के हैं इसलिए मैं आपके साथ आधे रास्ते तो दौड़ ही सकता हूं। ये सुनकर सब हंसने लगे।

देश में कानून बनाने की सर्वोच्च संस्था संसद में गर्मागर्म राजनीतिक बहस के बीच कविताओं, छंदों, संस्कृत के श्लोकों, चुटकियों और शेरो-शायरी का दौर भी चलता रहता है। सदन का माहौल हल्का हो जाता है और सांसदों के ठहाके व तालियां गूंजती हैं। संस्कृत के श्लोक जहां ऋग्वेद एवं गीता से लेकर अन्य शास्त्रों से लिए जाते हैं, वहीं बशीर बद्र, राहत इंदौरी एवं वसीम बरेलवी की शेरो-शायरी, रवींद्रनाथ टैगोर, रामधारी सिंह दिनकर की कविताएं और गोस्वामी तुलसीदास एवं अमीर खुसरो के दोहे पर सदन में मौजूद सदस्य खूब तालियां बजाते देखे जाते हैं।

सुनीता यादव आनंदी
भोपाल

प्रेम बिन सब शून्य... एक अनोखी प्रेम दास्तां

प्रेम पंछी तो ऐसे उड़ते है जैसे उन्हें धरती से कोई सरोकार न हो ,अपनी ही धुन में मस्त उनकी अलग ही दुनिया होती है जियो और जीने दो आजाद, दो दिलों का संगम बात बड़ी पुरानी है लेकिन यादें आज भी तरोताजा है, शारदा बहुत ही साधारण परिवार से थी ,उसके पिता इंटर कॉलेज में ड्राइंग टीचर रहे ,वक्त निकाल कर घर में भी क्लास लिया करते थे ,शारदा उनकी बड़ी बेटी बला की खूबसूरत जो देखे एकटक देखता ही रह जाएं, साक्षात दुर्गा का रूप कहते है न ,एक न एक कमी सभी में होती है पर शारदा में कोई कमी नहीं हर अंग उसका जैसे सांचे में ढला हो सुडौल रंग भी गोरा हाथ भी लगे तो मैली हो जाए, चमकती बड़ी,बड़ी आंखे जो देखे दीवाना हो जाएं ,और ऐसा ही हुआ ,शारदा भी अपने पिता की ड्राइंग क्लास में बैठती ,ड्राइंग सीखती इसी बीच समीर शर्मा से उसकी दोस्ती हुई, वो भी ड्राइंग सीखने आता था ,सबकी निगाह शारदा पर शारदा की निगाह केवल समीर पर उनकी दोस्ती प्रेम में परिवर्तित हुई ,दोनों छुपते -छुपाते इधर -उधर मिलते, दोनों की खुशी आसमान छू रही थी,समय के साथ रिश्ता भी प्रगाढ़ हुआ, शारदा अपने पिता की लाड़ली थी ,हर बात पिता से सांझा करती, एक दिन उसने अपने पिता को समीर और अपने रिश्ते के बारे में बताया, उसके पिता समीर के परिवार को बखूबी जानते थे सो उनको कोई एतराज़ न हुआ। उन्होंने सहमति जताई , इस खुशी से शारदा को मानों पंख लग गए हो बेहद खुश थी, सब कुछ उसके मन मुताबिक़ हुआ दोनों परिवार कुछ रस्म-रिवाजों के साथ एक हुए, समीर और शारदा की सगाई हो गई। विवाह छः महीने उपरांत होना तय हुआ ,समीर भी अपने परिवार का इकलौता लड़का कोई कमी नहीं दोनों परिवार बहुत खुश थे, एक दिन शारदा के पिता ने बताया उनके मित्र परिवार सहित एक सप्ताह को लखनऊ घूमने आ रहे है, घर में सभी तैयारियां हो गई ,वो अपने बेटे रोहित के साथ आ गए ,रोहित पेशे से इंजीनियर देखने में स्मार्ट तेज़तर्राक प्रभावित करने वाला उसका व्यतित्व मनमोहक सी मुस्कान हम उम्र होने के कारण शारदा और रोहित जल्दी ही घुल मिल गए सारी लखनऊ घूमे, जाते जाते रोहित ने शारदा को मौका पाते ही प्रेम इज़्हार कर दिया। यह सुन शारदा मुस्कुराई कही न कही शारदा प्रभावित हो रही थी,फिर भी उसने समीर के बारे में सब कुछ बताया यह रोहित ने अनसुनी करते हुए कहा - इंतजार करूंगा समीर के जाने के बाद शारदा उस रात सो न सकी उसकी सोच बदल गई ,वो अब रोहित से विवाह करना चाहती थी। इंकार करते करते आखिर घर वाले मान गए ,चार बेटों में इकलौती बेटी शारदा का चट मंगनी पट विवाह हुआ ,समीर के परिवार से कोई भी न आया लाज़मी था आता भी क्यों?समीर भीतर से टूट गया इतना टूटा की वो होश गवां बैठा ,आज तक होश न आया बदहवास उन्हीं गलियों में घूमता रहता जहां उसकी मोहब्बत जवान हुई थी। उससे सारी खुशियां रूठ गई ,उसके माता -पिता भी टूट गए। समीर का पूरा परिवार शारदा से बेहद प्रेम करने लगा था इसी कारण सभी बेहद दुखी थे,समीर हमेशा के लिए खुद में गुम गया,मानसिक विक्षिप्त हो गया।समीर देखने में साधारण सा ही लगता सीधा -साधा अपने परिवार का इकलौता लाल उसको क्या पता था निर्दोष मोहब्बत को भी सजा मिलेगी,आज भी मानसिक विक्षिप्त उमर तकरीबन पैसठ बर्ष होगी, हां तो अब शारदा के विवाह के उपरांत की जिंदगी के कुछ अंश का चर्चा करती हूं विवाह के कुछ ही महीने साल शारदा खुश रही उसकी खुशी को भी उसके ही गुनाह की नज़र लग गई ,कहते है न ईश्वर के घर में देर है अंधेर नहीं ये कहावत सोलह आना सच हुई,शारदा ने विवाह के पश्चात मुड़ कर नहीं देखा, क्या छूटा क्या टूटा ?अपने विवाहित ज़िंदगी में तल्लीन रही ,फिर वो दो बेटियों की मां बनी उसकी बड़ी बेटी औसत बुद्धि की रही वो अपना जिंदगी को कोई खास मोड़ न दे सकी, दूसरी बेटी के सर पर कुदरतन बाल नहीं आएं, इसी कारण वो भी कुंठित रही खुद से ,दोनों बच्चों के मानसिक तनाव शारदा अकेले ही झेल रही थी। रोहित अपने ऑफिस और यार दोस्तों के साथ ही खुश रहता, उसको दोनों बच्चों से कोई विशेष लगाव न था,इसलिए उसने दोनों बच्चों का विवाह जल्दी ही कर दिया ,विवाह के बाद दोनों बच्चियों का जीवन अंधकारमय और गरीबी जो आज दौर में सबसे बड़ा अभिशाप वो प्रताड़ित जीवन जी रही है ,शारदा की सूनी सी आंखे अब कोई चमक न रही , सौंदर्य भी समय से पहले खो गया,उसको अपना किया हुआ गुनाह याद आया , पिता का साया भी उसके सर से उठ चुका था ,उसने देर से सही पर एक फैसला लिया वो मां के साथ समीर के घर जाएगी, अपनी मां के साथ समीर के घर की ओर चल दी ,जाकर देखती है समीर एक कौने में बैठा खुद से ही बातें कर रहा है ,शारदा को देखते ही घर के भीतर भागा वो अंजान चेहरों को देखकर भागता था, फोबिया से भी पीड़ित था उसके पिता बाहर निकले शारदा को देखकर भौचक्के रह गए ,शारदा उनके पैरों में गिर गई, जी भर रोई माफ़ी मांगी और भीतर की ओर बढ़ी देखकर समीर दुबक कर कौने में जा बैठा ।समीर को दुलार किया फुट-फूट रो पड़ी ,पर इन सब बातों से समीर कही दूर जा चुका था, शारदा देखना तो दूर की बात वो कौने में डर से सुकड़ रहा था ,शारदा कुछ न कर सकी आज उसकी बची -खुची दुनिया भी समीर को देखकर समाप्त हुई ,खुद को माफ़ न कर सकी ,आज भी बोझिल जिंदगी का भार उठा रही है , खुद को माफ़ नहीं कर सकी ,चली थी वो सुख को पकड़ जीवन को चुनने,अपने स्वार्थ के लिए, किसी के साथ फरेब करके सुख तो कुछ ही समय का मिलता है खामियाजा तो भुगतना ही पड़ता है , हर एक उस आह का जो किसी के हृदय की वेदना बन जाती है सदा के लिए ,प्रेम बिन सब शून्य इसका अर्थ शारदा तब समझ आया, जब उसका जीवन से प्रेम शून्य हो गया !

तानसेन समारोह 2022

हर सुर यहाँ इबादत के फूल सा महकता है

विनय उपाध्याय
साहित्यकार, लेखक, चिंतक, उद्घोषक

तमाम फ़ासलों और संकीर्णताओं को तौबा कर सात सुरों का परचम लिए सैकड़ों फ़नकार मियाँ तानसेन का एहतराम कर रहे थे। सच्चे सुरों की कसौटी भी यही है कि वे आत्मा के आसन पर देवता की तरह बिराजें। तानसेन समारोह इस सच की गवाही देता है।

वक़्त को अलविदा कहते साल 2022 का ये आख़िरी महीना। साँझ का सुरीला मुहूर्त। गोधुली के मंगल में मारू विहाग के कोमल स्वर घुल गये थे और बेग़म परवीन सुल्ताना के कंठ से झरता गान जैसे इबादत का पाकीज़ा अहसास बनकर श्रोताओं की रूह में उतर आया था। मोहम्मद गौस का मक़बरा एक बार फिर मौसिक़ी की गमकदार तानों से गूँज रहा था। बेग़म की बेमिसाल गायकी के सम्मोहन में डूबी इस महफ़िल पर हर कोई निहाल था। मुमकिन है कि मियाँ तानसेन आसमान की किसी कोर पर आसन जमाए इस नज़ारे पर अपना आशीष लुटा रहे होंगे।

चंबल की सरहदों में बसे ग्वालियर की सरजमीं पर अब हर बरस ऐसे ही सुरीले मौसम उतरते हैं। इन आहटों को तानसेन संगीत समारोह के नाम से दुनिया पहचानने लगी है। बस, दो बरस बीतेंगे और यह जलसा सौवीं पायदान तय कर लेगा। लेकिन 98वीं बरसी का यह उत्सव अपनी तमाम रंगतों में शताब्दी के मुहाने की मुस्कुराहट लिए सुर-साज़ और आवाज़ों का दिलकश कारवाँ लिए पेश आया। 18 से 23 दिसंबर की दरमियानी महफ़िलों में जैसे सारे जहाँ के सुर तानसेन की इस तपोभूमि में सिमट आये। यक़ीनन यह विश्व संगीत समागम था। हिन्दुस्तानी संगीत की मुख्तलिफ़ शैलियों और परंपराओं में परवरिश पाने वाले गायन-वादन से लेकर यू.एस., इज़राइल और अर्जेन्टीना जैसे मुल्कों में गाये-बजाने वाले संगीत की प्रस्तुतियों का मंच सजा था। तमाम फ़ासलों और संकीर्णताओं को तौबा कर सात सुरों का परचम लिए सैकड़ों फ़नकार मियाँ तानसेन का एहतराम कर रहे थे। सच्चे सुरों की कसौटी भी यही है कि वे आत्मा के आसन पर देवता की तरह बिराजें। तानसेन समारोह इस सच की गवाही देता है। यह भी कि संगीत किसी भी फिरक़ापरस्ती को नहीं जानता। वो तो बस, मनुष्यता की महक बनकर हर रूह में उतर जाता है। इसी शपथ के आसपास नित्यानंद हल्दीपुर और संतोष संत की मुरली का नाद गूँजा, प्रवीण शेवलीकर और अनुप्रिया देवताले की वायोलिन से रागदारी का रोमांच बिखरा, ब्रजभूषण गोस्वामी और धानी गुंदेचा की ध्रुपद की तानों का तिलिस्म जागा, विदुषी पंडित व्यंकटेश कुमार, विदुषी अश्विनी भिड़े देशपाण्डे और जयतीर्थ मेवुंडी की ख़याल गायिकी में परंपरा की बंदिशों का आसमान खुला। पंडित डालचंद्र शर्मा की पखावज पर ताल के छंदों का लालित्य बिखरा।

युवा संगीतकारों की फ़ेहरिस्त में अनुजा झोकरकर, रीता देव, उमेश कंपूवाले, विनोद मिश्रा, विवेक नवले जैसी प्रतिभाएँ भी जुड़ीं जो विरासत के सच्चे उत्तराधिकार की उम्मीद बनकर उभरे हैं। ग़ौर करने का पहलू ये है कि हमारी समकालीनता का शास्त्रबद्ध संगीत इस मंच पर अपनी बहुलता का विन्यास लिए प्रकट होता है। यह यक़ीन पुख़्ता होता है कि बेजान और अर्थहीन तथा लगभग शोर भरे बीहड़ में अब भी भाव-रस की मधुरता को बचा लेने का सुरीला संकल्प बाक़ी है। मुंबई से लेकर धारवाड़ और दिल्ली से लेकर भोपाल तक तीन पीढ़ियों के सौ भी ज़्यादा संगीतकारों की आमद सुखद विस्मय से भर देती है।

मध्यप्रदेश के संस्कृति महकमे की पहल पर नगर निगम ग्वालियर तथा स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से यह समारोह हर वर्ष की तरह उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादेमी संयोजित करती रही है। एक आंतरिक अनुशासन में बिंधा है यह भव्य उपक्रम। संगीत से जुड़े अनेक नए आयामों और गतिविधियों ने इस समारोह को प्रस्तुति, संवाद तथा आस्वाद और रसिकता की दृष्टि से एक आदर्श और गरिमामय आयोजन के रूप में स्थापित किया। तानसेन समारोह की पूर्व संध्या गमक की सभा को आयोजित करने की परिकल्पना भी इसी नवाचार और विस्तार का प्रतीक है। मंशा यही कि तानसेन की मज़ार पर जब मौसिक़ी का जलसा शुरू हो तो इस महफ़िल से उठी आवाज़ भी प्रार्थना का एक पवित्र स्वर बनकर उभरे। इस बार गायक हंसराज हंस के नाम यह हाज़िरी थी।

परिकल्पना, संयोजन और विस्तार की दिशाएँ कुछ इस तरह खुलती रहीं कि यहाँ सभा-पांडाल से अलग वादी-संवादी की बैठक में संगीत मनीषी पंडित किरण देशपाण्डे और ग्वालियर घराने की मेधावी गायिका शाश्वती मंडल ने साहित्य, संगीत, रियाज़ और प्रदर्शन को लेकर संगीत के विद्यार्थियों से संभाषण किया। एक परकोटा गीत गोविन्द पर एकाग्र रागमाला के चित्रों से अटा था तो दूसरी ओर ललित कला प्रदर्शनी में रंग संभावना के फ़लक तानसेन के संगीत समय को रच रहे थे। अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादेमी के निदेशक संगीत के गहरे अनुरागी जयंत भिसे इन सबके बीच सौहार्द की सुगंध बिखेरते इस सौभाग्य से भरे थे कि उन्हें एक ऐतिहासिक समारोह की खिदमत का अवसर मिल सका। अकादेमी के उपनिदेशक राहुल रस्तोगी इस समारोह की एक सदी के उत्सव की कल्पना में डूबे दिखाई दिये। हालांकि 98वीं कड़ी में गतिविधियों का फैलाव ग्वालियर और आसपास के इलाक़ों तक हुआ है। तानसेन की जन्मभूमि बेहट सहित शिवपुरी, दतिया और पड़ावली गाँव के निकट बटेश्वर मंदिर प्रांगण में भी संगीत की सभाएँ हुईं। सुखद विस्मय होता है कि 1924 में सिंधियावंश के तत्कालीन महाराजा की पहल पर तानसेन की समाधि पर एक छोटे से उर्स की शक्ल में शुरू हुई गतिविधि आज दुनिया के सबसे बड़े संगीत समागम का स्वरूप ले चुकी है।

इस समारोह के साथ महत्वपूर्ण पहलू जुड़ा तानसेन सम्मान का। 1980 में इस राष्ट्रीय सम्मान की स्थापना हुई। तब पाँच हज़ार की मानद राशि तय हुई। वर्तमान में यह निधि दो लाख रूपए कर दी गयी है। वर्ष 2022 का सम्मान प्रख्यात बाँसुरी वादक पंडित नित्यानंद हल्दीपुर को प्रदान किया गया, जो विदुषी अन्नपूर्णा देवी के प्रिय शिष्य रहे। संगीत सेवी संस्था सामवेद सोसाईटी फॉर परफार्मिंग आर्ट मुंबई को राजा मानसिंह तोमर सम्मान दिया गया। संचालक संस्कृति अदिती त्रिपाठी ने नित्यानंद के जीवन और सृजन का प्रशस्ति वाचन किया।

नौ दशक से भी ज़्यादा बीत गए। इस बीच देश-दुनिया में बहुत कुछ बदला लेकिन ग्वालियर के हज़ीरा इलाके स्थित तानसेन की समाधि पर सुरों की इबादत का यह सिलसिला बदस्तूर जारी रहा। कुछ ऐसा रूहानी असर कि मौसिक़ी से ताल्लुक रखने वाले दुनिया के तमाम फ़नकार इस देहरी पर आकर अपने महान पुरखे की याद में सिर झुकाना चाहते हैं।

समारोह में नवाचार के नाम पर विविध गतिविधियों के जो आयाम जुड़े उसमें वादी-संवादी के साथ विवादी स्वर भी उठते रहे। कलाकारों का एक धड़ा गमक और विदेशी संगीतकारों की प्रस्तुतियों को समारोह की शास्त्रीय शुद्धता पर ग्रहण की तरह अनुचित मानता हैं। आयोजकों की दलील है कि समारोह को संगीत की समग्रता में रचते हुए ये प्रयोग लोक रूचि और उनके परामर्श को दृष्टिगत रखते हुए किये गये।

ग्वालियर का अपना एक सुदीर्घ राजनैतिक-सामाजिक इतिहास रहा है। लेकिन अतीत के पन्नों पर संस्कृति की सुनहरी इबारत पढ़ते हुए किंवदंति पुरूष संगीत सम्राट तानसेन की याद सहसा हमारे जेहन में कौंधती है। कुशल गायक, संगीतकार, कला-मर्मज्ञ और कवि के रूप में तो उनकी ख्याति थी ही लेकिन संगीत के प्रति अगाध प्रेम ने उनके व्यक्तित्व को कुछ ऐसा गढ़ा कि ग्वालियर की सरज़मीं को उन्होंने संगीत का तीर्थ बना दिया। दुनिया उन्हें अकबर के नौ रत्नों में शुमार गायक के तौर पर भी पहचानती है। उन्हीं के काल में ध्रुपद और ख्याल गायन का चरम विकास हुआ। ग्वालियर को उन्होंने संगीत ने एक ऐसे गढ़ के रूप में लोकप्रियता प्रदान की कि अनेक गुणी गायक-वादकों ने ग्वालियर को अपनी साधना-भूमि बना लिया। मान मंदिर, गूजरी महल और सहस्त्रबाहु मंदिर का खुला परिसर जानें कितनी सभाओं का साक्षी रहा है। राजा मानसिंह तोमर ने अपने समय में भारत के अनेक संगीतकारों को आमंत्रित कर एक संगीत परिषद आयोजित की थी। उस दौरान हुए विचार-विमर्श को बाद में मान कुतूहल ग्रंथ में संग्रहित किया गया था।

जन्म से हिंदू रीति-रिवाज़ों में पले-बढ़े तानसेन अपनी उम्र के छठे दशक तक पन्ना के राजा रामचंद्र के दरबारी गायक रहे। संगीत में उनकी सिद्धहस्तता के कारण जब शहंशाह अकबर ने उन्हें आगरा बुलाकर अपने नवरत्नों में शामिल किया तो उन्होंने अपने आप को सूफ़ी संप्रदाय के अधिक नज़दीक पाया। तानसेन अकबर के पीर सूफी संत शेख सलीमचिश्ती के प्रभाव में भी रहे और कालांतर में अकबरी दरबार से जुड़े सूफी संत हजरत मोहम्मद गौस के सानिध्य में आकर उन्हें अपना आध्यात्मिक गुरू भी बनाया। 1589 ईस्वी में तानसेन के महाप्रयाण के बाद उनकी मज़ार इसीलिए हजरत मोहम्मद गौस के विशालकाय मकबरे के क़रीब बनाई गई।

नौ दशक से भी ज़्यादा बीत गए। इस बीच देश-दुनिया में बहुत कुछ बदला लेकिन ग्वालियर के हज़ीरा इलाके स्थित तानसेन की समाधि पर सुरों की इबादत का यह सिलसिला बदस्तूर जारी रहा। कुछ ऐसा रूहानी असर कि मौसिक़ी से ताल्लुक रखने वाले दुनिया के तमाम फ़नकार इस देहरी पर आकर अपने महान पुरखे की याद में सिर झुकाना चाहते हैं। सुरों का चराग़ जलाकर दुनिया के लिए अमन-चैन की दुआ मांगते हैं। सुर की उस करिश्माई ताक़त और असर को हासिल करना चाहते हैं जिसे तानसेन ने अपनी साधना के बल पर अर्जित किया था।

ज्ञानदेव मिश्रा
वरिष्ठ पत्रकार

15 वर्ष के अंतराल में मिस्टर एक्स से 3 मुलाकातें

मेरे जीवन की कुछ रोचक घटनाएं जो मुझे कभी-कभी अकेले बैठने पर गुदगुदाती हैं चलो आज आपसे साझा करते हैं। यूं ही बैठे-बिठाए लगा कि इसे लिखूं तो प्रस्तुत है?

अब तक तो यह तय हो चुका था कि मुझे काम नहीं करना तो हम ठहरे यूपी वाले भैया हम गाड़ी से नीचे उतर आए कहा कि, मिस्टर एक्स मेरी तुम्हारी तीन मुलाकातें है इसी घर पर 2002 मे तिवारी अंकल के साथ 15 साल पहले आपसे एक महंगे मकान का एग्रीमेंट करने आया था। मैंने दूसरी मुलाकात में आपको करप्शन के विरुद्ध लोकपाल बिल के समर्थन में उपवास कर कुछ पत्रकारों के सामने जूस पीते देखा था। तब आपके अंदर अन्ना हजारे की आत्मा प्रवेश कर गई थी, आज मेरी आपसे तीसरी मुलाकात है जिसमें आपके अंदर से अन्ना हजारे की आत्मा काफूर होकर पूरी तरह जा चुकी है। यह मेरी आपसे तीसरी और अंतिम मुलाकात है, नमस्ते।

पहली मुलाकात

2002 मार्च के महीने में मैं खेत पर गेहूं निकलवाने सुबह घर से चाय पी कर निकल गया सोचा था कि रास्ते में कहीं पोहा या कुछ खा लेंगे ऐसा कुछ दिखा नहीं और खेत जो कि 45 किलोमीटर दूर था वहां शाम हो गई इस बीच तिवारी अंकल का बार-बार फोन आ रहा था कि हमने हमारे साले के मकान को बेच दिया है जो व्यक्ति (मिस्टर एक्स) खरीद रहे हैं उन्होंने एग्रीमेंट बनाया है मिश्रा तुम चल कर पढ़ लो और उसमें अमुक बात और अमुक प पैरा बनवा देना।

रात 8:00 बजे का समय तय हुआ फिर लौटते लौटते हुए मुझे देर हो गई इस बीच में बहुत थक भी गया था और मुझे भूख भी लग रही थी लेकिन घर जाने की बजाए मैं सीधे तिवारी अंकल के बताए हुए पते पर जो कि बड़े कैंपस का कर्मचारी क्वार्टर था।

मैं उस पते पर पहुंचा तो अंकल वहां एग्रीमेंट लेकर बैठे हुए थे 2 पेज का अनुबंध मैं पढ़ने लगा और जो क्लाज जुड़वानी थी वह पेंसिल से जोड़ दी।

इस बीच चाय आ गई और चाय के साथ कड़ी पत्ते के साथ जो सूखा पोहा तला जाता है वह आ गया।

मुझे बड़ी जोर की भूख लग रही थी चम्मच से प्लेट में रखा सूखा पोहा मैंने खाना शुरू किया और साथ में चाय भी पीता रहा।

मिस्टर एक्स मुझे बीच-बीच में अजीब नजरों से देखते, एक तो मैं खेत से आ रहा था और वहां थ्रेसर की धूल पूरे सर पर और कपड़ों पर लगी हुई थी, तो मुझे लगा कि वह मुझे दोयम दर्जे का व्यक्ति समझ कर देख रहे हैं जो कि, मैं सही ही था। लेकिन वह उसके आगे सोच रहे थे अमूमन अतिथि के सामने जो ड्राई फूड या सूखा पोहा रखा जाता है उसको वह एक आध चम्मच खाकर अतिथि फॉर्मेलिटी करता है, आमतौर पर उसे पूरा खत्म नहीं करते हैं संभवत बड़े लोगों की दुनिया में यह कल्चर होता हो लेकिन मेरी गर्भनाल यूपी में गड़ी हुई है और मैं 1 साल का था भोपाल आ गया फिर भी मेरे अंदर का देहाती पन आज तक नहीं गया। भूख लगी हो और सामने कोई खाने की चीज रख दे तो उसे पूरा खाना हम धर्म मानते हैं अन्न छोड़ना हमें अन्न का अपमान बताया गया था। तो उस प्लेट में रखा पूरा पोहा हमने खाया। मैं मिस्टर एक्स की हिकारत का भाव समझ चुका था मैंने सब्सिडाइज करने के लिए विदा लेते वक्त कहा कि पोहा बहुत अच्छा बना था। मिस्टर एक्स मैं तंज किया और कहा कि,और ला दूँ। मैंने कहा फिर कभी आकर ले जाऊंगा। बात खत्म हुई अगले कुछ महीनों में उस संपत्ति की रजिस्ट्री हो गई।

दूसरी मुलाकात

सन 2011 और 12 के मध्य महीना मुझे याद नहीं है एंटी करप्शन और लोकपाल बिल को लेकर अन्ना हजारे का आंदोलन चरम पर था उसी संस्थान के चौराहे पर मैं किसी से मिलने के लिए खड़ा हुआ था। सामने छोटा सा शामियाना लोकपाल बिल और अन्ना हजारे के समर्थन में लगा था क्यूरिसिटी और पुराना पत्रकार होने के कारण लोभ - संवरण नहीं कर पाया और सामियाना के पास पहुंचा तो वहां एक कर्मचारी नेता को एक सज्जन जूस पिलाकर उनका अनशन तुड़वा रहे थे और यह नौटंकी मेरा मनोरंजन कर रही थी।थोड़ा पास जाकर देखा तो यह सज्जन जो उपवास पर बैठे थे वही मिस्टर एक्स थे मैंने उन्हें देखा लेकिन वह मुझे नहीं देख पाए या यूं कह लें भीड़भाड़ थी तो उनकी नजर नहीं मुझ पर नहीं गई होगी। मेरे मन में उनको लेकर बड़े मिश्रित भाव आये। यह मुलाकात एक तरफा थी।

तीसरी मुलाकात

2016 से 17 के बीच मैं रोटरी क्लब की मीटिंग में बैठा था एक सज्जन ने मुझे प्रस्ताव दिया कि एक बड़े संस्थान में 5 करोड़ के लगभग निर्माण कार्य निकलने वाला है वहां के अधिकारी मुझसे परिचित हैं काम अच्छे रेट पर पर आपको मिल जाएगा सामान्य नेगा दस्तूर जारी सिस्टम जो चलता है के अतिरिक्त आपको उस अधिकारी को 10त्न देने हैं। कार्य बहुत प्रॉफिट का है। टेंडर में कंपटीशन नहीं होगा, मैंने उनसे कहा कि कल चल कर मिल लेते हैं समय और और तिथि तय हो गई मैंने इस बात की चर्चा मेरे अभिन्न शासकीय अभियंता से की जिन्हें ऐसे कार्यों का काफी बड़ा अनुभव था और वह मुझसे बहुत स्नेह करते हैं। उन्होंने कहा कि कार्य की ड्राइंग डी पी आ और आइटम रेट मैं देख लेता हूं उसके बाद टेंडर डालना। मैंने अपने रोटरी के सदस्य मित्र से विभाग और कार्य कार्य जानना चाहा तो उन्होंने कहा कि हम सीधे आपको चलकर मिलवा देंगे वह अधिकारी ड्राइंग डीपीआर के साथ आपको मिलेगा। कुल मिलाकर उन्होंने नाम और स्थान नहीं बताया वह उसकी गोपनीयता रखना चाहते थे क्यों मुझे नहीं पता। मैं अभियंता भाई साहब अपने रोटेरियन मित्र के साथ उन्ही की गाड़ी में बैठ कर चल दिया। यह गाड़ी जब कैंपस में दाखिल हुई और काफी दूर चलने के बाद लगभग मिस्टर एक्स के घर के सामने पहुंची तो मुझे लगा कहीं यह वह तो नहीं। मुझे 2002 की घटना याद आई। कुछ मिनट में ही आशंका सही साबित हुई यह वही घर था जहां पर मैं मिस्टर एक्स का प्लेट पोहा खा गया था जिसको उन्होंने आउट ऑफ एटीकेट माना था।लेकिन उस संक्षिप्त मुलाकात के बाद लगभग 15 वर्ष गुजर गए थे और मैं मोटा हो चुका था तो उन्होंने मुझे नहीं पहचाना हम उनके घर में बैठे। ड्राइंग और डीपीआर के साथ चाय आई और इस बार ड्राई फूड की सजी हुई प्लेट भी आई, मैंने पूरी सावधानी बरती चाय आधी पी के छोड़ दी जैसा कि कुछ सो काल्ड (तथाकथित)बड़े लोग करते हैं। क्योंकि मैं तो टेंडर लेने गया था। हमारे अभियंता भाई साहब ने ड्राइंग और डीपीआर की डिटेल देख मुझे इशारों में बता दिया कि यह कार्य करने लायक नहीं है ,बातचीत होती रही इस बीच मिस्टर एक्स ने मुझसे दो-तीन बार कहा लगता है कहीं आपको देखा है या हम मिले हैं , तो मैं अनभिज्ञता जताता रहा कि मुझे तो याद नहीं पड़ता, उन्होंने एक बार और रिपीट किया की मैं आपसे कहीं मिला हूं मैंने कहा हो सकता है। इस बीच हम उनके घर से नीचे उतर कर आ गए अभियंता भाई साहब ने कार में बैठते हुए कहा की फर्जी काम है यह तुम मत करना। मिस्टर एक्स ने बातचीत में मुझसे बड़ी रकम एक एडवांस के रूप में चाही थी तो जब वह मुझसे यह बात कर रहे थे तो मुझे अन्ना हजारे के समर्थन में बैठे हुए और उपवास तोड़कर जूस पीते हुए कर्मचारी नेता की शक्ल भी दिख रही थी जो मिस्टर एक्स थे। मिस्टर एक्स हमें कार तक छोड़ने आए उन्होंने फिर कहा कि आपको कहीं देखा है याद नहीं आ रहा है। अब तक तो यह तय हो चुका था कि मुझे काम नहीं करना तो हम ठहरे यूपी वाले भैया हम गाड़ी से नीचे उतर आए कहा कि , मिस्टर एक्स मेरी तुम्हारी तीन मुलाकातें है इसी घर पर 2002 मे तिवारी अंकल के साथ 15 साल पहले आपसे एक महंगे मकान का एग्रीमेंट करने आया था। मैंने दूसरी मुलाकात में आपको करप्शन के विरुद्ध लोकपाल बिल के समर्थन में उपवास कर कुछ पत्रकारों के सामने जूस पीते देखा था। तब आपके अंदर अन्ना हजारे की आत्मा प्रवेश कर गई थी, आज मेरी आपसे तीसरी मुलाकात है जिसमें आपके अंदर से अन्ना हजारे की आत्मा काफूर होकर पूरी तरह जा चुकी है। यह मेरी आपसे तीसरी और अंतिम मुलाकात है, **नमस्ते।**

अब मैंने उनके चेहरे के भाव पढे धूर्तता काफूर हो चुकी थी। कालांतर में इनके लाव लश्कर और साम्राज्य रसूख के बारे में मुझे पता चलता रहा। जिससे मेरा कोई सरोकार नहीं। आज ही यूं ही यह घटना याद आई तो आपसे साझा कर दी। प्रतिक्रिया जरूर दीजिएगा?

मकर संक्रांति पर पढ़ें बच्चों की कहानी

कबूतर का दर्द

स्मृति आदित्य
वरिष्ठ पत्रकार, लेखक, चिंतक

मैं एक कबूतर हूं। आज मैं आपको अपनी कहानी सुनाना चाहता हूं। आप सभी मकर संक्रांति पर खूब पतंग उड़ाएंगे। खूब तिल गुड़ खाएंगे। आपको आपके मम्मी-पापा खूब सारी

पतंग, मांजा, फिरकी लाकर देंगे। पर मैं. .. मैं तो अकेला हूं। जब भी मकर संक्रांति आती है मुझे याद आती है अपने मम्मी पापा की। तब मैं बहुत छोटा था। मेरे पंख बहुत नाजुक थे। मैं उड़ भी नहीं सकता था। बस मैंने आंखें ही खोली थी। मेरे मम्मी-पापा सुबह होते ही दाना पानी के लिए भटकने निकल जाते थे। उस दिन भी वे दोनों मेरे लिए दाना जुटाने निकल पड़े थे।

हां, वह मकर संक्रांति का ही दिन था। चारों तरफ बहुत शोरगुल था। हर तरफ मस्ती से आवाजें आ रही थी वो काटा, काटा है... काई पो छे.... मैं भी अपनी नन्ही नन्ही आंखों से देख रहा था दूर आकाश में... सुंदर सुंदर रंगबिरंगी पतंगें इठला रही थीं। इतने सुंदर-सुंदर रंग और इतने सुंदर-सुंदर रूप की पतंगें....

मैं फुदक फुदक कर देख रहा था। तभी मैंने देखा पड़ोस के पेड़ पर रहने वाले चिडिया के बच्चे खेलते-खेलते बाहर निकल आए। मैं उन्हें फुदकते हुए देख ही रहा था कि अचानक पतंग के चीनी मांजे में एक छोटा बच्चा उलझ गया। चीं चीं चीं की तेज आवाज के साथ वह चीख रहा था। पर सब लोग त्योहार की मस्ती में इतने डूबे थे कि किसी को वह आवाज सुनाई नहीं दी। बच्चे चीनी मांजे को खींच रहे थे और वह

पतंग, मांजा, फिरकी लाकर देंगे। पर मैं. .. मैं तो अकेला हूं। जब भी मकर संक्रांति आती है मुझे याद आती है अपने मम्मी पापा की। तब मैं बहुत छोटा था। मेरे पंख बहुत नाजुक थे। मैं उड़ भी नहीं सकता था। बस मैंने आंखें ही खोली थी। मेरे मम्मी-पापा सुबह होते ही दाना पानी के लिए भटकने निकल जाते थे।

चिडिया का बच्चा खून से तरबतर होकर छटपटाता रहा। कुछ देर में उसके कोमल पंख अलग हो गए.... यह देख मैं डर गया... जोर-जोर से रोने लगा ... मुझे अब अपने मां और पिता की चिंता सताने लगी।

मैं कुछ नहीं कर सकता था क्योंकि मैं अभी उड़ना भी नहीं जानता था। अगर बाहर आने की कोशिश भी करता तो मेरा वही हश्र होता जो चिडिया के बच्चे का हुआ। मुझे बहुत जोरों से भूख लग आई थी। पर मैं बेबस था। शाम तक पतंग का कोलाहल बढ़ता ही जा रहा था और मेरा मन चिंता में डूबता जा रहा था। जैसे-जैसे अंधेरा बढ़ता गया .... मेरा दिल भी परेशानी में उलझता गया पतंग के चीनी मांजे की तरह।

कहां होंगे मेरे मम्मी-पापा ? कैसे उड़ रहे होंगे वह आकाश में.. आकाश में तो बिलकुल भी जगह नहीं बची... और यह चीनी धागा कितना खतरनाक है.... इसी में उलझ कर तो अभी चिडिया का बच्चा मर गया है। उसके आसपास उसके मम्मी-पापा विलाप कर रहे हैं.... मेरा मन भारी हो रहा है... क्या करूं, कहां जाऊं.. किससे पूछ कर देखूं....

मैं अकेला अपने घोंसले में भूख और मम्मी-पापा

की याद में थक कर बेचैन होने लगा। तभी अंधेरे में मुझे अपने पापा लड़खड़ाते-उड़ते हाल-बेहाल आते दिखाई दिए। मैं जोर-जोर से चिंहुकने लगा। मैंने देखा उनके पंख कटे हुए थे। हर तरफ से खूब बह रहा था। उनकी चोंच भी निकल गई थी। पंजों के नाखून लटकने लगे थे। मैं उन्हें देखकर चीख उठा। उन्होंने कराहते हुए चार दाने मेरी चोंच में डाले और कहा,

बेटा इन इंसानों की दुनिया में जीना बहुत मुश्किल है, तुम अपना ध्यान रखना... मैं किसी तरह तुम तक पहुंचा हूं.. तुम्हारी मां नहीं आएगी.... उसके दोनों पंख पतंग के मांजे में उलझ कर कट गए हैं और उसने वहीं तड़प-तड़प कर दम तोड़ दिया है...

मुझे याद आया कि पापा की हालत देखकर मैं भूल ही गया था कि मम्मी के बारे में पूछूं, पर अब तो उनका हाल सुनकर मेरे सब्र का बांध टूट गया। पापा ने मेरी तरफ देखते-देखते आंखें बंद कर ली। मैं अकेला रह गया।

आज फिर मकर संक्रांति है। आज मेरे बच्चे भूखे हैं पर मैं दाना नहीं ला सकता... मुझे डर है कि कहीं मैं भी बीच आकाश में उलझ कर न रह जाऊं और मेरे बच्चे अकेले न रह जाएं....

मैं आपसे पूछता हूं... क्या आपको रोना नहीं आता जब आपको छोटी सी भी चोट लग जाए तो ... फिर सोचिए कि इस आकाश में आज के दिन कितने पंछी उलझ कर दम तोड़ देते हैं.... कितने बच्चे मेरी तरह अकेले रह जाते हैं और कितने मम्मी-पापा अपने नन्हे बच्चे के लिए रोते रह जाते हैं... उस चिडिया की तरह ....

क्या आप मुझे वादा करोगे कि पतंग वहीं उड़ाएंगे जहां पंछी ना उड़ते हो... क्या आप वादा करोगे कि आपकी पतंग के चीनी मांजे से उलझ कर कोई पक्षी नहीं मरेगा...प्लीज मेरे नन्हे फ्रेंड्स, हम पक्षियों के लिए आकाश का कोई कोना तो रहने दो....

पतंगे तो आज भी है, आवाजें भी गूंज रही है, फिर वो क्या है जो हमारी एक खास पीढ़ी को लगता है कि कहीं खो गया है। कहां? किस जगह? कैसे ? उन्हें नहीं पता, लेकिन बस शिकायत है कि वो नहीं है अब जो तब था। किसे फुर्सत कि ढूंढे उसे । हम कहां कहते हैं कि तुम ढूंढों। हम तो स्वयं उस कल की मिठास और भोलेपन को ढूंढकर तुम्हें भेंट देना चाहते हैं पर हमारी तो सहज स्वतंत्रता ही बाधित कर दी आज के बाशिंदों ने। यह है अनोखीलाल कर्मा।

अतीत और स्मृतियों के आकाश में मुस्कुराती रंगबिरंगी पतंगें

पतंग, मुक्ताकाश में उड़ती, सरसराती, लहराती, इठलाती, सुंदर ,सजीली पतंग, कई -कई रंगों की आकर्षक पतंग किसे नहीं लुभाती? आशा और विश्वास की पतंग, आकांक्षा और संकल्प की पतंग तथा प्रेम और स्वप्न की भावुक पतंग हर युग के हर मानव ने उड़ाई है, उड़ा रहा है।

आज भी कितने ही लोग हमारे बीच ऐसे है जिनकी स्मृतियों के विराट समुद्र में इस एक पतंग के बहाने बहुत कुछ आलोड़ित होता है। कितनी ही दुर्बल अंजुरियों में वह पतंगमयी अतीत आज भी थरथराता है। किसी ने इसे अपनी मुट्ठी में कसकर भींच रखा है। बार-बार खुलती है मुट्ठी और एक मीठी याद शब्दों में बंधकर, कपोलों पर सजकर इसी पुराने आकाश पर ऊंचा उठने के लिए बेकल हो जाती है। जब हमने जानने के लिए हथेली पसारी तो कहां संभल सकी वे स्मृतियां? अंगुलियों की दरारों से फिसलने लगी। सच ही कहा है किसी ने कि स्मृतियों को समेटने के लिए दामन भी बड़ा होना चाहिए।

एक जोड़ी चमकती बूढ़ी आंखें, खुशी से फैल जाती है। फिर सिकुड़ती हैं, माथे पर त्रिपुंड-तिलक बनता है और यकायक जैसे आत्मीयता से लबरेज एक खिलखिलाता मोहल्ला हमारे समक्ष आ जाता है। ये हैं पंडित सोहनलाल चतुर्वेदी - वो आकाश हमारा अपना था, वो कच्ची खपरैल फिर बाद में बनी टीन की छत। खनकती उन्मुक्त बयार और गगनभेदी अनुगूंज काटा है.....!! आजकल की संक्रांति में वो बात कहां?

पतंगे तो आज भी है, आवाजें भी गूंज रही है, फिर वो क्या है जो हमारी एक खास पीढ़ी को लगता है कि कहीं खो गया है। कहां? किस जगह? कैसे ? उन्हें नहीं पता, लेकिन बस शिकायत है कि वो नहीं है अब जो तब था। किसे फुर्सत कि ढूंढे उसे ।

हम कहां कहते हैं कि तुम ढूंढों। हम तो स्वयं उस कल की मिठास और भोलेपन को ढूंढकर तुम्हें भेंट देना चाहते हैं पर हमारी तो सहज स्वतंत्रता ही बाधित कर दी आज के बाशिंदों ने। यह है अनोखीलाल कर्मा। जो बस थोड़ी देर नाराज रहते हैं फिर उनकी यादों से परत-दर-परत पतंगें उठती है और बिखरते हैं पतंगों के नाम - सिरकटी, तिरंगी, चौकड़ी, परियल, डंडियल, कानभात, आंखभात, चांदभात, गिलासिया, चुग्गी, ढग्गा, और भी ना जाने कितने अनूठे नाम !

पास बैठे गिरधारी शंकर एक जीवंत दृश्य खड़ा कर देते हैं। किसी संकरी सी गली में डोर सूती जा रही है। कोई फ्यूज बल्बों को फोड़कर काँच पीस रहा है। कोई सरस या नीला थोथा रंग के साथ घोल रहा है। घोल तैयार होते ही किसी के हाथों में धागे की रील होती है। और कोई उसे घोल में डुबोकर चकरी में लपेट रहा है। इस चकरी को हुचका या उचका भी कहते हैं। बिजली के दो खंबों के बीच यह डोर सुखाई जाती है और फिर लपेट ली जाती है। यह संक्रांति की पूर्व संध्या है। इसी जीते-जागते मोहल्ले से यह जानकारी मिलती है कि बरेली की डोर सबसे अच्छी होती है। यह पतली लगती है पर मजबूत होती है।

अब एक और जीवन संध्या के पंछी अतीत के घरौंदे की ओर अपना रूख करते हैं और हम भी उड़ चलते हैं उनके पीछे-पीछे। ये हैं रमणीक भाई देसाई।बता रहे हैं पतंग बनाने का

तरीका। ये जो पतली छिली लकड़ी पतंग पर चिपकाई जाती है उसे कांप कहते हैं। एक कांप सीधी लंबवत लगाई जाती है और दूसरी धनुषाकार में आहिस्ता से मोड़कर। पतंग

उड़ाने के लिए धागों से संतुलन बनाकर जो नाप बाँधा जाता है उसे जोते बांधना कहते हैं। पतंग का ऊपर आसमान से बातें करना इन्हीं जोतों पर निर्भर है।

एक दूर का चश्मा ऊपर आकाश में उठता है कोई पतंग उनमें उलझकर फिर हमको टटोलती है। आंखों में उलझी वह पतंग स्मृतियों की छत से मुस्कुरा उठती है। ये हैं *भगवानदास मोर्या*। जो यादों की महकती बयार में बहते चले जाते हैं। भिनसारे(प्रातःकाल) से ही चढ़ जाते थे संक्रांति के दिन और बिना पतंग के ही जोर से चिल्लाते हट, का...टा...है ... !!! और छिप जाते। आवाज सुनकर आस-पड़ौस के नन्हे पतंगबाज आंखें मसलते हुए उठ बैठते और घने कोहरे में ठिठुरती ठंड में कांपती-कुनमुनाती आवाज में कहीं से जवाब देते -का...टा...है!

हम पहले सूर्य पूजा करते,उसके बाद पतंगों की तिल से पूजा करते। हमारे पिताजी कहते हमेशा ऊपर उठने की सोचों पतंग की तरह। बातें करते हुए वे हाँफने लगते हैं और दूसरे साथी को इस अतीत-पतंग की डोर थमा देते हैं।

साथी असगर अली कमर सीधी कर भाषण देने की मुद्रा में आ जाते हैं। उनके चेहरे की पुलक दर्शनीय हो जाती है। पतंग के आकाश में पहुंचने अर्थ होता है आप मैदान में आकर दो-दो हाथ करने के लिए तैयार हैं। पतंग का मुकाबला इसलिए भी दिलचस्प होता है क्योंकि इसका निर्णय क्षण भर में आसमान में हो जाता है। इन कांपते हाथों की अंगुलियों में फिर कोई डोर रगड़ खाती है और एक रौनक सी चेहरे पर आ जाती है। हमने एक बार धागे के साथ अगरबत्ती बांधी और कुछ दूरी पर पटाखा भी बांधा।जब अगरबत्ती का गुल बिखरा और अगरबत्ती छोटी होकर पटाखे से लगी तो ऊपर आसमान में पटाखा फूटा,बड़ा मजा आया।

परतें सारी खुल चुकी है ऐसा मुझे लगा लेकिन एक रंगबिरंगी परत अभी शेष थी। इसके नीचे कई लाल, हरे, पीले, नीले और गुलाबी कंदिल झिलमिला रहे थे । इस बार इक़बाल भाई थे : शाम होते-होते अंधेरा छाने लगता। गर्दन, हाथ, पैर और आंखें सब थककर चूर हो जाते पर संक्रांति का उत्साह वैसा ही रहता। बल्कि बढ़ जाता कंदिल उड़ाने के लिए। पहले पतंग उड़ा ली जाती फिर उसमें गत्ते का कंदिल बांधा जाता। आजकल तो बाजार में मिलता है। हम हाथ से बनाते थे। अगरबत्ती की पीली पन्नी आसपास चिपका कर बीच में मोमबत्ती रखते और धीरे-धीरे पतंग आगे बढ़ाते । आकाश में जगमगाते इन कंदिलों की छटा ही निराली होती।

आज ये पुराने शौकीन पतंगबाज आंखों पर हथेली की छांव रख खुले आकाश में पतंग को निहारते हैं इन आंखों में सिर्फ कोई पतंग ही नहीं उलझती बल्कि उस पतंग के साथ न जाने कितनी लंबी डोर वाली चकरी घूमने लगती है। एक सुनहरा रंगीन अतीत अकुलाकर बाहर आना चाहता है। लेकिन जब यथार्थ की तीखी धूप आंखों में चूभती है तो वे आंखें बंद कर लेते हैं। आज हम सभी अपने स्वार्थ की पतंगों को ऊंचाई पर पहुंचाने के लिए बेताब है। राष्ट्र की उन्नति की पतंग, शांति की पतंग और राष्ट्र जागृति की पतंग को शुभ्राकाश के अंतिम छोर से स्पर्श कराने के लिए जाने हम कब प्रतिबद्ध होंगे, जिसे पड़ोसी मुल्क (चीन या पाक) की कोई शैतानी पतंग न काट सके। यदि कोई बेवजह उलझे तो उसे हम पूरे हौसले और हिम्मत के साथ उसे काट दें। फिर करें पूरी शक्ति के साथ यह जयघोष -- का...टा है.... !

आशा की इस पतंग को उड़ाने की अनुमति दीजिए कि ऐसी संक्रांति भी आएगी जब आने वाले वर्षों में ये मीठे पर्व नए महत्त्व और नई मासूमियत के साथ इस तरह मनाए जाएंगे कि पुरानी परंपरा का परचम भी शान से लहरा सकें। राष्ट्रहित में यह शुभचिन्ह होगा।

संक्रांति : मन की उमंगों का महकता दिन

रंग-बिरंगी पतंगों से सजा खिला-खिला आकाश, उत्तरायण में खिलते नारंगी सूर्य देवता, तिल-गुड़ की मीठी-भीनी महक और दान-पुण्य करने की उदार धर्मपरायणता। यही पहचान है भारत के अनूठे और उमंग भरे पर्व मकर संक्रांति की। मकर संक्रांति यानी सूर्य का दिशा परिवर्तन, मौसम परिवर्तन, हवा परिवर्तन और मन का परिवर्तन।

मन का मौसम से बड़ा गहरा रिश्ता होता है। यही कारण है कि जब मौसम करवट लेता है तो मन में तरंगे उठना बड़ा स्वाभाविक है। इन तरंगों की उड़ान को ही

पहले पतंग उड़ा ली जाती फिर उसमें गत्ते का कंदिल बांधा जाता। आजकल तो बाजार में मिलता है। हम हाथ से बनाते थे। अगरबत्ती की पीली पन्नी आसपास चिपका कर बीच में मोमबत्ती रखते और धीरे-धीरे पतंग आगे बढ़ाते । आकाश में जगमगाते इन कंदिलों की छटा ही निराली होती।

आसमान में ऊंची उठती पतंगों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है।

पतंग और रिश्तों का गणित

ये पतंगे जीवन के सरल-कठिन पेंच सिखाती है। रिश्तों में इतनी ढील ना रहे कि सामने वाला लहराता ही रहे और ना ही इतनी खींचतान या तनाव कि वह आगे बढ़ ही न सके। ये पतंगे उन्नति, उमंग और उल्लास का लहराता प्रतीक है। ये पतंगे बच्चों की किलकती-चहकती खुशियों का सबब है। ये पतंगे आसमान को छू लेने का रंगों भरा हौसला देती है। ये पतंगे ही तो होती है जो सिर पर तनी मायावी छत को जी भर कर देख लेने का मौका देती है वरना रोजमर्रा के कामों में भला कहां फुरसत कि ऊंचे गगन को बैठकर निहारा जाए?

तिल-गुड़ की मिठास में रिश्तों का संयोजन

पतंगों की सरसराहट से पतंगबाजों के दिल में जो हिलोर उठती है उसे अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता उसे तो उनकी हाथों की कलाबाजियां और चेहरे की पुलक से ही पढ़ा जा सकता है। मकर संक्राति का दूसरा आकर्षण तिल-गुड़ की मिठास में होता है। यह प्रतीक है इस बात का कि आज से दिन तिल भर बड़ा हो रहा है। तिल की पौष्टिकता से सभी अवगत है। यही तिल बदलते मौसम से लड़ने की ताकत देता है। गुड़ की तरह रिश्ते मधुर बने हम सब चाहते हैं लेकिन अकेला गुड़ ज्यादा नहीं खाया जा सकता, यही कारण है कि तिल के साथ उसका कुशल संयोजन बैठाया जाता है। रिश्तों में भी इसी समायोजन की जरूरत है।

दान-पुण्य के साथ अहम का त्याग

तीसरा आकर्षण दान और पुण्य का होता है। जो कुछ हम समाज से लेते हैं उसे किसी ना किसी माध्यम से समाज को लौटाना ही दान है। दान विनम्र बनाता है। दान यह अहसास जगाता है कि भगवान ने हमें इतना योग्य बनाया है, हम किसी के मददगार हो सकते हैं। धर्म-शास्त्र-पुराण और ग्रंथों में वर्णित नियमों को कुछ देर ना भी मानें तो दान की प्रक्रिया असीम संतोष देती है बशर्ते उसमें मैं का अहम भाव या अभिमान ना छुपा हो। मकर संक्रांति का पतंगों से सजा और तिल-गुड़ से महकता पर्व हम सभी के लिए, देश के लिए उन्नति और निरंतर विकास का प्रतीक बने यही रंगबिरंगी कामना है।

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, चंदवक
जौनपुर, उ. प्र. -222129.मोबाइल -
8367782654.व्हाट्सअप - 8792257267

सरस्वती वंदना

हे विद्यादायिनी ! हे हंसवाहिनी !
करो अपनी कृपा अपरम्पार।
हे ज्ञानदायिनी ! हे वीणावादिनी !
बुद्धि दे !, करो भवसागर से पार।।

हे कमलवसिनी !, हे ब्रह्मापुत्री !
तम हर, ज्योति भर दे।
हे वसुधा !, हे विद्यारूपा !
वीणा बजा, ज्ञान प्रबल कर दे।।

हे वाग्देवी !, हे शारदे !
हम सब है, तेरे साधक।
हे भारती !, हे भुवनेश्वरी !
दूर करो हमारे सब बाधक।।

हे कुमुदी !, हे चंद्रकाति !
हम बुध्दि ज्ञान तुझसे पाए।
हे जगती !, हे बुद्धिदात्री !
हमारा जीवन तुझमें रम जाए।।

हे सरस्वती !, हे वरदायिनी !,
तेरे हाथों में वीणा खूब बाजे।
हे श्वेतानन !, हे पद्मलोचना !
तेरी भक्ति से मेरा जीवन साजे।।

हे ब्रह्म जाया !, हे सुवासिनी !
कर में तेरे ग्रंथ विराजत।
हे विद्या देवी !, हे ज्ञान रूपी !
ज्ञान दे करो हमारी हिफाजत।।

शिव वंदना

जय हो देवों के देव,
प्रणाम तुम्हे है महादेव।
हाथ में डमरू, कंठ भुजंगा,
प्रणाम तुम्हे शिव पार्वती संगा।।

बोलो जय जय देवाधिदेव ,
प्रणाम तुम्हें है महादेव ।।

हे कैलासी , हे सन्यासी,
शिव को सबसे प्यारी काशी।
हे नीलकंठ !, हे महादेव !
रक्षा करो मेरी देवाधिदेव।।

शिव का अर्थ है मंगलकारी,
शिव पूजन है सब दुखहारी।।
हे जटाधारी ! शिव, दुष्टों का
ना देर करो , संहार करो ,
प्रसन्न होकर मम भक्ति से
मेरा जल्दी उद्धार करो।।

बोलो जय जय देवाधिदेव ,
प्रणाम तुम्हें है महादेव ।।

नंदी, भृंगी , टुंडी, श्रृंगी, संग,
नन्दिकेश्वर,भूतनाथ शिवगण।
भांग, धतूरा , पंचामृत संग,
शिव को पूजे सब भक्तगण।।

बोलो जय जय देवाधिदेव ,
प्रणाम तुम्हे है महादेव ।।

सोमनाथ संग बारह धाम,
शिव पूजन से बनते काम।
आओ भक्तों करें प्रणाम,
शिव भक्ति से बनेंगे काम।।

बोलो जय जय देवाधिदेव।
प्रणाम तुम्हे है महादेव ।।

हे भोले नाथ !, हे शिव शंकर !,
शक्ति संग कहलाते अर्धनारीश्वर!
हे अमृतेश्वर !, हे महाकालेश्वर,
दुःख हरो हमारी सब परमेश्वर।।

बोलो जय जय देवाधिदेव ,
प्रणाम तुम्हे है महादेव ।।

तिरंगा

तिरंगा है हमारी जान,
कहलाता देश की शान।
तीन रंगों से बना तिरंगा,
बढ़ता हम सब की मान।।

केसरिया रंग साहस देता,
श्वेत रंग शांति दिखलाता।
हरा रंग विकास को बता,
तिरंगा बहुत कुछ बताता।।

तिरंगे मध्य में अशोक चक्र ,
निरंतर हमें बढ़ने को कहता।
राजपथ और लाल किले पर,
तिरंगा देश की शान बढ़ाता।।

तिरंगा है देश की पहचान,
रखेंगे हम सब इसका मान।
तिरंगे की रक्षा के खातिर,
कर देंगे अपने प्राण कुर्बान।।

आओ आज हमसब मिलकर,
जन गण मन राष्ट्र गान गाएं।।
जाति-धर्म का भेद मिटाकर ,
अपने देश का हम मान बढ़ाएं।।

शांति के लिए अशांति को स्वीकार कर लें

तिब्बत में एक पुरानी कथा है कि दो भाई हैं। पिता मर गया है, तो उनके पास सौ घोड़े थे। घोड़े का काम था। सवारियों को लाने-ले जाने का काम था। तो पिता मरते वक्त बड़े भाई को कह गया कि तू बुद्धिमान है, छोटा तो अभी छोटा है। तू अपनी मर्जी से जैसा भी बंटवारा करना चाहे, कर देना। तो बड़े भाई ने बंटवारा कर दिया। निन्यानबे घोड़े उसने रख लिए, एक घोड़ा छोटे भाई को दे दिया। आस-पास के लोग चौंके भी। पड़ोसियों ने कहा भी कि यह तुम क्या कर रहे होड़ तो बड़े भाई ने कहा कि मामला ऐसा है, यह अभी छोटा है, समझ कम है। निन्यानबे कैसे सम्भालेगा तो मैं निन्यानबे ले लेता हूं, एक उसे दे देता हूं। ठीक छोटा भी थोड़े दिन में बड़ा हो गया, लेकिन वह एक से काफी प्रसन्न था, एक से काम चल जाता था। वह खुद ही नौकर नहीं रखने पड़ते थे, अलग इंतजाम नहीं करना पड़ता था–वह खुद ही शहर की तरह चला जाता था। यात्रा करवा आता था लोगों के लिए। उसका भोजन का काम चल जाता था। लेकिन बड़ा भाई बड़ा परेशान था। निन्यानबे घोड़े थे, निन्यानबे चक्कर थे। नौकर रखने पड़ते। अस्तबल बनाना पड़ता। कभी कोई घोड़ा बीमार हो जाता, कभी कुछ हो जाता। कभी कोई घोड़ा भाग जाता, कभी कोई नौकर न लौटता। रात हो जाती, देर हो जाती, वह जागता, वह बहुत परेशान था। एक दिन आकर उसने अपने छोटे भाई को कहा कि तुझसे मेरी एक प्रार्थना है कि तेरा जो एक घोड़ा है वह भी तू मुझे दे दे। उसने कहा–क्यों? तो उस बड़े भाई ने कहा–तेरे पास एक ही घोड़ा है, नहीं भी रहा तो कुछ ज्यादा नहीं खो जाएगा। मेरे पास निन्यानबे हैं, अगर एक मुझे और मिल जाए तो सौ हो जाएंगे। पर मेरे लिए बड़ा सवाल है। क्योंकि मेरे पास निन्यानबे हैं। एक मिलते ही पूरी सेंचुरी, पूरे सौ हो जाएंगे। तो मेरी प्रतिष्ठा और इज्जत का सवाल है। अपने बाप के पास सौ घोड़े थे, कम-से-कम बाप की इज्जत का भी इसमें सवाल जुड़ा हुआ है। छोटे भाई ने कहा, आप यह घोड़ा भी ले जाएं। क्योंकि मेरा अनुभव यह है कि निन्यानबे में आपको मैं बड़ी तकलीफ में देखता हूं, तो मैं सोचता हूं, एक में भी निन्यानबे बंटे नहीं, लेकिन थोड़ी बहुत तकलीफ तो होगी ही। यह भी आप ले जाएं।

तो वह छोटा उस दिन से इतने आनन्द में हो गया क्योंकि अब वह खुद ही घोड़े का काम करने लगा। अब तक कभी घोड़ा बीमार पड़ता था, कभी दवा लानी पड़ती थी; कभी घोड़ा राजी नहीं होता था जाने को; कभी थककर बैठ जाता था। हजार पंचायतें होती थीं। वह भी बात खत्म हो गयी। अब तक घोड़े की नौकरी करनी पड़ती थी। उसकी लगाम पकड़कर चलानी पड़ती थी, वह बात भी खत्म हो गयी। अपना मालिक हो गया। अब वह खुद ही बोझ ले लेता, लोगों को कंधे पर बिठा लेता और यात्रा कराता। लेकिन बड़ा बहुत परेशान हो गया। वह बीमार ही रहने लगा। क्योंकि सौ में से अब कहीं एकाध कम न हो जाए, कोई घोड़ा मर न जाए, कोई घोड़ा खो न जाए, नहीं तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी।

मारपा यह कहानी अकसर कहा करता था–एक तिब्बती फकीर था–वह अकसर यह कहानी कहा करता था। और वह कहता था–मैंने दो ही तरह के आदमी देखे–एक, वे जो वस्तुओं पर इतना भरोसा कर लेते हैं कि उनकी वजह से ही परेशान हो जाते हैं। और एक वे, जो अपने पर इतने भरोसे से भरे होते हैं कि वस्तुएं उन्हें परेशान नहीं कर पातीं। दो ही तरह के लोग हैं इस पृथ्वी पर। दूसरी तरह के लोग बहुत कम हैं इसलिए पृथ्वी पर आनंद बहुत कम है। पहले तरह के लोग बहुत हैं, इसलिए पृथ्वी पर दुख बहुत है।

महावीर वाणी, भाग-1,
प्रवचनम्11, ओशो

सर्दियों में इन तरीकों से पहनें साड़ी, ठंड से बचाव के साथ स्टाइलिश लुक

देश में महिलाओं के साड़ी पहनने का रिवाज सदियों पुराना है. स्पेशल ओकेजन से लेकर रोजमर्रा की जिंदगी में ज्यादातर महिलाएं साड़ी में खुद को कंफर्टेबल फील करती है. हालांकि सर्दियों में साड़ी पहनकर ठंड से बचना महिलाओं के लिए काफी मुश्किल टास्क होता है. ऐसे में अगर आप चाहें तो सर्दियों में कुछ खास तरीकों से साड़ी पहनकर, ठंड से बचाव करने के साथ-साथ स्टाइलिश लुक भी कैरी कर सकती हैं.

सर्दियों में ठंड से सुरक्षित रहने के लिए महिलाओं को साड़ी के ऊपर गर्म कपड़े पहनने पड़ते हैं. जिसके चलते महिलाओं की साड़ी का लुक पूरी तरह से छुप जाता है. वहीं वुलेन क्लोथ को अवॉयड करने से महिलाओं को सर्दी लगने का भी खतरा रहता है. ऐसे में साड़ी पहनने के कुछ टिप्स आपके बेहद काम आ सकते हैं. जिसे फॉलो करके आप सर्दियों में साड़ी के साथ भी कंफर्टेबल और बेस्ट लुक पा सकती हैं.

ओवरकोट ट्राई करें

साड़ी के साथ ओवरकोट पहनना काफी ट्रेंडिंग में है. ऐसे में सर्दियों के दौरान साड़ी पर कन्ट्रास्टिंग ओवरकोट कैरी करके आप अपने लुक को एन्हॉन्स कर सकती हैं. वहीं ब्लैक और ब्राउन कलर के ओवरकोट हर रंग की साड़ी पर सूट करते हैं. मगर ओवरकोट पहनते समय लम्बाई और फिटिंग को ध्यान में रखना न भूलें.

फुल स्लीव ब्लाउज पहनें

सर्दियों में स्टाइलिश और कंफर्टेबल लुक पाने के लिए आप साड़ी के साथ फुल स्लीव्स ब्लाउज पहन सकती हैं. इससे साड़ी में आपका लुक ऑसम नजर आएगा. इसके अलावा फुल स्लीव्स ब्लाउज की जगह शर्ट पहनना भी अच्छा ऑप्शन हो सकता है. वहीं शर्ट के साथ सिंपल ज्वेलरी पहनकर आप कूल और डिफरेंट लुक ट्राई कर सकती हैं.

जैकेट कैरी करें

सर्दियों में साड़ी के साथ जैकेट पहनकर भी आप आसानी से बेस्ट और स्टाइलिश लुक कैरी कर सकती हैं. ऐसे में एथनिक, डेनिम और लेदर जैकेट या ब्लेजर का सेलेक्शन आपके लिए परफेक्ट हो सकता है. वहीं आप जैकेट और ब्लेजर के बटन को कंफर्ट के हिसाब से खोलकर या बंद करके भी रख सकती हैं.

ये भी पढ़ें: बॉडी शेप को ध्यान में रखकर ऐसे करें ड्रेस का सेलेक्शन, चुटिकियों में मिलेगा स्मार्ट और परफेक्ट लुक

हाईनेक ब्लाउज पहनें

साड़ी के साथ कन्ट्रास्टिंग हाईनेक ब्लाउज पहनने का फैशन काफी ट्रेंड कर रहा है. ऐसे में सर्दियों के दौरान आप साड़ी के साथ हाई नेक ब्लाउज भी ट्राई कर सकती हैं. बता दें कि डार्क कलर की साड़ी के साथ लाइट शेड हाईनेक ब्लाउज आपको काफी स्टाइलिश लुक दे सकता है.

साड़ी और शॉल का कॉम्बीनेशन

सर्दियों में साड़ी के साथ शॉल कैरी करना भी महिलाओं के लुक को एन्हॉन्स करने का काम करता है. वहीं साड़ी के साथ पश्मीना और सिल्क की शॉल पहनना आपके लिए बेहतर विकल्प साबित हो सकता है. इससे न सिर्फ आप ठंड से बच सकती हैं बल्कि कंधे के एक छोर पर शॉल डालकर आप ट्रेडिशनल स्टाइलिश लुक हासिल कर सकती हैं.

महिलाओं में हार्मोन असंतुलन को ठीक करे ये आहार

महिलाओं के शरीर में हार्मोन बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है इसलिए इसका संतुलित रहना बहुत ही आवश्यक हैं। हार्मोन का असंतुलन पूरे शरीर को प्रभावित करता है। महिलाओं में हार्मोन असंतुलन के कारण कार्टिसोल नामक हार्मोन तनाव, अवसाद, चिंता, थकान और निराशा आदि की समस्या का सामना करना पड़ता है। हार्मोन असंतुलन को आपने आहार से भी ठीक किया जा सकता है। आज हम आपको महिलाओं में हार्मोन असंतुलन को ठीक करने वाले आहार की जानकारी देंगे। जब किसी महिला में हार्मोन का संतुलन होता है तो इसका आपके मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। हार्मोन रासायनिक मेसेंजर होते है जो आपकी भूख, वजन और मनोदशा को नियंत्रित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। आम तौर पर, आपकी अंतःस्त्रावी ग्रंथियां आपके शरीर में विभिन्न प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक प्रत्येक हार्मोन की सटीक मात्रा का उत्पादन करती हैं। आज कीआधुनिक जीवन शैली के साथ महिलाओं में हार्मोनल असंतुलन आम हो गया है। इसके अलावा, कुछ हार्मोन उम्र के साथ कम हो जाते हैं। पौष्टिक आहार और स्वस्थ जीवन शैली आपके हार्मोनल स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकती हैं। सभी महिलाएं अपने हार्मोन असंतुलन को ठीक करने के लिए निम्न प्रकार के आहार का सेवन करें।

हार्मोन असंतुलन के लिए खाएं दही

दही का सेवन करना उन महिलाओं के लिए बहुत ही फायदेमंद माना जाता है जिनके हार्मोन असंतुलित हो जाता है। दही प्रोबायोटिक का समृद्ध स्त्रोत है जो आंत की परत को रिपेयर करता है और महिलाओं में हार्मोनल असंतुलन की समस्या को ठीक करता है। प्रोबायोटिक हेल्दी बैक्टीरिया होते हैं जो जो शरीर को सही तरीके से कार्य करने के लिए आवश्यक होते हैं। प्रोबायोटिक बैक्टीरिया की कमी के कारण हार्मोन असंतुलन की समस्या हो जाती है। महिलाओं में हार्मोनल असंतुलन को प्राकृतिक रुप से ठीक करने के लिए रोजाना दिन में दो बार एक कटोरी दही खाना चाहिए।

उच्च फाइबर वाले आहार का सेवन करें

कुछ अध्ययनों से पता चला है कि फाइबर युक्त भोजन इंसुलिन संवेदनशीलता को बढ़ाता है और हार्मोन के उत्पादन को उत्तेजित करता है जो आपको पूर्ण और संतुष्ट महसूस कराता है।

अधिक वजन और मोटे लोगों में एक अध्ययन में पाया गया कि ओलिगोफ्रक्टोज नामक एक प्रकार के घुलनशील फाइबर का सेवन करने से क्ख्ड्ड का स्तर बढ़ जाता है, और अघुलनशील फाइबर सेल्युलोज का सेवन ₹स्क्क1 के स्तर को बढ़ाने के लिए होता है। दोनों प्रकार का फाइबर भूख में कमी करने में लाभदायक होता है। इसलिए महिलाओं को अपने आहार में उच्च फाइबर युक्त भोजन को करना चाहिए।

हार्मोन असंतुलन को ठीक करे विटामिन डी से

महिलाओं में हार्मोन को बैलेंस करने और हार्मोनल असंतुलन को ठीक करने के लिए विटामिन डी बहुत ही आवश्यक होता है। विटामिन डी सूजन को कम करके इम्यूनिटी बढ़ाता है और हार्मोन को बैलेंस करने में मदद करता है। विटामिन डी के सप्लीमेंट, कॉड लिवर ऑयल, अंडे, मछली और मशरुम का सेवन करने से भी महिलाओं में हार्मोनल असंतुलन ठीक हो जाता है।

अश्वगंधा खाने के लाभ

रोजाना अश्वगंधा का सेवन करना महिलाओं को अपने शरीर में हार्मोन का संतुलन बनाने में मदद करता है। अश्वगंधा एक प्रकार की जड़ी बूटी है जो हार्मोन के असंतुलन को दूर कर शरीर में हार्मोन के स्तर को बराबर करने में मदद करता है। महिलाएं प्रतिदिन दिन में तीन बार गुनगुने पानी से अश्वगंधा पाउडर या अश्वगंधा सप्लीमेंट्स का सेवन करें। यह हार्मोन के असंतुलन को ठीक कर देता है।

हार्मोन असंतुलन को ठीक करे अलसी

एक स्टडी में पाया गया है कि महिलाओं के शरीर में हार्मोन के असंतुलन को दूर करने और हार्मोन के लेवल को बढ़ाने के लिए अलसी बहुत फायदेमंद होती है। अलसी में अच्छी मात्रा में फाइटोएस्ट्रोजन पाया जाता है और यह फाइबर एवं ओमेगा 3 फैटी एसिड का भी एक अच्छा स्त्रोत है जो हार्मोन बनाने में प्रभावी तरीके से काम करता है। अलसी के पाउडर को महिलाएं दही, ओटमील, स्प्राउट्स में मिलाकर खा सकती हैं।

हथेली के रंगों से जानिए अपना भविष्य

हथेली की लकीरें जितनी खास होती है, उतनी ही हथेली की रंग बेहद मायने रखती है,आप अपने हथेली के रंगों से भविष्य के बारे में जान सकते हैं. जिनके हथेली का रंग गुलाबी, लाल, पीला, नीला या मटमैला होता है. उन सभी के अलग-अलग अर्थ होते हैं. तो आइए आज हम आपको अपने इस लेख में हथेली के रंगों से आपके व्यक्तित्व के बार में बताएंगे, जिनसे आप उनके भविष्य के बारे में भी पता लगा सकते हैं.

1. सफेद हथेली वाले लोग हथेली का रंग व्यक्ति के रक्त को प्रवाह करने के बारे में बताती है. अगर आपकी हथेलियों पर खून की झाईं की झलक नहीं पड़ती है, तो वैसे लोग शारीरिक और मानसिक दृष्टि से कमजोर होते हैं. ऐसे लोगों की हथेली हमेशी ठंडी रहती है. ऐसे लोग काल्पनिक, रहस्य से भरे, थोड़े स्वार्थी भाव वाले होते हैं.

2. गुलाबी हथेली वाले लोग गुलाबी हथेली शरीर के खून को संतुलित रखता है. ऐसे व्यक्ति हर क्षेत्र में सक्रीय होते हैं. इन्हें हर काम में अच्छी पकड़ होती है. ऐसे व्यक्ति जिज्ञासु किस्म के होते हैं. ऐसे व्यक्ति बेहद संघर्ष करते हैं. हर क्षेत्र में मान-सम्मान प्राप्त करते हैं.

3.ज्यादा लाल हथेली वाले लोग जिनकी हथेली अत्यधिक लाल होती है. ऐसे लोग स्वभाव से बेहद गर्मजोशी होते हैं. ऐसे व्यक्ति एकदम शीशे की भांति होते हैं, साफ और सच्चे. ये बेहद आत्मविश्वासी होते हैं. अगर इन्हें किसी काम में सफलता नहीं मिलती है, तो बेहद कड़ी मेहनत करते हैं. ऐसे व्यक्ति बेहद सामाजिक होते हैं.ये सभी से प्यार करने वाले होते हैं.

4.पीले हथेली वाले लोग जिनके हथेली का रंग पीला होता है, ऐसे व्यक्ति थोड़े चिड़चिड़े स्वभाव के होते हैं. इनको जिंदगी बोझ की तरह लगती है. इनको किसी भी काम में मन नहीं लगता है.

5.नीली हथेली वाले लोग नीली रंग की हथेली वाले लोग बेहद उदास स्वभाव के होते हैं. आत्मकेंद्रित होते हैं. इनको जिंदगी कभी आसान नहीं लगती है. जिंदगी को बेहद सीरियस लेकर चलते हैं.

6.मटमैले हथेली वाले लोग जिनके हथेली का रंग मटमैला होता है, ऐसे लोग बेहद मेहनती होते हैं. अपना काम बेहद सजग तरीके से करते हैं. अपने काम को बड़े ही आसानी से करने वाले होते हैं.

इलाइची के इन उपायों से सभी अड़चने हो जाएंगी दूर

हमारे रसोईघर में कई सारी खाने की सामग्री रखी होती हैं, जो खाने को बेहद स्वादिष्ट बना देती है. लेकिन क्या आप जानते हैं, जीवन को खुशहाल बनाने के लिए भी आप अपने रसोईघर की सामग्री का इस्तेमाल कर सकते हैं. अगर आपकी कुंडली में ग्रह-नक्षत्र ठीक नहीं है, जिससे आपको अपने जीवन में कई सारी परेशानियों का, अड़चनों का सामना करना पड़ता है, तो आइए आज हम आपको अपने इस लेख में इलाइची के कुछ उपायों के बारे में बताएंगे, जिन उपायों को करने से आपके जीवन में आ रही सभी अड़चनें दूर हो जाएंगे और आपके सारे काम बनने लग जाएंगे.

इलाइची के इन उपायों से सभी अड़चने हो जाएंगी दूर

1.अगर आपके काम में अड़चने आ रही है, तो एक लोटा जल लें, उसमें दो इलाइची डालकर उस पानी को उबाल लें. जब पानी उबलकर आधा हो जाए, तो इसे बाल्टी में डालकर उस पानी से स्नान करें, स्नान करते समय ओम जयंती मंगला काली भद्रकाली मंत्र का जाप करें. इससे अगर आपकी कुंडली में शुक्र की स्थिति कमजोर होगी, तो वह दूर हो जाएगी और आपको हर क्षेत्र में सफलता मिलेगी.

2.अगर आप आर्थिक संकट से परेशान है, इसके अलावा अगर आपके हाथ में पैसे नहीं टिकते हैं, तो अपने पर्स में 5 हरी इलाइची रखें. इससे आपके आय में बढ़ोतरी होगी और आपके खर्चों में कमी होगी. अगर आप किसी गरीब को एक सिक्का दान करते हैं, साथ में इलाइची खिलाते हैं, तो इससे दरिद्रता दूर हो जाएगी.

3.गुरुवार के दिन पांच छोटी इलाइची को अगर आप पीले कपड़े में बांधकर किसी गरीब को दान करते हैं. इस उपाय को 5 गुरुवार तक आपको करना है, इससे आपको मनचाहा जीवनसाथी मिलेगा.

4.अगर आप नौकरी या व्यपार में सफलता पाना चाहते हैं, तो एक हरे कपड़े में इलायची को बांधकर रात में तकिए के नीचे रखें और सो जाएं और सुबह उठकर किसी बाहरी व्यक्ति को खिला दें, इससे आपको जल्द सफलता मिलेगी.

5.पीपल के पेड़ के नीचे पांच छोटी इलाइची रख देंऔर घर आते समय पीछे मुड़कर न रखें. इससे आपको शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी.

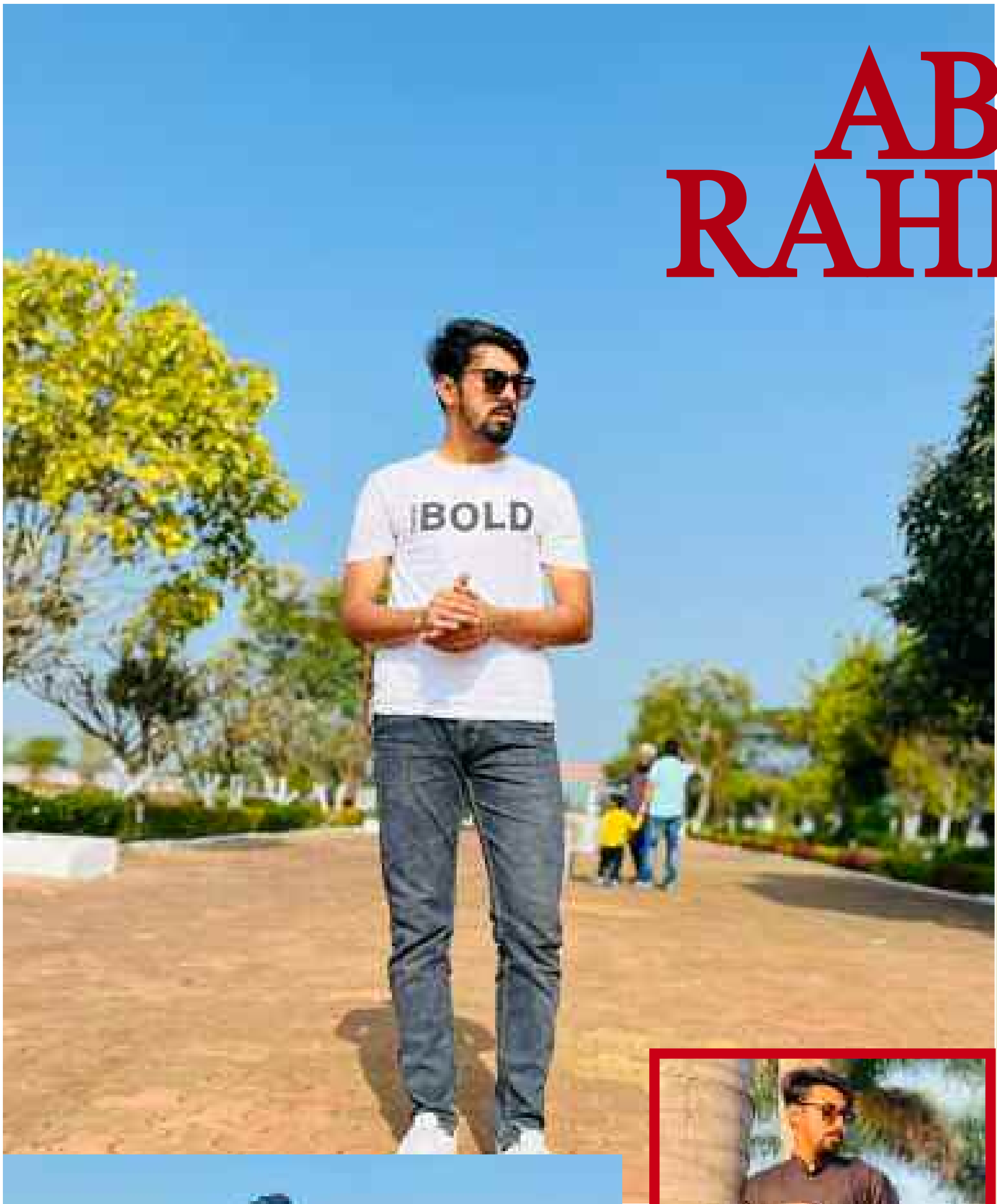

ABDUL RAHMAN

Father name
gohar nazeer

Mother name
urfi gohar

I was born and brought up in bhopal. Studying in b.com 3rd year At ipc khanugaon, I am in late eighties My father is a government employee he is CTI ?n railway and I learnt hockey from my father and he is my inspiration My father is the first hero in my life I am national hockey player and my father is an international hockey player

Model Of The Month

इस कड़ी में हर माह एक Male और एक Female मॉडल का फोटो और बायोडाटा प्रकाशित किया जाएगा । यदि आप अपनी फोटो और बायोडाटा अमृत भूमि के मॉडल ऑफ द मंथ में छपवाना चाहते हैं, तो निम्न ईमेल आईडी amritbhumibhoal@gmail.com पर अपना फोटो और बायोडाटा भेजें। चयनित फोटो बायोडाटा के साथ प्रकाशित किया जाएगा।

आचार्य मीता
एस्ट्रो, टेरो रीडर
मो. 9424577166

भविष्यफल

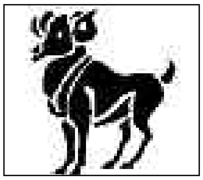

मेष- नए साल का पहला महीना मेष राशिवालों के लिए बहुत फलदायक रहने वाला है. इस महीने आप कुछ नई चीजों के बारे में विचार कर रहे हो तो यह आपके लिए बहुत अच्छा रहने वाला है. करियर के क्षेत्र में इस राशि के जातकों को ज्यादा मेहनत करनी होगी. काम के अधिक दबाव व तनाव की वजय से स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है. यदि आप पार्टनरशिप में कोई व्यवसाय शुरु करने की सोच रहे हैं तो आपका यह कामना पूरी हो सकती है. वहीं जो लोग पहले से अपना व्यवसाय कर रहे हैं, उनके कारोबार से जुड़ी समस्याएं दूर होंगी.

वृष- वृष राशि के जातकों को साल के पहले महीनें सावधान रहना है. इस माह परिवारिक विवाद आपकी परेशानी का कारण बन सकते हैं. माता-पिता से अपेक्षित सहयोग न मिल पाने के कारण मन दुःखी रहेगा. इस माह आपकी आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर होगी. इस महीने धन का प्रवाह अच्छा रहेगा. आप किसी नई संपत्ति में भी निवेश कर सकते हैं.

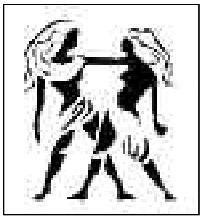

मिथुन- मिथुन राशिवालों के लिए साल का पहला महीना अच्छा रहने वाला है. इस माह आपको कुछ नया करने के लिए प्रेरित करेगा. इस महीने आपको आय के नए स्त्रोत मिल सकते हैं, जिससे आप अपने व्यवसाय में निवेश कर सकते हैं. इस महीने नौकरीपेशा जातकों के संबंध वरिष्ठों के साथ खराब हो सकते हैं.

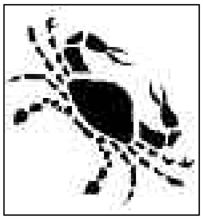

कर्क- कर्क राशि के जातकों को साल के पहले महीन में सोचे हुए कार्य को पूरा करने के लिए अधिक परीश्रम और प्रयास करना होगा. इस माह आपको न सिर्फ अपने कार्यक्षेत्र में बल्कि घर परिवार के सदस्यों के साथ तालमेल बिठाकर चलना बेहतर रहेगा. प्रेम संबंध की बात करें तो इस महीने आपके जीवन में किसी नए व्यक्ति का प्रवेश होगा. स्वास्थ्य के लिहाज से यह महीना आपके लिए अच्छा साबित होगा.

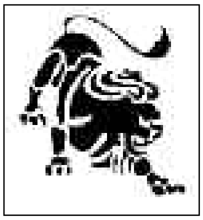

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिए जनवरी का महीना अच्छा रहने वाला है. अपने कर्मचारी पर जरुरत से ज्यादा दबाव डालने पर वह आपसे निराश हो सकता है. व्यवसाय में किसी पर आंख मूंदकर भरोसा करने से बचें. सेहत की दृष्टि से ये माह आपके लिए चिंताजनक हो सकता है. स्वंय के साथ माता-पिता को लेकर भी आपका मन चिंताजनक हो सकता है. इसलिए थोड़ा सतर्क रहें. परिवार और बच्चों के लिए थोड़ा समय अवश्य निकालें.

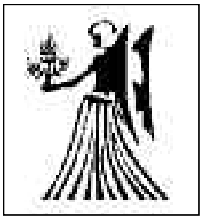

कन्या- यह महीना आपके लिए मिलजुला रहने वाला है . कारोबारियों के लिए यह महीना अच्छा साबित होगा. इस दौरान नौकरी में सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा. इस महीने आपको काम के सिलसिले में यात्रा करनी पड़ सकती है. वाहन चलाते समय सावधानी बरतें. माह की शुरुआत में प्रेम संबंध में कुछेक अड़चनें आ सकती हैं.

तुला- तुला राशि के जातकों को साल के पहले महीने खुशखबरी मिल सकती है. इस दौरान आपको लोगों के साथ मिलकर काम करना बेहतर होगा. यदि आप लोगों के साथ संयम और विनम्रता से पेश आते हैं तो आपको जीवन से जुड़ी सभी मुश्किलों का आसानी हल निकलता हुआ दिखाई देगा. यदि आप नौकरी में बदलाव की सोच रहे हैं तो आपको आवेश में आकर इस संबंध में फैसला लेने से बचना चाहिए .

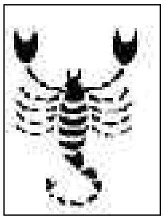

वृश्चिक- साल के पहले महीने में वृश्चिक राशि के जातकों को कोई भी कदम जल्दबाजी में नहीं उठाना है. व्यवसाय के सिलसिले में की गई यात्रा सुखद एवं बड़े लाभ का कारम बनेगी. अनियमित दिनचर्या या फिर किसी पुरानी बीमारी के उभरने पर आपको शारिरिक या मानसिक कष्ट हो सकता है. नौकरीपेशा लोगों पर इस दौरान अचानक से काम का ज्यादा बोझ आ सकता है, जिसे निबटाने के लिए उन्हें अतिरिक्त परिश्रम और प्रयास करना होगा .

धनु- इस राशि के जातकों के लिए यह महीना सुखद रहने वाला है. माह की शुरुआत में इष्ट मित्रों के साथ किसी पर्यटन या धार्मिक क्षेत्र की यात्रा संभव है. आर्थिक दृष्टि से यह महीना आपके लिए लाभदायक रहेगा. यदि किसी बात के चलते स्वजनों के साथ संबंध बिगड़ गए तो वो किसी वरिष्ट व्यक्ति की मध्यस्ता से एक बार फिर से पारिवारिक एकता कायम हो जाएगी. वैवाहिक जीवन सुखमय बना रहेगा.

मकर- स्वास्थ्य के लिहाज से यह महीना आपके लिए सुखमय रहेगा. कार्यक्षेत्र में मिश्रित परिणाम प्राप्त होंगे. इस समय आप ऊर्जावान महसूस करेंगे. अपनी योग्यता और रचनात्मकता से लोगों को मंत्रमुगध करेंगे .समय पर काम पूरे होने पर आपको खुशी मिलेगी . प्रेम संबंध में प्रगाढ़ होंगे और वैवाहिक जीवन शुरु होने की संभावना बन रही है . इस माह अपनी सेहत का ख्याल रखे .

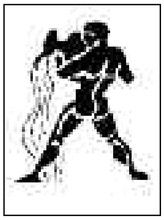

कुंभ- जनवरी माह के दूसरे सप्ताह में शनि कुंभ राशि में प्रवेश कर रहे हैं .इसके साथ ही इस राशि के जातकों की कुंडली में शनि की साढ़े साती की दूसरा चरण आरंभ हो जाएगा. ऐसे में इस राशि के जातकों को अपने करियर में ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है. उच्च अधिकारियों से किसी बात को लेकर बहस हो सकती है. इसलिए थोड़ा सतर्क रहें. इसके साथ ही मानसिक और शारीरिक तनाव भी हो सकता है.

मीन- इस राशि के जातकों के लिए यह महीना शानदार रहने वाला है. आर्थिक क्षेत्र में धैर्य रखें और किसी भी काम के लिए जल्दबाजी ना करें. निजी जीवन सुखद रहेगा, लेकिन इसके साथ -साथ कुछ गलतफहमियां भी पैदा हो सकती हैं. इस महीने अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखें. पूजा -पाठ व सत्संग भी करते रहे. मित्रों की मदद से लंबे समय से अटके काम पूरे होंगे. किसी प्रभावी व्यक्ति की मदद से नई योजनाओं से जुड़ने का अवसर प्राप्त होगा .

मृत्यु के बाद भी गुमनामी बाबा के रूप में जीवित थे सुभाष चंद्र बोस

इतिहास में शायद ही कभी किसी नेता की पहेली उनके निधन के 77 साल से ज्यादा समय तक जीवित रही हो। सुभाष चंद्र बोस की भले ही अगस्त 1945 में एक हवाई दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी, लेकिन जो लोग उन पर विश्वास करते थे, उनके लिए वह गुमनामी बाबा के रूप में जीवित रहे। कई लोगों का मानना है कि गुमनामी बाबा वास्तव में नेताजी (बोस) थे जो नैमिषारण्य, बस्ती, अयोध्या और फैजाबाद में कई स्थानों पर साधु के वेश में रहते थे। वह जगह बदलते रहे, ज्यादातर शहर के भीतर ही।

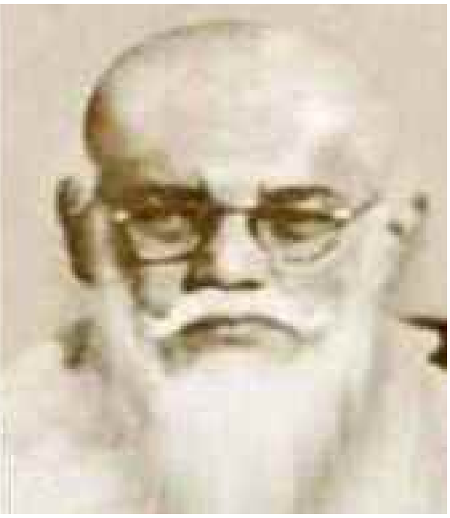

फरवरी 1986 में नेताजी की भतीजी ललिता बोस उनकी मृत्यु के बाद गुमनामी बाबा के कमरे में मिली वस्तुओं की पहचान करने के लिए फैजाबाद आईं। पहली नजर में वह डर गईं और यहां तक कि कुछ वस्तुओं को नेताजी के परिवार के रूप में पहचान लिया।

बाबा से नियमित रूप से मिलने आते थे विश्वासी

जैसा कि कहा जाता है, बाबा एक पूर्ण वैरागी बने रहे और उन्होंने केवल कुछ विश्वासियों के साथ बातचीत की, जो उनसे नियमित रूप से मिलने आते थे। वह कभी अपने घर से बाहर नहीं निकले और अधिकांश लोगों का दावा है कि उन्होंने उन्हें दूर से ही देखा। उनके एक जमींदार गुरबख्श सिंह सोढ़ी ने उन्हें किसी काम के बहाने फैजाबाद सिविल कोर्ट ले जाने की दो बार कोशिश की, लेकिन असफल रहे। इस जानकारी की पुष्टि उनके बेटे मंजीत सिंह ने गुमनामी बाबा की पहचान के लिए गठित जस्टिस सहाय कमीशन ऑफ इंक्वायरी के समक्ष अपने बयान में की है। बाद में एक पत्रकार वीरेंद्र कुमार मिश्रा ने भी पुलिस में शिकायत दर्ज कराई।

जीवन और मृत्यु, दोनों ही रहस्य में डूबे रहे

गुमनामी बाबा आखिरकार 1983 में फैजाबाद में राम भवन के एक आउट-हाउस में बस गए, जहां पर 16 सितंबर, 1985 को उनकी मृत्यु हो गई और दो दिन बाद 18 सितंबर को उनका अंतिम संस्कार किया गया। आश्चर्यजनक रूप से, इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि वास्तव में किसी व्यक्ति की मृत्यु हुई थी। न तो मृत्यु प्रमाणपत्र है, न ही शव की तस्वीर है और न ही दाह संस्कार के दौरान मौजूद लोगों की। श्मशान प्रमाणपत्र भी नहीं है। वास्तव में, गुमनामी बाबा के निधन की जानकारी लोगों को उनकी कथित मृत्यु के 42 दिन बाद तक नहीं थी। उनका जीवन और मृत्यु, दोनों ही रहस्य में डूबे रहे और कोई नहीं जानता कि क्यों।

लोकल समाचार पत्र ने की थी जांच

एक स्थानीय समाचार पत्र जनमोर्चा ने पहले इस मुद्दे पर एक जांच की थी। उन्हें गुमनामी बाबा के नेताजी होने का कोई प्रमाण नहीं मिला। इसके संपादक, शीतला सिंह ने नवंबर 1985 में कोलकाता में नेताजी के सहयोगी पवित्र मोहन राय से मुलाकात की। रॉय ने कहा, 'हम सौलमारी से लेकर कोहिमा और पंजाब तक नेताजी की तलाश में हर साधु और रहस्यमयी व्यक्ति के पास जाते रहे हैं। इसी तरह, हमने बस्ती, फैजाबाद और अयोध्या में भी बाबाजी के दर्शन किए लेकिन मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि वह नेताजी सुभाष चंद्र बोस नहीं थे।'

गुमनामी बाबा नेताजी के अनुयायी थे

उत्तर प्रदेश सरकार ने आधिकारिक तौर पर इस दावे को खारिज कर दिया है कि गुमनामी बाबा वास्तव में भेष बदलकर बोस थे, फिर भी उनके अनुयायी इस दावे को स्वीकार करने से इनकार करते हैं। गुमनामी विश्वासियों ने 2010 में अदालत का रुख किया था और उच्च न्यायालय के साथ उनकी याचिका के पक्ष में फैसला सुनाया था, जिसमें यूपी सरकार को गुमनामी बाबा की पहचान स्थापित करने का निर्देश दिया गया था। सरकार ने 28 जून, 2016 को न्यायमूर्ति विष्णु सहाय की अध्यक्षता में एक जांच आयोग का गठन किया। रिपोर्ट में कहा गया है कि गुमनामी बाबा नेताजी के अनुयायी थे, लेकिन नेताजी नहीं थे।

कट्टर विश्वासी थे गोरखपुर के सर्जन

गोरखपुर के एक प्रमुख सर्जन, जो अपना नाम नहीं बताना चाहते, ऐसे ही एक विश्वासी थे। उन्होंने कहा, 'हम भारत सरकार से यह घोषित करने के लिए कहते रहे कि नेताजी युद्ध अपराधी नहीं थे, लेकिन हमारी दलीलें अनसुनी कर दी गईं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि सरकार ने उन पर विश्वास नहीं किया, हमने किया और ऐसा करना जारी रखा।' डॉक्टर उन लोगों में से थे जो नियमित रूप से गुमनामी बाबा के पास जाते थे और उनके कट्टर विश्वासी बने हुए हैं।

25 संदूकों में 2,000 से ज्यादा वस्तु

फरवरी 1986 में नेताजी की भतीजी ललिता बोस उनकी मृत्यु के बाद गुमनामी बाबा के कमरे में मिली वस्तुओं की पहचान करने के लिए फैजाबाद आईं। पहली नजर में वह डर गईं और यहां तक कि कुछ वस्तुओं को नेताजी के परिवार के रूप में पहचान लिया। बाबा का कमरा स्टील के 25 संदूकों में 2,000 से ज्यादा वस्तुओं से भरा हुआ था। उनके जीवनकाल में उन्हें कभी किसी ने नहीं देखा था।

नोरा ने पिंक सूट में कराया फोटोशूट

आए दिन सेलेब्स अपने सोशल मीडिया हैंडल पर फोटोज शेयर करते हैं। जिन पर उनकी ऑडियंस खूब प्यार लुटाती है। हाल ही में इमरान हाशमी और अक्षय कुमार ने ऐश्वर्या राय के बंटी और बबली फिल्म के पोस्टर के साथ सेल्फी खिंचवाई। जो सोशल मीडिया पर खूब चर्चा में है। वहीं एक्ट्रेस और डांसर नोरा फतेही ने ट्रेडिशनल अवतार में अपना फोटो शूट कराया है। इसके अलावा हाल ही बॉलीवुड डेब्यू की खबरों के बीच रवीना टंडन की बेटी राशा टंडन ने दिलकश अदाओं के साथ अपनी लेटेस्ट फोटोज शेयर की हैं। इसके अलावा वाणी कपूर, विजय वर्मा, संजना सांघी, अनुष्का शर्मा, सोनम कपूर, विजय वर्मा, मृणाल ठाकुर, खुशी कपूर आदि ने फैंस के लिए खास फोटोज शेयर की हैं।

साउथ इंडियन अवतार में दिखीं जान्हवी कपूर

जान्हवी कपूर ने इंस्टाग्राम हैंडल पर अपनी लेटेस्ट फोटोज शेयर की हैं। गोल्डन बॉर्डर की सफेद साउथ इंडियन साड़ी में जान्हवी बेहद ग्लैमरस अवतार में नजर आ रही हैं। फोटोज में जान्हवी खूबसूरत व्हाइट साड़ी पहनकर पानी में पोज देते हुए दिखाई दे रही हैं। जान्हवी का यह लेटेस्ट लुक उनके रूमर्ड बॉयफ्रेंड शिखर पहाड़िया को भी बेहद पसंद आ रहा है। एक्ट्रेस की इस पोस्ट पर उन्होंने हार्ट वाला इमोजी कमेंट किया है। इन लेटेस्ट फोटोज में जान्हवी किसी अप्सरा से कम नहीं लग रही। फोटोशूट के लिए उन्होंने ने सफेद और गोल्ड कलर की ट्रेडिशनल साउथ इंडियन साड़ी कैरी की है। जिसके साथ उन्होंने मैचिंग ब्लाउज पहना है। इसके अलावा लुक को कंप्लीट करने के लिए जान्हवी ने गोल्ड ज्वेलरी स्टाइल की है। जान्हवी के इस पोस्ट पर सेलेब्स और फैंस जमकर रिएक्ट कर रहे हैं। जान्हवी की बहन शनाया कपूर ने कमेंट सेक्शन में लिखा- वाओ, अरहान अवत्रमणि ने लिखा- 'वाह वाह जान्हवी जी।' एक फैन ने लिखा- मैम आप तो जल परी लग रही हैं।'

श्वेता तिवारी ने दिखाए बेहतरीन डांस मूव्स

टीवी की सबसे बिंदास और पॉपुलर एक्ट्रेस श्वेता तिवारी ने सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव हैं। इस बीच एक्ट्रेस ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक डांस वीडियो शेयर किया है, जिसमें वो अपने दोस्तों के साथ पठान का गाना झूमे जो पठान पर जमकर डांस किया। इस वीडियो में श्वेता शाहरुख के डांस मूव्स को शामे तो शामे कॉपी किया हैं। दरअसल, इस वीडियो को उनके दोस्त विकास ने शेयर किया है उन्होंने श्वेता को टैग करते हुए कैप्शन में लिखा, payalsoniiiiii टेक चैलेंज था और मुझे लगता है कि हमने इसे स्वीकार कर लिया, क्या कहना है । सोशल मीडिया पर श्वेता के इस डांस वीडियो को फैंस खूब पसंद कर रहे हैं। एक यूजर ने कमेंट करते हुए लिखा, कितनी खूबसूरत हैं आप। तो वहीं दूसरे ने लिखा, आप तो 22 साल की लग रही हैं।

श्वेता तिवारी का करियर

श्वेता तिवारी के काम की बात करें तो तो उन्होंने ने टीवी सीरियल कसौटी जिंदगी की से अपने करियर की शुरुआत की थी। इसके बाद उन्होंने कई टीवी शोज में काम किया है। वह बिग बॉस विनर भी रही हैं। श्वेता तिवारी इन दिनों टीवी सीरियल अपराजिता में नजर आ रही हैं।

आर्गेनिक प्रोडक्ट :-

गेहुँ आटा, मल्टीग्रेन आटा, बाफला/बाटी आटा, बाजरा आटा ज्वार आटा, गेहुँ दलिया, तुअर दाल, मूंग दाल, बेसन, मक्का आटा आदि.....

Be Attention

- Ancestral taste
  पुराना स्वाद
  (दादा दादी के जमाने का)
  जब शुध्द खाया नही तो
  शुध्द जानोगे कैसे?
- Smart Women
- Smart Generation
- Buy Smart

Pride of Sehore (m.p.)

अपने शहर के Best Quality Product सम्पूर्ण भारत में Amazon.in के द्वारा घर घर पहुंचाए जा रहे है | मध्यप्रदेश के साथ खास कर महाराष्ट्र गुजरात, तमिलनाडु, तेलागना, सिक्कीम, छतीसगढ, केरल, उ.प्र., दिल्ली जैसे राज्यो मे विक्रय किये जा रहे है.....

"Blue Sky Home Stay"

Offers, a state of the art fully furnished 3 Bedroom apartment,

for an enjoyable and comfortable stay for the guests.

This apartment can be booked for long as well as short stays.

Do connect with us if you or your guest are planning for a stay in Bhopal.

You can book the apartment via airbnb.com or booking.com
For direct booking: Call / Whatsapp 9827318384